राजराजेश्वरी विक्टोरिया।

महारानीका जीवन-चरित।

कलकत्ता

३४।१ नं० कलूटोला ष्ट्रीट, वङ्गवासी ष्टीम-मेशिन-प्रेसमें

श्रीअरुणोदय रायद्वारा

मुद्रित और प्रकाशित।

संवत् १९५५।

57
1898

दाम ॥)।

राजराजेश्वरी विक्टोरिया।

महारानीका जीवन-चरित।

कलकत्ता

३४।१ नं० कलूटोला ष्ट्रीट, वङ्गवासी ष्टीम-मेशिन-प्रेसमें

श्रीअरुणोदय राय द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित।

संवत् १९५५।
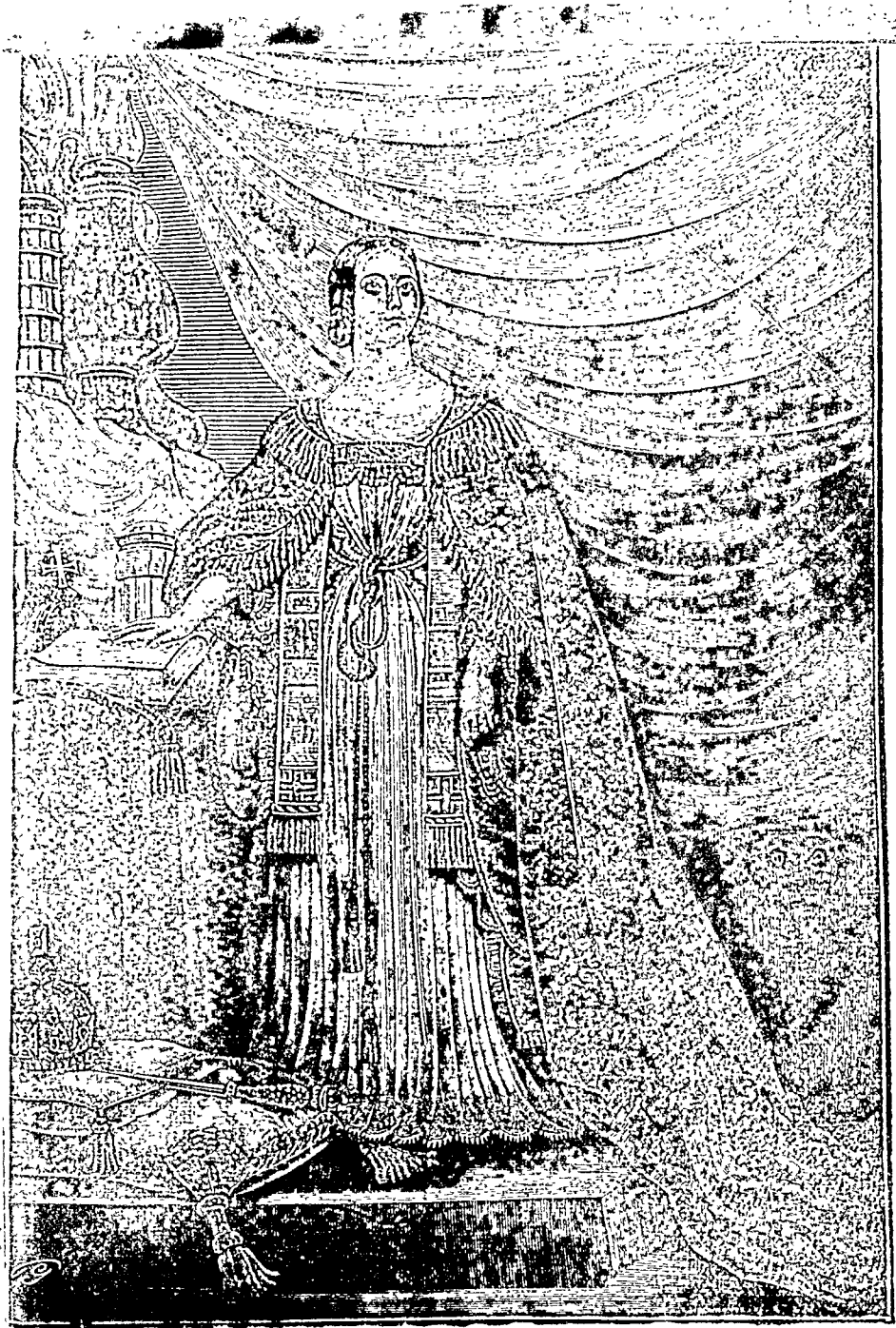
राजराजेश्वरी विक्टोरिया।

पहला अध्याय।

एकबार इंगलण्डका ध्यान धरो,—एकबार अङ्गरेजका ध्यान धरो,—फिर ध्यान धरो, उस लण्डन-नगरका ;—भूलोकमें द्वितीय अमरावती—लण्डननगरीका।

इस लण्डननगरसे थोड़ी दूरपर केनसिङ्टन नामक गांव है। इस गांवमें एक बादशाही महल है; इस महलके पाईंबागमें छायामय फल फूलसे शोभित और ग्रीष्म और वसन्तमें नानाजातीय मधुरकण्ठ पक्षियोंके द्वारा निनादित है।

इसी केनसिङ्टन-राजभवनमें इंगलण्डनरेशके हुक्मसे राजघरानेके एक दुःखी दम्पति रहते थे। दम्पतिके पास धन नहीं था। पति-पर ऋणजाल था। राजघरानेसे जो तनखाह मिलती थी, उसमें बड़े आदमियोंकी भांति गुजर नहीं होती थी। पतिने तनखाह बढ़ानेके लिये राजासे अरज भी की, पर नामञ्जूर हुई। धनकष्टहीमें जीवन कटने लगा।

पत्नी रूपवती, गुणवती,—लक्ष्मीरूपिणी थी। उनके गृहिणी-पनके गुणसे जीवन दुःखमय था, तो भी सुखसे चलता था। पत्नी

तनखाहके रुपयेमेंसे कुछ कुछ उधार भी चुकाती जाती थीं। बाकी रुपयेको खूब समेटकर बहुत तङ्गीसे खर्चपात चलाती थीं। इस दम्पतिके रहनेजातिकी धूम न थी, नौकर चाकर बहुत न थे, खाद्य सामग्रीका भी आड़म्बर न था। राजपुत्र और राजपुत्रवधू होकर भी यह दम्पति, सामान्य गृहस्थकी न्याईं समय बिताते थे।

स्वामी थे उस समयके इंग्लण्डनरेशके तृतीय जौर्जके चतुर्थ पुत्र। स्वामीका नाम था एडवार्ड—डूक औव केण्ट। स्त्रीका नाम था मेरी लुइसा। वह जर्म्मनीके अन्तर्गत सेक्सिकोवर्ग-साल-फील्डके ड्युककी पुत्री थी। यह प्रिन्स लियोपोल्डकी बहिन थी। इनका आगे एकबार विवाह हो गया था। पहले स्वामीका नाम था, एमिक चार्लस। इस विवाहसे उनके एक पुत्र, एक कन्या हुई थी। कालकी चालसे पहले पतिके वियोगमें इन्होंने विधवा होकर कुछ काल विताया। पीछे सन् १८१८ ई० में उक्त इंग्लण्डेश्वरके चतुर्थ पुत्र एडवार्ड डूक अव केण्टके सहित उनका शुभ विवाह हुआ।

विवाहके पीछे राजकुमार और राजवधू दोनो जर्म्मन देशमें रहने लगे। स्त्री जर्म्मनरमणी और पति अङ्गरेजपुत्र था। सो जर्म्मन देशमें रहनेका क्या अभिप्राय था? जर्म्मन राज्यमें रहनेसे कम खर्चमें गृहस्थी चलती थी। दरिद्र राजपुत्रने इसी लिये जर्म्मन राज्यमें रहना स्थिर किया। देखते देखते जर्म्मनकुमारीने गर्भ धारण किया। बहुत विज्ञ पुरुष सोचने लगे, कि कौन जाने यही गर्भस्थ सन्तान इंग्लैंडकी रानी वा राजा हो सकती है। तब राजकुमार डूक अव केण्टको मित्र लोग समझाने लगे, जर्म्मन राज्यमें रहना

आपको उचित नहीं है, आपको गर्भस्थ सन्तानका इंग्लण्ड हीमें जन्म कराना उचित है। इंग्लण्डमें जन्म न होनेसे आपकी सन्तान वहांकी राजगद्दीपर न बैठ सकेगी। आपकी सन्तान इंग्लण्डकी रानी वा राजा होगी, इस बातकी यद्यपि पूरी दुराशा है, तोभी आगा पीछा सोचके काम करना चाहिये। सो आप स्त्री-समेत इंग्लण्ड चले जाइये।"

भविष्यत्‌की आशासे कमर कसके दम्पति इंग्लण्डमें आये और केनसिङ्टन राजभवनमें रहनेका हुक्म पाया।

दूसरा अध्याय।

सन् १८१९ ई०की २४ वीं मईको रात रहते रहते बहुत सवेरे जर्म्मन राजपुत्रीके एक कन्या हुई। कन्याके रूपसे केनसिङ्टन राज भवन रोशन हुआ। चारो ओर जय जयकार होने लगी। राजाकी आज्ञासे राजमन्त्री लोग उन भुवनमोहिनी कन्याकी मूर्त्ति देखने आये। ठीक एक महीने पीछे २४ वीं जूनको कन्या क्रस्तान धर्म्ममें दीक्षित हुई। इस दीक्षाकालमें कन्याके चचा ताऊ मामा मामी तथा और भी इज्जतदार लोग मौजूद थे। कन्याके पिताकी इच्छा थी, कि कन्याका नाम एलिज़ेबेथ रखा जावे। पर कन्याके ताऊने नाम रखा—एलेक्जेण्ड्रिना। कन्याके पिताने कहा, "तो उसके साथ और भी एक नाम जोड़ देना चाहिये।" ताऊने कहा, "तो एलेक्-

जेण्ड्रिनाके पीछे 'विक्टोरिया' यह नाम योग्य है।" राजकन्याका नाम पड़ा ;—

'एलेक्जेण्ड्रिना विक्टोरिया।'

जन्मसमय साधारण लोगोंने न सोचा,—अनेक पण्डितोंने भी न सोचा, कि यह कन्या कभी इंग्लण्डेश्वरी होगी। कन्या भाग्यवती हुई। धीरे धीरे ऐसी ही अभावनीय घटनाएं घटने लगीं, कि वह क्रमशः सिंहासनकी निकटवर्तिनी होने लगीं। सब विधिकी माया है।

१८१६ ई० में संसारकी एक मात्र अवलम्बन कन्याको लेकर स्वास्थ्य बढ़ानेके लिये समुद्रके पास सिडमौथ गांवमें जाकर दम्पतिवास करने लगे। एक बालक बन्दूक लिये हुए राजभवनके पास गौरय्या पक्षीकी शिकार करता था। बन्दूककी गोली पक्षीके न लगी,—जिस घरमें राजकन्या थी, उस घरकी चौखट तोड़के गोली राजकन्याकी ओर दौड़ी। वह उस समय दाईकी गोदमें थीं। भयभीत होकर दाई चिल्ला उठी। गोली राजपुत्रीके मस्तकसे एक इञ्च दूर जाके गिर पड़ी। विक्टोरियाने रक्षा पाई।

इधर दासदासी उस बालकको पकड़ लाये। कन्याके पिताने धमकाके लड़केसे कहा, "तुम इस भांति असावधान भावसे फिर कभी गोली न छोड़ना।" यह कहके ही उसे विदा किया।

इसी सिडमौथ गांवमें डूक अव केण्ट अर्थात् कन्याके पिताकी मृत्यु हुई। कन्याके पिता एक दिन बरफके ऊपर टहलने गये थे। बरफकी नमीसे उनका जूता भीग गया और उनको कुछ ठण्ढ लगी।

आगे ज्वर आया, छातीमें सर्दी बैठ गई,—रोग असाध्य हो गया। छः दिनके बीच ड्यूक अव केंएटके प्राण निकल गये। स्त्री विधवा हुई, कन्याको गोदमें लेकर केवल आंखोंसे आंसू बरसाने लगी। स्वामीको खोकर रोती रोती केनसिङ्टन महलमें उदास लौट आईं।

तीसरा अध्याय।

माताकी कन्या ही तब सर्वस्व हुई। कन्या ही ज्ञान, कन्या ही ध्यान, कन्या ही जीवनस्वरूप हुई। कन्याको क्या सिखाऊं, कैसे उसका चरित्र बनाऊं—वह यही सोचने लगीं। जर्म्मनीसे मामा लियोपोल्डने आकर कन्याके भरण पोषण और शिक्षाका बन्दोबस्त कर दिया।

बहुत छोटी उमरमें विक्टोरिया बात कहने लगी थी। अपनी दाई श्रीमती ब्रुकको ग्यारह महीनेकी उमर होमें वह "बपि" कहके बुलाती थीं। जब उनकी उमर पन्द्रह महीनेकी हुई, तब अगर कोई उन्हें नमस्कार करता था, तो वह अपने नये उपजे हुए दूधके कच्चे कच्चे चार दांत निकालकर मन्द मन्द मुसकाती और तोतली बोलीमें "गुडमौनिंग"—"गुडमौनिंग" करती थीं। और कनखियोंसे तिरछा देखकर अपना दाहिना हाथ चुम्बनके लिये पसार देती थीं।

कुत्तेका पहरा और लड़कीका पाठ।

विक्टोरियाकी उमर बढ़ने लगी। शिक्षा भी बढ़ने लगी।

सवेरे आठ बजे पहला आहार होता था। आहारकी सामग्री सादीसीधी सामान्य होती थी। माके पास बैठकर विक्टोरिया सवेरे दूध रोटी और फल खाती थीं। इस आहारके पीछे विक्टोरिया एक घण्टेतक पैदल टहलती थी; किसी दिन गाड़ीपर बैठके सैरको जाती थीं। दस बजेसे बारह बजेतक माता विक्टोरियाको पढ़ाती थीं। पाठ समाप्त होनेपर विक्टोरिया इस घरसे उस घरतक दौड़ती थीं और उनके जितने खिलौने घरमें सजे हुए रहते थे, वे सब खिलौने लेकर घरमें खूब खेलती कूदती थीं। दिनके दो बजनेपर विक्टोरिया और भी कुछ खाती थीं। इस आहारके पीछे फिर पढ़ना आरम्भ होता था—चार बजेतक। इसके पीछे बागमें टहलना होता था। किसी दिन तीसरे पहर बागमें पेड़के नीचे कुरसीपर बैठकर खेलती थीं। सन्ध्या होने हीसे फिर थोड़ासा खाती थीं। उसके पीछे दाईके साथ खेलती थीं। रातके नौ बजे सोती थीं।

विक्टोरियाकी उमर जब चार वर्षकी थीं, तब इंग्लण्डनरेश चतुर्थ जौर्जने सर्वाङ्गमें हीरेकी जड़ाऊ विक्टोरियाकी एक ज्योंकी त्यों मूर्त्ति विक्टोरियाको इनाम दी। बालिका सजीव विक्टोरियाने और एक हीराजड़ी निर्जीव विक्टोरिया पाई। विक्टोरिया अपनी निर्जीव प्रतिमूर्त्तिका कितना ही आदर करती थी, कितने ही बार गोदमें लेती थी, कितनी ही बार कन्धेपर चढ़ाती थी। कभी कभी दोनोंमें लड़ाई होती थी। लड़ाईके पीछे विक्टोरिया उसे प्यार करती और उसका मुह चूमती थी।

विक्टोरिया जब पांच वर्षकी थीं, तब उनकी सुशिक्षाके लिये ब्रटिश पार्लिमेण्टसे छः हजार पाउण्ड अर्थात् प्राय एक लाख रुपया मञ्जूर हुआ। मशहूर पादड़ी डाक्तर जौर्ज डेविस विक्टोरियाके शिक्षक नियत हुए। बेरोनेस लेजेन उस्तानी हुईं। माताके विशेष आदेशानुसार खृष्टधर्म्मके सार ग्रन्थ बाइबलका कुछ कुछ अंश विक्टोरियाको हर रोज पढ़ाया जाता था। शिक्षक, और शिक्षयित्रीके छः वर्ष यत्न हौर परिश्रमसे विक्टोरिया फ्रेंच और जर्म्मन भाषामें खूब बात चीत करना सीख गईं। इटलीकी बोली भी समझने लगी। लाटिन और ग्रीक भाषा भी विक्टोरिया कुछ कुछ सीखी। वर्जिल और इलियड काव्य भी वह पढ़ डालती थीं। गणितमें भी वह विशेष समझने लगीं। विक्टोरियाकी बुद्धि बहुत तेज थी। राजकुमारीने नाच सीखा, गान सीखा, बजाना सीखा। इस प्रकार उनकी उमर ग्यारह वर्ष पूरी हुई।

फूलोंकी डाली लिये हुए बालिका विक्टोरिया।

चौथा अध्याय।

विक्टोरिया लड़कपन हीसे फूल चाहती थीं;—और चाहती थीं—कुत्ता। बागके फूलवृक्षके नीचे फावड़ी वा छोटीसी कुदाली लेकर स्वयं खोदती थीं। कलसा भरके, दौड़े दौड़े जल लाकर स्वयं पौधोंको सींचती थीं। कभी कभी कैंची लेकर पौधोंको समान कतरती थीं। कभी कभी पेड़पर चढ़कर झूलती थीं; फूल लेकर खेलती थीं, पत्ते नोचती थीं, डाली तोड़ती थीं।

कुत्ता महारानीका बड़ा प्यारा था। वह अपने कुत्तेका गला पकड़ लेती थीं; कुत्तेके शरीरको टेस देकर बैठती थीं, कभी कभी उसे प्यार करती थीं;—आहारके समय कुत्तेको बिना दिये खाती न थीं। बात न माननेपर कुत्तेको मारती थीं। कभी कभी छोटे कुत्तेको लड़का कहके गोदमें लेती थीं।

विक्टोरिया लड़कपनमें धनुर्वाण चलानेमें बड़ी निपुण हुई। जब कमानपर पनच चढ़ाकर कुछ बाईं ओर हिलके राजपुत्री तीर बरसाती थीं, तब मनुष्य कहता था, यह वस्तु मर्त्यलोककी नहीं—विक्टोरिया स्वर्गकी देवी है।

विक्टोरियाको घोड़ेपर चढ़ना खूब भाता था। माके निषेध करनेपर भी वह सुनती न थीं, कभी कभी रो भी देती थीं। घोड़ेपर चढ़नेका उनको इतना शौक था। जिन घोड़े घोड़ियोंपर वह चढ़ती थीं, उनको वह पुत्र कन्याकी भांति देखती थीं। उसके शरीरपर हाथ डालती थीं; गला झाड़ देती थीं; पूरा रातब खा चुका कि नहीं, इसे देखती थीं; कभी कभी मुहसे मुह लगाती थीं।

बालिका विक्टोरिया मिठबोलनी और सच्ची थीं। एक बार सवेरे राजकुमारी विक्टोरियाने लड़कपनके स्वभावसे पढ़नेमें मन न लगाकर शिक्षयित्री लेजेनकी न बात सुनी। कहा, "मैं न पढ़ूंगी।" विक्टोरिया पढ़ती नहीं और उस्तानीसे झगड़ती है;—यह बात माके कानमें पड़ी। उन्होंने कमरेके भीतरसे आकर पूछा, "क्या हुआ?" शिक्षयित्रीने कहा, "ऐसा तो कुछ हुआ नहीं,—राजकुमारीने एक बार मेरी बात नहीं सुनी।" राजपुत्रीने तुरन्त लेजेनका हाथ पकड़कर

कहा, "नहीं लेजन, तुम्हें क्या याद नहीं है, कि मैंने दोबार तुम्हारी बात नहीं सुनी?"

लड़कपनमें विक्टोरिया अपनी माके पाससे इच्छानुसार खर्च करनेके लिये जेबखर्च पाती थीं। उस्तानीको सङ्ग लेकर एक दिन विक्टोरिया बाजारमें गईं। विक्टोरियाने अपने निजके कुटुम्बी सुहृद मित्रोंके लिये एक एक वस्तु खरीदी। खरीदते खरीदते लड़कीका रुपया चुक गया। पर एक चीज बिना खरीदे भी नहीं चलता, और इधर रुपया भी नहीं रहा। विक्टोरियाने उस चीजपर हाथ रखा, हिलाया डुलाया, रख दिया, ले न सकी। दुकानदारने मनका भाव समझ लिया, और विक्टोरियासे कहा, "आप यह चीज ले जावें, मैं आपको उधार देता हूं। पीछे जब सुभीता हो, उधार चुका दीजिये।" विक्टोरियाने जवाब दिया, "नहीं, मैं उधार नहीं ले सकती। लेकिन तुम यदि वह वस्तु एक महीनेतक उठाकर रख दो, तो एक महीने पीछे आकर दाम दूंगी और उसे ले जाऊंगी।" दुकानदार राजकुमारीकी रसभरी बातें सुनके मोहित हुआ। चीज उठाकर रख दी। एक महीने पीछे विक्टोरियाने जब निर्दिष्ट जेबखर्च पाया, तब आकर उस चीजको ले गईं। आज कलके भले मानस और भली स्त्रियां उधारमें हाथी भी पावें, तो उसे ले जाकर द्वारपर बांध दें।

एक दिन उस्तानी विक्टोरियाको पियानो बजाना सिखाती थीं; पर उस दिन कुमारीने पियानो सीखनेमें बड़ी ही अनिच्छा दिखाई। कहा, "आज नहीं सकती, कल बजाऊंगी।" उस्तानीने

कहा, "जरा कष्ठ न सहनेसे क्या पियानो बजाना सीखा जाता है ? जरा तकलीफ सहिये। थोड़े ही दिनोंमें पियानोपर तुम्हारा अधिकार हो जावेगा।" राजकुमारी बड़ी जिद्दी थीं। उन्होंने कहा, "नहीं, मैं इतना कष्ट न सह सकूंगी।" उस्तानीने तब कुछ बनावटी गुस्सेसे कहा, "पियानो बाजेमें पूरी होनेके लिये राजाके लिये सुखमार्ग नहीं है। साधारण लोग जैसा कष्ठ करके सीखते हैं, वैसा कष्ट बिना उठाये सीखनेसे पियानोमें कभी दखल नहीं होता है।" राजनन्दिनीने तुरन्त पियानो बन्द करके चाबी दी और चाबी शिक्षयित्रीके संमुख धरके कहा, "यह देखो, कैसे राजोचित उपायसे सहजमें मैंने पियानोमें दखल कर लिया है। अबके तुम एक बार पियानो बजाओ तो सही, देखूं कैसा बजा सकती हो।" शिक्षयित्रीने कहा, "चाबी बन्द है, सो तुम्हारे हाथमें हैं,—मैं कैसे पियानो बजाऊं ?" राजकुमारीने जवाब दिया, "तो समझ देखो, पियानो मेरे दखलमें सहज ही आ गया वा नहीं ?" शिक्षयित्री परास्त हुई; हंसी।

पांचवा अध्याय।

बालेपनमें विक्टोरिया तीन बार प्राण सङ्कटमें पड़ी थीं। पहली विपद्की कहानी पहले ही सुना चुके हैं। एक बालक चिड़िया शिकार करने गया था, गोली विक्टोरियाके माथेकी ओरसे निकल गई, पर लगी नहीं। चौथे वर्षमें दूसरी विपद् हुई। विक्टोरिया घोड़ागाड़ी करके जाती थीं, मार्गमें घोड़ा पागल हुआ। ऊर्द्धश्वाससे घोड़ा दौड़ा। "हाय, हाय" शब्द हुआ, क्योंकि गाड़ीके भीतर विक्टोरिया थीं। अब रक्षा नहीं है, जरूर ही प्राण जावेगा। देखते देखते गाड़ी उलट पड़ी। जो देख न सके, उन्होंने सोचा गाड़ीमें दबकर विक्टोरिया पिस गईं। परन्तु जिन्होंने देखा था, उन्होंने यह देखा, कि ठीक ज्योंही गाड़ी उलटी है, त्योंही एक वीर पुरुषने विक्टोरियाका कपड़ा खींचकर विक्टोरियाको गाड़ीमेंसे निकाल लिया। गाड़ी भूमिमें पड़ी, विक्टोरियाने सैनिक पुरुषको देहमें आकर शरण पाई।

विक्टोरियाकी मा उन दिनों दीन दरिद्र धनकी कमीसे तड़पती थीं। उस वीर सैनिक पुरुषको उन्होंने तुरन्त एक गिनी इनाम दी। पीछे और भी पांच पौण्ड उसे दे दिये।

इसके थोड़े ही दिन पीछे विक्टोरिया माके साथ समुद्रके बीच जहाजी बत्तीघर देखने गई थीं। अचानक तूफान आया और जहाजका मस्तूल टूट गया। विक्टोरिया नावके बाहर ही बैठी थीं। माझीने तुरन्त ही दौड़ जाकर विक्टोरियाको गोदमें उठा लिया। जहां विक्टोरिया बैठी थीं, ठीक वहीं पर मस्तूलका काठ आ पड़ा। माझी अगर विक्टोरियाको उठानेमें और एक मुहूर्तभर विलम्ब करता, तो विक्टोरिया तुरन्त ही मर जाती।

बागमें कुत्तेका साथ खेल।

विक्टोरियाको भविष्यत्‌में और भी ऐसे ही प्राय सङ्कटके विपज्जालमें गिरना पड़ा। पर जो राजराजेश्वरी होकर ससागरा पृथ्वीका पालन करनेवाली थीं, भगवान् उसकी सदा रक्षा ही करता रहा है। कोई विपत्ति भी उनके आगे विपत्ति नहीं है।

लड़कपनमें विक्टोरियाने माके साथ इंग्लण्डके नाना स्थानोंमें सैर की। इस भांति सैरसे विक्टोरियाको बहुत बहुदर्शिता हुई। विक्टोरियाकी उमर जब दस वर्षकी थी, तब पुर्तगालकी १३ वर्षकी रानी इंग्लण्डमें आईं। बड़ी धूमधामसे राजसभा बैठी। इंग्लण्डके जितने बड़े आदमी थे, सब उस सभामें हाजिर हुए। इंग्लण्डके महाराज अर्थात् ताजके बुलानेपर विक्टोरिया वह राजदरबार देखने गईं। अभीतक माने विक्टोरियाको कभी राजसभामें जाने न दिया था। यहांतक कि राजाके महलमें भी कभी जाने न दिया था। राजदरबार—राजाकी सभा बड़ा खराब स्थान है, लोग तब यही समझते थे। राजमहलमें जाकर विक्टोरिया ऐशमें पड़ जावें, बाहरी चमक दमककी शौकीन हों, लोभलालसाके अधीन हों, इसी भयसे माने विक्टोरियाको अबतक दरबारमें नहीं जाने दिया था। पर आज राजाका हुक्म है, आज ताजकी आज्ञा है, सो विक्टोरियाको माके साथ दरबारमें जाना पड़ा। पुर्तगालकी रानी डोना मेरियाके पास आकर विक्टोरिया बैठीं। दोनों हाथ-पकड़व्वल करके एक साथके कानमें हंस हंसकर बातचीत करने लगीं। सब एकटक आंखसे दोनोंको देखने लगे। किसीने कहा, डोना मेरिया सुन्दरी है, किसीने कहा, विक्टोरिया रूपवती है। शेषमें सब लोगोंकी संमतिके अनुसार स्थिर हुआ, कि विक्टोरियाकी बराबर लज्जाशील बालिका इङ्गलण्डमें दूसरी नहीं है। शायद सब युरोपमें भी दूसरी न मिले। पुर्तगालकी रानीके साथ विक्टोरियाका बौल-नाच हुआ। दो पुरुष और दो कन्या,—इन चार जनोंका एकत्र बौल-नाच हुआ।

सब आंखोंने उस समय एकटक होकर इन चार जनोंका नृत्य देखा। विक्टोरिया अच्छा नाचती है, कि डोनामेरिया अच्छा नाचती हैं,—यह बातें लेकर विषम झगड़ा उपस्थित हुआ। किसीने कहा, "वह देखिये, डोना मेरियाका नाच अच्छा है," किसीने कहा, "नहीं, नहीं, यह नहीं—नाचमें विक्टोरिया सबसे अच्छी है। डोना मेरिया रूपवती हो सकती है, उनका जेवर लिबास उत्तम हो सकता है, पर नाचमें वह जरूर विक्टोरियासे नीची है।"

नाच खतम हुआ। विक्टोरियाने पुर्तगालकी रानीसे गलबांहीका व्यवहार किया; मिलके विदा हुईं। दूरदर्शी तमाशाइयोंने परस्पर कानाफूसी छेड़ी, "यह विक्टोरिया शायद एक दिन इंगलण्डकी महारानी होगी।"

छठा अध्याय।

राजकुमारी विक्टोरिया दिन दिन चन्द्रकलाकी न्याईं वृद्धि पाने लगीं। उनके नीलनेत्रोंने नीलकमलकी शोभा धारण की। वह लज्जाभावसे संयुक्त भोला चेहरा जो देखता, सो फिर देखना चाहता। जेवर लिबास भड़कीला न था। बुद्धिमती माने कन्याको विचित्र रङ्गोंके जेवर लिबास पहनाकर, परी बनाकर कभी राजमार्गमें बाहर नहीं किया। पर सादा पोशाकमें ही विक्टोरिया अधिक सुन्दरी दिखाती थी। जननीका मनोरथ विफल होता था। लोग सादी
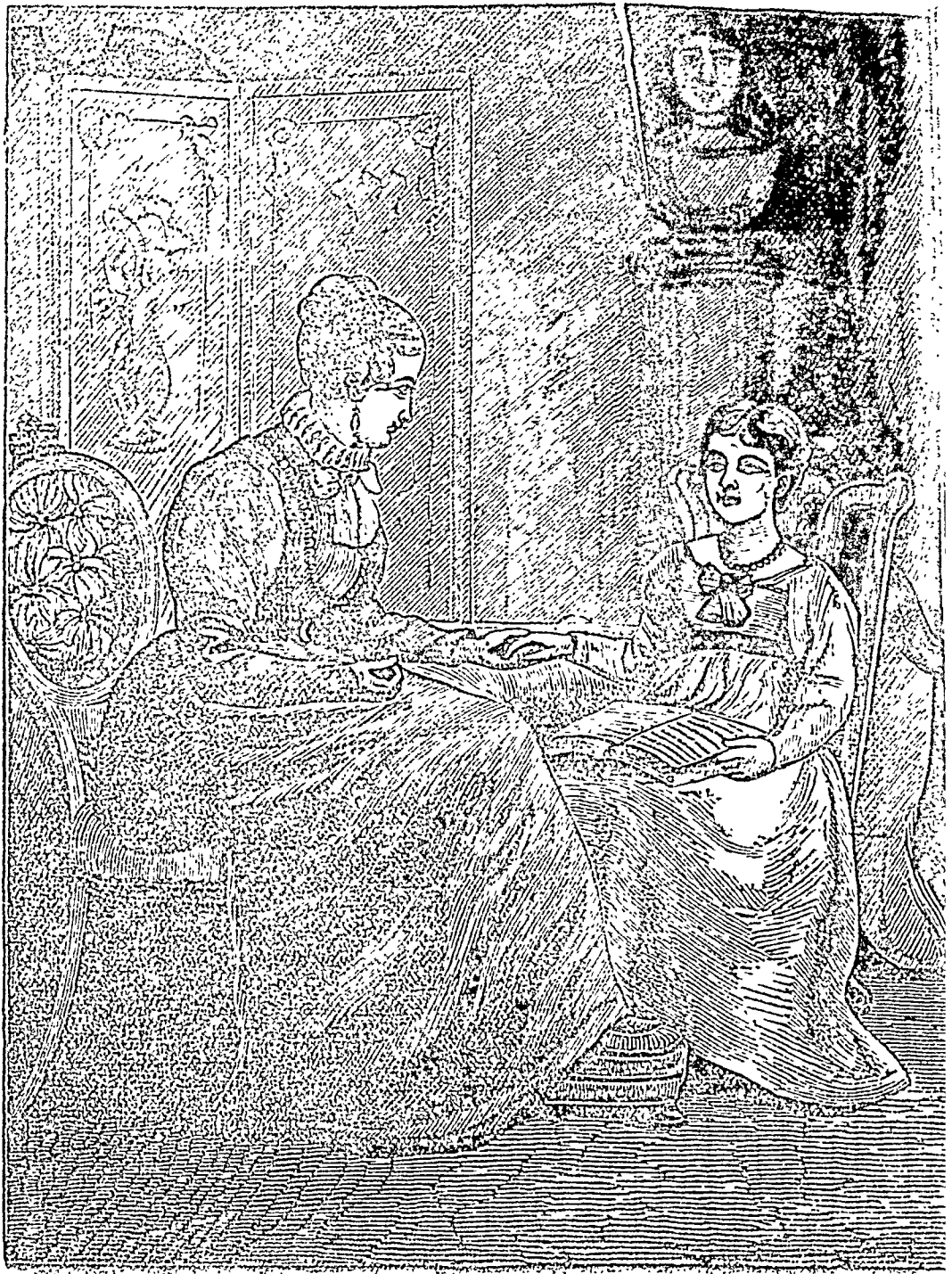
सौंधी चमेलीकी मालाकी भांति उजली फूली फाली विक्टोरियाको देखना और भी अधिक चाहते थे और आपसमें धीरे धीरे कहते थे, "यह नई चमेलीकी माला ही हमारी रानी होगी।"

देखते देखते विक्टोरियाकी उमर पूरे १२ वर्षकी हुई। उस्ताद डेविस और उस्तानी लेजेन बड़ा भारी परिश्रम करके राजकुमारीको सिखाने लगे। वह शिक्षा सर्व्वविषयिणी थी। नाच गान बाजेकी शिक्षा, घोड़ेकी सवारी और तीर-कमानकी शिक्षा, बात करने और चिट्ठी लिखनेकी रीति, धर्म्मग्रन्थ बाइबलकी शिक्षा, अदब कायदेकी शिक्षा, इसके सिवाय इतिहास भूगोल साहित्य, दर्शन, गणित—सब वस्तुओंकी शिक्षा विक्टोरियाको मिलने लगी। निःसन्तान इंगलण्डेश्वर विक्टोरियाको भावी महारानी समझकर उनकी शिक्षाके सम्बन्धमें खबर लेने लगे। हाव भावके विलासमें पड़कर सुशीला राजबाला शिक्षक शिक्षयित्री और माके उपदेशानुसार काल काटने लगी। माका स्वभाव तेजस्वी और मधुर था। वह स्वभावसुन्दरी और सुशीला थीं। संसार-सागरकी लहरोंमें कईवार गोते खाकर वह अभिज्ञ और बहुदर्शिनी हो गई थीं। सो कन्याको किस प्रकार मनुष्य करना होगा, इसे वह जानती थी। कौन मामला, कौन बात, कौन व्यवहार लड़कपनकी बुरी प्रकृतिका बढ़ानेवाला है, सो वह समझती थीं। लड़कपनमें कौन मार्ग कुमार्ग है, कौन मार्ग सुमार्ग है, कौन चाल कण्टकमय और कौन चाल मधुमय है, वह ज्ञान भी माको विलक्षण था। सो उन्होंने अपने नयनोंकी पुतली, आंधरेकी लाठीकी भांति एकलौती कन्याको सदा मानो अपनी बांहोंसे लपेटकर पाला था। माताकी

इस खबरगीरीसे ही विक्टोरियाके भविष्यत् जीवनने निष्कलङ्क चन्द्रकी भांति युरोपीय आकाशमण्डलमें शोभा पाई।

विक्टोरियाकी माता।

बारह वर्षकी उमरमें विक्टोरियाके जीवनमें एक नई घटना घटी। रानी होनेके मार्गमें जितनी अड़चल थी, लगभग सभी दूर हो गई। देखते देखते राजसिंहासन और भी निकटवर्त्ती हुआ। इस कुमारीकी भविष्यत्में इंगलण्डकी रानी होनेकी सम्भावना है, यह बात इतने दिनोंतक बुद्धिमती माने अपनी कन्यासे नहीं कही थी और न

किसीको कहने दी थी। इंगलण्डकी रानी हूंगी,—यह बात सुनकर कहीं विक्टोरियाका माथा न भन्ना जावे, कहीं लड़की घमण्डी न हो जाने, कहीं कन्या सुन्दर शिक्षा और परिश्रमसे जाने हुए कामोंमें मन न लगावे, इसी भयसे माने कन्याको रानी होनेकी बात अबतक साहस करके न कही थी।

एक दिन उस्तानी लेजेनने विक्टोरियाकी मातासे कहा, "देखिये—अब देर करना ठीक नहीं, विक्टोरिया अब लड़का नहीं है। अब जीवनचरित पढ़ती है, इतिहास देखती है, समाचारपत्र देखती है, महासभाकी खबर लेती है। लड़की तो अब निरी बच्ची नहीं रही, विक्टोरिया किसी दिन इंगलण्डकी रानी होगी, यह बात हमें इसी समय कह देना उचित है।"

जननीने स्थिरचित्तसे सोचकर कहा, "तो योंही सही"। लेजेनने कहा, "साफ़ साफ़ तो न कहूंगी, चतुराईसे जताऊंगी।"

जो इतिहासग्रन्थ राजकुमारी पढ़ती थीं, उसी इतिहासग्रन्थके बीच श्रीमती लेजेनने अङ्गरेजोंकी राजवंशावलीका एक कागज लिखकर रख दिया। पढ़नेका बंधा हुआ समय आया; शिक्षक डेविस आने ही वाले हैं। विक्टोरियाने घरके भीतरसे आकर पठनशालामें चरण रखा। श्रीमती लेजेन विक्टोरियाकी बगलमें खड़ी हो गई। पुस्तक खोलकर और उसके बीच एक नवीन कागज देखकर राजकुमारीने कहा,—"यह पत्र यहां किसने रखा? यह तो मैंने पहले कभी नहीं देखा था।"

श्रीमती लेजेनने कहा, "अबतक तो यह कागज देखना आपको

इतना आवश्यक न था। अब समय आया है, दिन निकट आया है, इसी लिये आपको देखनेको मिला।"

राजबाला वह कागज लेकर एकाग्रचित्तसे एकटक देखती हुई पढ़ने लगी। पढ़कर गम्भीर भावसे कहा, "यह क्या! मैं इंगलण्ड राजसिंहासनके अति निकट आ गई हूं—क्या यह ठीक है? क्या यह सच है?"

श्रीमती लेजेनने कहा, "राजकुमारि! यह ठीक है, यही सच बात है।"

राजनन्दिनी फिर बात न कर सकीं। चुपचाप माथा झुकाकर न जाने क्या सोचने लगी। सोचकर कहा, बहुतसे लड़के और लड़कियां राजा वा रानी होंगे, यह सुनकर अहङ्कारसे फूल उठते हैं, पर उसमें अहङ्कार नहीं करना। राजसिंहासनपर बैठकर जिम्मेदारी बड़ी है। सिंहासनकी शोभा और चमक दमक खूब ज्यादा है; पर जिम्मेदारी उससे कहीं भारी है।"

बाष्पगद्गद कण्ठ विक्टोरियाने यह बात कहते कहते उस्तानी लेजनका हाथ पकड़ा। पकड़के गम्भीर स्वरसे कहा, "तो मैं और भी भली होनेकी चेष्टा करूंगी। आज मैंने समझ पाया है, तुम मुझे सुशिक्षा देनेके लिये,—यहांतक कि लातिन भाषा सिखानेके लिये क्यों इतनी जिद करती थीं, क्या इतना धमकाती थी। औगष्टा और मेरी कभी लातिन भाषा नहीं पढ़ी। पर तुम मुझसे कहा की हो, कि लातिन अङ्गरेजी व्याकरणका मूल है, और लातिन भाषा ही सुन्दर पद्योंकी खानि है। तुम्हारे हुक्मसे बड़ा यत्न करके अबतक

मैंने लातिन पढ़ी, पर आज समझा क्यों, तुम मुझे लातिन भाषा सीखनेके लिये इतना उपदेश देती थी?"

विक्टोरियाके पिता।

राजबाला लेजेनका हाथ पकड़े रही, आवेगपूर्ण हृदयसे फिर भी कहा,

"तो मैं और भी भली होनेकी चेष्टा करूंगी।"

श्रीमती लेजेनने कहा,—"अभी इतनी ज्यादा उमेद न करना। इंगलण्डेश्वरकी पत्नी एडिलेडकी उमर अभी ज्यादा नहीं हुई है।

अभी सन्तान हो सकती है। ऐसा होनेसे वर्त्तमान महाराजके मरनेपर वह सन्तान ही राजा वा रानी होगी।"

राजकन्याने जवाब दिया, "यदि यही हो, तो भी मुझे क्या दुःख है? क्योंकि मैं जानती हूं, कि महारानी मेरी ताई है—एडिलेड मुझे बहुत ही चाहती है। मैं जानती हूं, कि वह एक सन्तान गोदमें खिलाकर बड़ी सुखी होंगी!"

इस घटनाके पीछे दूसरे ही दिनसे विक्टोरिया पाठ और अपने कर्त्तव्यमें और भी मन लगाने लगी।

सातवां अध्याय।

राजनन्दिनीकी उमर सतरह वर्ष हुई। प्रचलित रीतिके अनुसार पादड़ीने आकर राजकुमारीको फिर ख्रीस्तानधर्ममें दीक्षित किया। बड़ी धूम धामसे यह काम पूरा हुआ। पादड़ी विक्टोरियाको उपदेश देने लगे—"देखो बच्ची! तुम इंगलण्डकी भावी रानी हो। सिंहासनपर बैठकर समझ बूझकर सब काम काज करना। राजसिंहासन निरा सुखमय नहीं है, सुख दुःख और अमृत गरलका मेल है। याद रखना स्वर्गमें देवता है। संसारकी मायाके जालमें न पड़ना। जब सङ्कटमें पड़ो, तब माई—जो राजाके राजा हैं, जो ससागरा पृथ्वीके महाराजके भी महाराज हैं, उन्हीं भगवान्‌के ऊपर आत्मनिर्भर करके, उन्हीं भगवान्‌के चरणोंको देखकर विपज्जाल काटनेकी चेष्टा करना।'

षोडशी विक्टोरिया।

यह बात सुनते विक्टोरियाके दोनों नेत्रोंमें आंसू बहने लगे। हृदयका आवेग वह सह न सकी, लड़केकी भांति फूट फूटकर रोने लगी और रोते रोते माके कन्धेमें मुह छिपा लिया तथा रोते रोते हांफने लगीं। जननी दोनों बांहोंसे कन्याको आलिङ्गन करके रह

गई। उनकी आंखसे भी जल गिरने लगा। इंग्लण्डनरेश भी बिना रोये न रह सके। वह भी रोते रोते विक्टोरियाके माथेपर हाथ रखते हुए कहने लगे, "बेटी, चुप रहो, रोना काहेका है ?"

इंग्लण्डके जितने सकल नरनारी थे, उन सबकी आंखोंसे उस दिन जलधारा गिरी। सभी रूमाल लेकर आंखका जल पोंछने लगे। ऐतिहासिक लोग कहते हैं—"ऐसा अद्भुत दृश्य इंग्लण्डमें और किसीने न देखा था। ऐसी अपूर्व्व घटना इंग्लण्डमें कभी घटी नहीं थी।"

आठवां अध्याय।

विक्टोरियाकी मा डचेस अव केण्टने कन्याको नाना विद्याओंमें निपुण किया,—यहांतक कि सीने पिरोनेका काम भी सिखाया। मा अपनी बेटीसे सदा ही कहा करती थी, "बेटी! तुम दुःखिनीकी बेटी हो, थोड़े ही दिनोंमें राजराजेश्वरी होगी। तुम रानी हो, तब लोग यह न कह सकें, कि इस दुःखिनी लड़कीको अच्छी शिक्षा दीक्षा नहीं मिली—सो भली भांति राजकाज नहीं कर सकती। तुम रानी होकर ऐसा काम करना, जिससे तुम्हारे उच्चपदका गौरव ज्योंका त्यों रक्षित रहे। अब यदि मेरे सिखानेसे तुम सुशील और उत्तम युवती हो, तो भविष्यमें तुम जरूर सुशील और उत्तम रानी होगी। विक्टोरिया, तुम इस दुःखिनी माकी बातें याद रखकर काम करना।"

जर्मनीमें विक्टोरियाके मामा प्रिन्स लियोपोल्ड रहते थे। पितृहीन होनेके दिन हीसे कन्या विक्टोरिया मातुलकी विशेष प्यारी होने लगी थी। कभी कभी मामा इंग्लण्डमें आकर विक्टोरियाको देखते थे, चाहते थे, भेंट देते थे, और उनकी शिक्षाकी विशेष परीक्षा करते थे। क्योंकि मामाने समझ लिया था, कि यह विक्टोरिया ही एक दिन अङ्गरेज जातिकी सर्व्वकर्त्री होगी। वह भी यही समझाते, "बेटी, तुम्हारे ऊपर भारी जिम्मेदारी पड़नेका समय आया है। लिखना पढ़ना खूब सीखना। माई, जान रखना, कि किसके साथ कैसा व्यवहार करना होता है। कभी कोई काम अधीर वा उतावली होकर न करना। मनमें क्रोध हो, तो उसे ठंढा करके सहजभावसे काम करना। जब तुम सिंहासनपर बैठोगी, तब बहुत लोग तुम्हें बहुत उपदेश देंगे। उपदेशोंको चित्त लगाकर सुनना। पर कौन बात अच्छी और कौन बात बुरी है,—यह स्वयं विचारकर कर्त्तव्याकर्त्तव्य स्थिर करना। निरे बच्चोंकी भांति किसीकी बातपर बैठना मत। सब काम अपना अस्तित्व रखकर सुसम्पन्न करनेके लिये खबरदार रहना।"

सतरह वर्षकी बुद्धिमती विक्टोरियाने मामासे कहा, "आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य है। जहांतक सम्भव है, इस जीवनमें तहांतक आपका आदेश पालनेका यत्न करूंगी।"

मातुल लियोपोल्ड उच्चवंशी और घरानेके हिसाबसे राजवंशसे मिले थे। वह राजनीतिज्ञ, बुद्धिमान् और चतुर थे बात चीत करनेके शौकीन, लोगोंके मनको मोहनेवाले और दिल्लगी करनेमें होश-

यार थे। इंग्लण्डके उस समयके राजपुत्र प्रिन्स अव वेल्सकी कन्या श्रीमती सारलटको लियोपोल्डने विवाह किया था। इंग्लण्डेश्वर जौर्जके प्रथम पुत्र उक्त प्रिन्स अव वेल्सकी थोड़े ही दिनोंमें मृत्यु हुई। तब उनकी बेटी श्रीमती सारलट दादा तृतीय जौर्जकी मृत्युके पीछे इंग्लण्डकी रानी होंगी, अनेक लोगोंने यह आशा की। मामा लियो-पोल्डने भी यह उमेद की, कि मैं श्रीमती सारलटका स्वामी होकर इंलण्ड भूमिका शासन करूंगा। पर कालकी गति विचित्र है! श्रीमती सारलाटने जवानी हीमें अपनी देह छोड़ दी। मामा लियोपोल्डने स्त्रीके वियोगमें नाना कारणोंसे मर्ममें व्यथा पाई। सारलटके स्वामी होकर इंग्लण्डमें राज्य करनेकी आशा न रही।

प्रिन्स लियोपोल्ड तब सोचने लगे, कि मेरे वंशकी कोई सुस-न्तान अगर विक्टोरियाको विवाह कर सके, तो मेरे मनका दुःख कुछ दूर हो जावे। उनके भाई ड्यूक अव कोवर्गके दो पुत्र थे। पहले पुत्रका नाम अनष्ट और दूसरेका अलवर्ट था। अलवर्टकी भांति रूप-वान पुरुष उन दिनों युरोपमें न था, कहनेसे अत्युक्ति न होगी। उसकी कमलपत्रकीसी नेत्रोंकी जोड़ी जिसने एक बार देख ली, वह सहजमें फिर आंख फिरा न सका। वह मुस्काता हुआ चेहरा जिसने एकबार देखा,वह वैसा सुख कभी भूल न सका। अलवर्टके मधुरकण्ठकी कूजनध्वनि जिसने एक बार सुनी है, वीणाध्वनि भी उसे अच्छी नहीं लगी। अलवर्टके केशकलापकी बहार जिसने एकबार देखी है, बालोंकी दूसरी सजीली परिपाटी फिर उसकी आंखोंमें नहीं जंची। इसी अलवर्टके दिनसे अलवर्ट-फेशनकी मांग चली है। अलवर्ट मनुष्य

नहीं था,—मूर्त्तिमान् कामदेव था। प्रिन्स लियोपोल्डने इसी अल-वर्टके साथ, इसी मूर्त्तिमान् कामदेवके साथ प्रेमसूत्रमें विक्टोरियाको बांधनेका इरादा किया। अपने शिक्षागुरु वेरन ष्टकमरके सिवाय यह बात उन्होंने किसीसे खुलके नहीं कही।

इधर विक्टोरिया थोड़े ही दिनोंमें इंग्लण्डकी महारानी होंगी, यह बात नाना देशोंके बहुत नगरोंमें फैल गई। तब युरोपके अनेक राजपुत्र विक्टोरियाके पाणिग्रहणके अभिलाषी हुए। इंग्लण्डके साम-यिक महाराज विलियमके पास बहुत सिफारिशें आने लगीं। राजा विलियमने नेदरलण्डके प्रिन्स अलखजन्डरको विक्टोरियाका वर ठीक किया, कभी पुरुशाके प्रिन्स आडलवर्ट विक्टोरियाके स्वामी निश्चित होने लगे। किसी किसीने कहा, "उरेटमर्गके डियुक अरनेष्ट विक्टो-रियाके भर्त्ता हों, तो अच्छा है।" इनके सिवाय और भी अनेक राजकुमारोंका नाम विक्टोरियाके भविष्य पतियोंकी गणनामें आने लगा। पर अलवर्टका नाम तो कभी किसीके मुहसे न सुना गया।

प्रिन्स लियोपोल्डने एक बार अपनी बहिन अर्थात् विक्टोरियाकी माताको अपने मनका अभिप्राय जताया। विक्टोरियाकी मा प्रिन्स अलवर्टके रूप और गुणका पक्षपात करती थी। भाईकी बातको बहिनने मान लिया, कहा, "जर्म्मनीसे अपने भाई डियुक अव कोवर्ग और उनके दोनो पुत्र अर्नेष्ट और अलवर्टको न्योतकर केनसिङटन महलमें ले आओ और एक महीनेतक उन्हें महलमें रहने दो और सुखचैन करो। पर विक्टोरिया और अलवर्टका विवाह होगा, यह बात

किसीसे मत कहना और विक्टोरिया तथा अलबर्टको भी मत बताना। अभी बात कह देनेमें बड़ा नुकसान है। वर और कन्या दोनोंके मन जब मिल जावेंगे, प्रेमप्रीति बढ़ जावेगी और दोनोंही आपसमें विवाह करनेको राजी होंगे, तब विवाहकी बात जाहिर करना। अभी बुणाक्षर न्यायसे कोई इस बातको जानने न पावे।"

जर्मनदेशके बड़े भाईको कुटुम्ब समेत निमन्त्रण करनेके लिये विक्टोरियाकी माने इंग्लण्डके महाराजसे आज्ञा लेना चाही। इस निमन्त्रणकी बात सुनके राजा बड़े नाराज हुए और निमन्त्रणमें अनेक विघ्न डालने लगे। विक्टोरियाकी बुद्धिमती माताने बड़ी चतुराईसे उन विघ्नोंको दूर करके निमन्त्रणके लिये इंग्लण्ड-नरेशकी आज्ञा पाई।

मई महीना है। इंग्लण्डमें तब वसन्त ऋतु है। केनसिङ्टन भवनमें भांति भांतिके फूल फूले हैं। कोई फूल केवल शोभाके लिये, कोई केवल सुगन्धके लिये और कोई फूल शोभा और सुगन्ध दोनोंके लिये है। राजकुमारी विक्टोरिया किसी प्यारे फूलके पेड़को जलसे सींचती हैं, किसी फूलकी बेलके नीचे फावड़ेसे खोदती हैं। फूले हुए फूलोंको चुनकर विक्टोरिया कभी माला बनाती हैं, कभी हार तय्यार करती हैं और हार माला लेकर अपनी माको भेंट देती हैं। फूलका खेल खतम होनेपर विक्टोरिया गीत गाती हैं, कभी पियानो बजाती हैं, कभी उस्तादोंके पास नाच सीखती हैं। और नियमित समयपर गुरुके पास साहित्य, इतिहास और विज्ञान पढ़नेमें मन लगाती हैं। १७ वर्षकी लड़की विक्टोरिया सन् १८३६ ई०के मई महीनेमें सुखके वसन्तका ऐसे ही काल काटती हैं।

अलबर्ट और विक्टोरिया।

विक्टोरियाकी माताका निमन्त्रण मानकर डियुक अव कोवर्ग दोनों बेटोंको लेकर ऐसे ही दिन इंग्लण्डमें केनसिंडटन राजभवनके भीतर विक्टोरियाके पास आये। प्रिन्स अलवर्ट डियुक अव कोवर्गका छोटा बेटा था। विक्टोरियासे उमरमें तीन महीने छोटा था। उमरमें तीन महीने छोटा होनेपर भी प्रिन्स अलवर्ट विक्टोरियासे छोटा नहीं मालूम पड़ता था, पर बड़ा मालूम पड़ता था। प्रिन्स अलवर्टके नवयौवनका आरम्भ था और राजकुमारी विक्टोरियाके भी नवयौवनका आरम्भ था। फूलकी कली खिलना चाहती थी। विक्टोरिया प्रिन्स अलवर्टको नयनभरके देखने लगी और मन मनमें वह रूपका अमृत पीने लगीं। विक्टोरियाने समझा, कि यह मर्त्यलोकके मनुष्य नहीं हैं, शायद यह स्वर्गके कोई देवता हैं। इनके सर्वाङ्गमें मानो पवित्रताका भाव भरा हुआ है। जिनकी इतनी रूपमाधुरी है, वह अवश्य ही सब गुणके आधार हैं। ऐसे सोचते सोचते विक्टोरिया और उनकी मा मेहमान कुटुम्बको आदर और संमानसे केनसिंडटन राजभवनमें ठहराने लगीं। आमोद प्रमोद, गाना बाजाना, सैर तमाशा, सवारी शिकारी, खाना, पीना, एक साथ पढ़ना—यह सब काम बड़ी फुर्त्तीसे होने लगे। कभी विक्टोरिया फूल तोड़के उसकी माला अलवर्टको देती थी और कभी अलवर्ट फूल तोड़कर माला विक्टोरियाके हाथमें देते।

अलवर्टकी आंखमें विक्टोरिया पृथ्वीभरकी सब सुन्दरियोंमें अद्वितीय जंचने लगी। अलवर्टको विक्टोरियाकी बातें जैसी मिष्ट मधुर लगने लगीं, मालूम होता है वैसी मिठाई पृथ्वीभरमें और कहीं

उन्होंने नहीं पाई थी। अलवर्टके नयनोंमें विक्टोरियाकी हंसी चांदनीसी फैली हुई दिखाई देने लगी। अलवर्टने भी देखा, कि विक्टोरिया नारी नहीं है। ब्रह्माने मानो एकान्तमें बैठकर यह देवी-मूर्त्ति गढ़ी है।

बड़े आनन्दसे ऐसे ही एक महीना बीत गया। विदा होनेके समय उस स्त्रियोंके मनके मोहनेवाले, कामदेवकी बराबर रूपलावण्य-वान् प्रिन्स अलवर्टने विक्टोरियाकी सफेद कमलकलीसी कोमल अङ्गुलिमें एक हीराजड़ी अंगूठी पहनाकर विदा ली। विदा होने समय दोनोंकी आंखोंमें आंसू आये कि नहीं, दोनोंने दीर्घ उसास ली कि नहीं, सो शायद किसीने देखा नहीं। इसी लिये इतिहासमें भी यह बात नहीं लिखी गई।

यही प्रिन्स अलवर्ट विक्टोरियाके होनहार पति थे और यही विक्टोरिया प्रिन्स अलवर्टकी भावी सहधर्म्मिणी थी। दूसरे नातेसे प्रिन्स अलवर्ट विक्टोरियाके ममेरे भाई थे और कुमारी विक्टोरिया प्रिन्स अलवर्टकी फुफेरी बहिन थीं। हमारे देशमें ऐसे भाई बहि-नका विवाह निषिद्ध है, पर विलायतमें—क्रस्तानोंके देशमें ऐसा भाई बहिनका विवाह बड़ी धूमधामसे होता है।

चतुरचूड़ामणि मातुलका उद्देश्य सफल हुआ। उन्होंने दूत-रूपी आंखके द्वारा समझा, कि परस्परमें सघन प्रीति हो गई है। वह पवित्र स्वर्गीय प्रेम परस्परके हृदयसे किसी भांति दूर नहीं हो सकता। तब मामा लियोपोल्डने भानजी विक्टोरियाको एक चिट्ठी लिखके जनाया, प्रिन्स अलवर्टसे विवाह करनेमें तुम्हारा क्या अभिप्राय

है ? बुद्धिमती सतरह वर्षकी विक्टोरियाने यह जवाब लिखा ;—

"प्यारे मामा साहब ! आपसे अब मेरी यही एकमात्र प्रार्थना है, कि मेरे प्यारे प्रियतम अलबर्टका जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहे, उस विषयमें आप सदा यत्न करें। केवल अपनी विशेष खबरगीरीसे ही उनकी रक्षा करें।"

लिखनेके ढंगसे मामा समझ गये, कि विक्टोरियाने अलबर्टको मन प्राण सौंप दिये हैं।

विक्टोरियाकी पहली मन्त्रीसभा।

नवां अध्याय।

१८३७ ई०की २४वीं मईको राजकुमारी विक्टोरियाकी उमर १८ वर्षकी हुई। नाबालिग विक्टोरिया बालिग हुई। इंग्लण्डके बाथ्‌ड्न नगरमें बड़ी धूमधामका उत्सव हुआ। भावी इंगलण्ड-नरेश्वरीको प्रजा अभिनन्दनपत्र और भेंट पूजा देने लगी। स्वयं महाराजने अपनी सतीजी विक्टोरियाको स्नेहके मारे ढेरके ढेर उपहार दान किये और दो सौ

मरण-समय आ गया।" महारानीकी आंखमें आंसू आ गये। महारानीकी सखियां रोने लगीं। राजाने अपना दुर्ब्बल हाथ उठाके कहा, "ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करे; ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करे।" पादड़ी साहब आकर महाराजको धर्म्मग्रन्थ वाइवल सुनाने लगे। उस दिन महाराज कभी जाग पड़ते, कभी सो जाते थे, कभी अधखुली आंखसे न जागते ही थे, न सोते ही थे। कभी कभी सोते सोते कह उठते "हे भगवन्! तुम्हारी जो इच्छा है, सो ही होगा।" धीरे धीरे सन्ध्या हुई। राजा बेहोश हो गये। क्षणभरमें फिर होशमें आये। तुरन्त ही फिर नीन्दका जोर आया। राजा सोते सोते पादड़ीसे कहने लगे, "विश्वास करना, मैं धर्म्मात्मा था।" रातके दोपहर बीत गये। राजाकी ऊपरी श्वास चलने लगी। रातके जब दो बजके दस मिनिट हुए—तब अपने सब कुटुम्ब परिवार स्वजनोंसे परिवेष्टित होकर हृद्ध इंग्लण्डेश्वरने अपने प्राण छोड़ दिये। घरमें हाय हाय शब्द उठा। महारानी और सब कुटुम्ब धूलमें लोटने लगा।

लण्डन नगरमें चारो ओर शोर हुआ, राजाकी मृत्यु हुई,—राजा अब नहीं हैं। सत्तर वर्षके बूढ़े राजाके बदले आज अठारह वर्षकी कुमारी कन्या सिंहासनपर बैठी। उसी घोर रात्रिमें लण्डनमें भयङ्कर आन्दोलन होने लगा। राजमहलकी तरफ लोगोंके दलके दल दौड़ने लगे। गिर्जाघरोंमें भयङ्कर शब्दसे राजाकी मृत्यु जतानेवाली घण्टाध्वनि होने लगी, प्रजावर्गके प्राण व्याकुल होने लगे।

तब राजपुरोहित डाक्टर हावेल और राजमहलके एक और प्रधान कर्म्मचारी लार्ड चेम्बरलेन विक्टोरियाको यह खबर जतानेके

लिये मृत राजाके पलङ्गकी पट्टीसे उठे। राजमन्त्रियोंने सलाह दी, कि क्षणभर भी विलम्ब न करके शीघ्र ही केनसिङ्गटन राजभवनमें जाकर विक्टोरियाको तुरन्त खबर दो। और उन्हें समझा दो, कि खबर पाते ही तुम इंगलण्डकी रानी हुई। क्योंकि इंगलण्डका सिंहासन राजा बिना रह नहीं सकता। वहां दोनो जने रातके ढाई बजे लण्डन नगरसे थोड़ी दूरपर स्थित केनसिङ्गटन राजमहलकी तरफ घोड़ा गाड़ीपर बैठकर चले। घोड़ोंकी चौकड़ी बहुत वेगसे छूटी। गाड़ीके पहियोंकी घर्घर ध्वनिसे राजमार्ग प्रतिध्वनित होकर कांपने लगा। लोग अचानक जाग उठे और नींदकी नशामें भय देखने लगे।

पांच बजे। दोनो कर्म्मचारी विक्टोरियाके भवनपर जा मौजूद हुए। रातके पांच बजे विलायतमें रात रहती है। उन्होंने आकर देखा, विक्टोरियाका राजभवन सुनसान निःशब्द है। सब लोग घोर नींदमें सो रहे हैं। द्वारपर दरवान भी सो रहा है। उन्होंने महलके फाटकपर धक्का मारा, लात मारी, घण्टा बजाया, तो भी किसीने महलका द्वार न खोला। जब वे लोग लगातार जोरसे किवाड़ खटखटाने और घण्टा बजाने लगे, तब ड्योढ़ीवानने जागकर किवाड़ खोल दिये। राजभवनके भीतर, बाहरी मैदानमें घुस आकर ढालू फर्शपर दोनो जने बड़ी देरतक खड़े रहे और इधर उधर देखने लगे, तो भी किसीने उनको बुलाया नहीं। फर्शपर इसी भांति इन्तजार कर रहे थे, इतनेमें एक मनुष्यने आकर उनको राजमहलके नीचे एक कोठरीमें बैठा दिया और "आता हूं" कहकर चला गया। दोनो राजकर्म्मचारी उसी घरमें बैठे रहे, पर किसीने उनको बलाया नहीं। उनको

खबर लेनेको फिर कोई न आया। उन्होंने सोचा, शायद सब उनको भूल गये हैं। फिर वे जोरसे चिल्लाने लगे। उच्च कण्ठसे कहने लगे, "हम लोग महारानी विक्टोरियाके साथ मुलाकात करने आये हैं। बड़ी जरूरत है। बड़ा भारी राजकार्य्य है।" तो भी किसीने जवाब न दिया। फिर कुछ देर वे चुपचाप बैठे रहे। जब साढ़े पांच बजे, तब फिर उन्होंने जोरसे घण्टी बजाना आरम्भ किया। तब एक सेवकने राजभवनसे आकर कहा, "आप लोग ऐसा क्यों करते हैं?" पादड़ी साहब राजपुरोहितने उत्तर दिया, "हम लोग रानी विक्टो- रियाके साथ मुलाकात करने आये हैं।" सेवकने जवाब दिया, "वाह, वाह! क्या बात है? इस घोर रात्रिकालमें राजनन्दिनी सुखनीन्द सो रही हैं, उनकी सुखनीन्द इस समय कौन तोड़े, कहो? किसका ऐसा साहस है?" पुरोहितने जवाब दिया,—"डचेस अब केण्टकी पुत्री विक्टोरिया अब खाली विक्टोरिया नहीं रही, वह महारानी विक्टो- रिया हो गई है। हम उसी महारानीसे राजकार्य्यकी खबर लेकर मुलाकात करने आये हैं। राजकार्य्य करनेके लिये इस समय उनकी नीन्द दूर करना होगी। उनको खबर दीजिये,—शीघ्र खबर दीजिये, कि इंगलण्डकी महारानीसे मुलाकात करनेके लिये केण्टरबेरी और चेम्बरलेन राजकार्य्य लेकर आये हैं।" स्वामिभक्त सेवकने दौड़े दौड़े जाकर विक्टोरियाको उठाया। खबर पाते ही सरगर्जे कपड़े और खुले बालों समेत विक्टोरिया वैसे ही राजपुरोहितके पास आकर मौजूद हुई! विक्टोरियाके पांवमें चपोड़ा जूता था, बदनमें ढीला कुरता था, कन्धोंपर एक शालका रूमाल था, आंखमें

जल और चेहरेपर गम्भीरता थी। राजपुरोहित कण्टरबेरी और राज-कर्मचारी चम्बरलेन, दोनो विक्टोरियाको सामने देखके घुटनोंके बल बैठ गये और हाथ जोड़कर बोले, "माता! तुम इंग्लण्डकी रानी हुई हो। आज रातको दो बजके बारह मिनटपर तुम्हारे ताऊ चतुर्थ विलियम यह लोक छोड़ गये। उसी समयसे आप इंग्लण्डकी रानी हुई।"

विक्टोरियाकी मा आकर विक्टोरियाके पास खड़ी हुई। कन्या हृदयका आवेग न सह सककर माताके कन्धेपर बल देकर खड़ी हो गई। राजपुरोहितने फिर कहा, "इंग्लण्डकी रानीकी जय हो।" विक्टोरियाने कहा, "पुरोहित महाशय! मेरी कल्याणकामना करके भगवान्से प्रार्थना कीजिये, जिससे मैं भगवान्की कृपासे यह दुस्तर राजनीतिसागर पार हो जाऊं।"

ग्यारहवां अध्याय।

अठारह वर्षकी लड़की विक्टोरिया भगवान्का नाम लेकर अपना राजत्व करने लगी। भगवान्के नामसे जो काम आरम्भ होता है, उसका अमङ्गल कहां है? सवेरा हुआ। लण्डन नगरके जितने प्रधान प्रधान व्यक्ति थे, सो केनसिङ्टन राजभवनमें आने लगे। रानी विक्टोरियाका सबसे पहला काम हुआ मृत महाराज चतुर्थ विलि-यमकी शोकसन्तप्ता विधवा पत्नीको एक चिट्ठी लिखना। चिट्ठी

लिखकर सरनामा लिखा,—"महारानी एडिलेड।" एक सखीने विक्टोरियाकी भूल दिखाकर कहा, "उनको 'महारानी' कहकर सम्बोधन न कीजिये। 'भूतपूर्व महारानी' अब ऐसा ही पाठ लिखना उचित है।" विक्टोरियाने धीर गम्भीर स्वरसे उत्तर दिया, "अपनी ताईको क्या कहके सम्बोधन करना होगा, सो मैं खूब जानती हूं। पर मैं पहले पहल उनको वह बात याद न दिलाऊंगी। मैं सबसे पहले उनके स्वामीकी मृत्युकी बात, उनके विधवा होनेकी बात किस प्राणसे उनके हृदयमें जगा दूं।"

दिनके ६ बजे इंगलण्डके प्रधान मन्त्री लाट मेलबोर्न विक्टोरियाको देखने आये। इंगलण्डकी रानीके आगे मन्त्री हाथ जोड़े हुए घुटनोंके बल बैठे। रानीने नमस्कार करके उन्हें निर्दिष्ट आसनपर उठाकर बिठाया। मन्त्री मेलबोर्नने किस प्रकार राजकार्य्य करना होगा, उस विषयका उस समय यथासम्भव उपदेश विक्टोरियाको दिया। मेलबोर्नने महारानीसे कहा, "आज ही केनसिङ्टन राजभवनमें आपकी प्रिवि कौन्सिलकी प्रथम सभा बुलाई जावेगी। आपको उस सभामें उपस्थित होना और वक्तृता पढ़ना होगा।"

सभा एकत्र होनेके कुछ आगे आजकी काररवाई लाट मेलबोर्नने उनको खूब समझा रखी थी। सभामें राज्यके जितने प्रधान प्रधान व्यक्ति थे, सो आकर उपस्थित हुए। सभाका काम आरम्भ हुआ। महारानी चिरञ्जीव रहें, इस ध्वनिसे सभागृह प्रतिध्वनित हुआ। नये राज्यका आरम्भ विज्ञप्त हुआ। विजय-बैण्ड बजने लगा। केनसिङ्टन राजभवन फूली हुई कमलमालाकी भांति दिखाई देने लगा।

दुःखिनीकी लड़की विक्टोरिया आज राजराजेश्वरी हुई।

विक्टोरिया स्वभावसे ही लज्जालु थीं। "मनुष्योंका जङ्गल देखकर डरना मत, शरमाना मत, घबराना मत।" यह बात माने विक्टोरियाको बारम्बार समझाई थी। पर आज पहला दिन है, पहला दरबार है, पहली रानी हैं,—सोच तो देखो, विक्टोरियाका हृदय कितना विचलित हुआ था। जिन चचा ताउओंको विक्टोरिया प्रणाम करती थीं, वही चचा ताऊगण आज विक्टोरियासे नीचे आसनपर बैठे हैं। जिन स्त्रियोंको विक्टोरिया अपनी माके समान देखती थीं, वही स्त्रियां आज विक्टोरियासे नीचे बैठी हैं। जिन बूढ़े मन्त्रियोंको विक्टोरिया गुरु जानती थीं, वे ही सब महापण्डित राजनीतिविशारद व्यक्ति मानो टेर कृपाके भिखारी होकर विक्टोरियाके चरणोंमें हाथ जोड़े खड़े हैं। सोचो तो सही, लड़की विक्टोरियाके मनमें क्या भाव होता है। कोमल कलीकी भांति शरमीली लड़की यह तमाशा देखकर जो मर्ममें मर न गई,—यही बहुत हुआ। माताके शिक्षाके गुणसे हृदयका वेग थाम लेनेमें विक्टोरिया बहुत कुछ समर्थ हुई। ज्योंही एकाध बार उनकी छाती धड़धड़ाती थी, त्योंही विक्टोरिया सोचने लगती थीं, 'माका निषेध है, मैं क्यों डरूं ?" विक्टोरिया किसीके भी मुखकी ओर न देखकर सिर झुकाये हुए सभागृहमें प्रविष्ट हुईं और राजगद्दीपर बैठ गईं। पहले तो राजमन्त्री मेलबोर्नकी लिखी हुई वक्तृता बड़े ललित स्पष्ट स्वरसे पढ़ी। उनके तन्त्रीसम कण्ठके स्वरसे, उनके अङ्गरेजी उच्चारणके प्रभावसे, उनके बोलनेके भावहावभङ्गिमाप्रदर्शनसे निन्दुक लोगोंने भी कण्ठ खोल-

कर प्रशंसा की। विक्टोरियाकी वक्तृताका सार मर्म इस प्रकार था,—

"अपने ताऊ चतुर्थ विलियमकी मैं सन्तान समान हूं। उनके परलोकवासी होनेसे मैं शोकसे विह्वल हूं। ताऊका स्नेह मैं कभी नहीं भूल सकूंगी। उनकी मृत्युसे इंग्लण्डकी बड़ी भारी हानि हुई है, और मेरे ऊपर इस विशाल राज्यका शासनभार पड़ा है। मेरी उमर बहुत थोड़ी है। परन्तु जिस भगवान्‌ने मुझे इस उच्च सिंहासनपर बिठाया है, वही भगवान् मुझे सुमति देंगे, शक्ति देंगे,—ऐसी उमेद अगर मुझे न होती, तो आज मैं इस विषम भारसे अवसन्न हो पड़ती। भगवान् ही मेरा भरोसा है। उसी भगवानको सोचकर देह और मनमें बल पाकर मैं प्रजाको पालूंगी।

"हमारी पार्लिमेण्ट महासभाके सभ्य बुद्धिमान् और कार्य्यदक्ष हैं। हमारी प्रजा हमारी और स्नेहशील और भक्तिमान् है। प्रजाका स्नेह और राजभक्ति, महासभाके सभ्योंकी बुद्धि और कार्य्यशक्ति,—इन कई एक मसालोंके मेलसे हम मजबूत दीवार उठाकर इस महाराज्यकी बुनियाद डालनेमें साहसी हुई हैं। हमारे आगेके राजा लोग प्रजाके सुख स्वाच्छन्द्य और स्वाधीनतके ऊपर विशेष दृष्टि रखकर चले हैं, और उन्होंने स्वदेशके आईन कानूनकी उन्नतिके निमित्त यत्न किया है, ऐसे राजा लोगोंकी उत्तराधिकारिणी होकर हमने सिंहासन पाया है। सो आशा है, हमारा राज्य सुख स्वाच्छन्द्यसे चलेगा।

"मेरी मा स्नेहशील और सुशिक्षित हैं, उन्हींके अधीन रहकर मैंने केनसिङ्टन राजभवनमें उत्तम शिक्षक और शिक्षयित्रीकी सहा-

यतासे सुशिक्षा पाई है। और निरे बचपन हीसे अपनी जन्मभूमि इंग्लण्डकी शासन-प्रणालीको मैं भक्ति और श्रद्धा करना सीखी हूं।

"सम्पूर्ण साधारण लोगोंको धर्मविषयक स्वाधीनता हम देंगी और इस देशमें जो धर्म प्रतिष्ठित हुआ है, उसकी रक्षाके लिये हम सदा यत्न करेंगी। अधिक क्या, प्रजावर्गके अधिकारोंको बजा रखकर उनका सुख स्वाच्छन्द्य और मङ्गलका विधान करूंगी।"

विक्टोरियाने तब सौगन्द खाकर ईश्वरको साक्षी किया और घोषणा कर दी, कि "अपने देशकी स्वाधीनता, आईन और प्रजावर्गके हक सावित रखनेको आजसे हम प्रतिज्ञावद्ध हुई।"

तब मन्त्रिसभाके सभ्य लोगोंने महारानीकी अनुचरता और शरण मञ्जूर की। उस समय एक एक करके सब लोग महारानीका हाथ चूमते हुए विदा होने लगे। ताऊ लोगोंने भी रीतिके अनुसार रानीका हाथ चूमा। परन्तु विक्टोरिया—करुणामयी विक्टोरिया सम्बन्ध-रहित साधारण लोगोंकी भांति ताऊ लोगोंको हाथ चूमते देखकर उठी और स्नेहके मारे बूढ़े ताऊको बाहोंमें लपेटकर उनका मुंह चूम लिया। सभामें धन्य धन्य ध्वनि होने लगी।

दूसरे दिन घोषणाका उत्सव हुआ। पुरानी रीतिके अनुसार महारानी सेण्ट जेम्सके गिरजेके जङ्गलेमें खड़ी हुई। उनकी मा पास खड़ी हो गई। और राज्यके प्रधान प्रधान लोग उनकी चारों ओर खड़े हुए। असंख्य लोग यह उत्सव देखनेको एकत्र हुए। जय महारानीकी जय, जय महारानीकी जय—इस शब्दसे आकाशमण्डल गूंज उठा।

विजयका बाजा बजने लगा। अनेक तोपें दगने लगीं। और नाचने गाने खाने पीनेमें वह दिन कट गया।

इस घोषणाके तीन सप्ताह पीछे विक्टोरियाने माताके साथ केनसिङ्टन महल छोड़कर बकिङ्हम महलमें चरण रखा और वहीं रहने लगीं। केनसिङ्टन महल तो छोड़ दिया, पर केनसिङ्टनको विक्टोरिया कभी भूली नहीं। केनसिङ्टनके पड़ोसियोंको भी भूली नहीं। पड़ोसियोंके सुखमें सुखी, दुःखमें दुःखी होती थीं और दरिद्र लोगोंको धनकी सहायता देती थीं।

लगभग एक वर्ष राज्य करके विक्टोरियाने मुकुटधारण किया। इस विलम्बसे राजमुकुट पहरनेका कारण यह था, कि पुराना मुकुट बड़ा और भारी था। इसी लिये नया मुकुट पहरनेमें इतनी देर हुई।

१८३८ ई०की २८ वीं जूनको वेस्टमिन्स्टर अबी नाम गिरजेमें महारानीने मुकुट पहना। यह उत्सव बड़ी ही धूमधामसे हुआ। समग्र इंगलण्डने इस बड़े उत्सवपर धूम मचाई। करोड़ों लोग एकत्र होकर कण्ठ खोलके पुकारे, "महारानी चिरजीव रहें।" इस उत्सवपर महारानी अपने पूर्व पुरुषोंकी गद्दीपर बैठी। इस गद्दीपर ३३ महाराज और ४ महारानी आगे बैठ चुके थे। रीतिके अनुसार सोनेका एक टुकड़ा कपड़ा महारानीके माथेके पास रखा गया। महारानीके दोनों कमलसे हाथ और मस्तकपर तेलका तिलक लगाया गया। तब पुरोहितराज कण्टरबरीने महारानीके मस्तकपर इंगलण्डका राजमुकुट रख दिया। यह राजमुकुट धारण करके महारानी चेयर अब होमेज नाम एक न्यारी कुर्सीपर जा बैठीं। तब सब लोग

महारानीका मुकुट-धारण ।

एक एक करके घुटनोंके बल बैठे और रानीका हाथ चूमने लगे। महारानीका मुकुट छुआ और महारानीकी वश्यता स्वीकार कर ली।

यों राजमुकुट पहननेके समय, आगे यह रीति थी, कि महारानीका बांयां कपोल चूमा जावे। पर लज्जावती युवती विक्टोरियाका वामकपोल हजारो लाखों बूढ़े और जवान चूमेंगे,—यह बात बहुत लोगोंको पसन्द न आई। महारानीने भी यह बात बिलकुल नापसन्द की। तब वाम कपोलके बदले वामहस्त चूमनेकी रीति जारी हुई। महारानीने रक्षा पाई।

मुकुट धारण उत्सव शेष हुआ। महारानी माता और सहेलियोंके साथ हंसती हंसती महल चली आईं।

महलके भीतर घुसके देखा, कि उनका प्यारा छोटा कुत्ता उनकी कण्ठका स्वर सुनके उनको देखके, आनन्दसे फूलके, नाच नाचके भूंक रहा है। महारानीने त्योंही सब काम छोड़के कहा, "डैश, डैश, तू यहां है?" यह कहके कुत्तेको गोदमें लेकर उसके शरीरपर हाथ फेरते फेरते महारानी कपड़े उतारनेके लिये दूसरी कोठरीमें घुस गईं।

महारानी विक्टोरिया मुकुटधारण करनेके पीछे अनेक देशोंसे अनेक लोगोंके पाससे भांति भांतिके संमानसे भारी हुई चिट्ठियां पाने लगीं। एक चिट्ठी लिखी उसी ममेरे भाई, उसी होनहार पति, उसी प्रिन्स अलबर्टने। विक्टोरियाने बड़े शौकसे, बड़े आनन्दसे वह चिट्ठी एक बार पढ़ी, दो बार पढ़ी, तीन बार पढ़ी। वह चिट्ठी यह थी,—

"प्यारी बहिन,

तुम्हारी दशा अब बदल गई, तुम इंग्लण्डकी रानी हो गई हो।

आज मेरे आनन्दका समुद्र उछल पड़ा है। सो दो चार बातें लिखता हूं।

"युरोप भरमें इंग्लण्ड श्रेष्ठ और बलवान् राज्य है। उसी इंग्लण्डकी तुम रानी हो। आज तुम कोटि कोटि लोगोंके सुखका सम्पादन करनेवाली हो। भगवान् तुम्हारे सहाय हों। भगवान् तुम्हारी देह और मनमें बल दें। तुम जरूर ही अपने राज्यशासनरूपी बड़े कामको पूरा कर लेनेमें समर्थ होगी।

"मैं उमेद करता हूं, दुआ करता हूं, तुम्हारा राज्य बहुत दिनोंतक रहे, सुख चैनसे भरा रहे, और मान संमानसे पूरा रहे। तुम्हारी प्रजा अच्छे कामोंमें तुम्हारी अच्छी चेष्टा देखकर तुमको प्यार करे, भक्ति करे और तुम्हारा गुण माने।

"इस जर्म्मन राज्यके भीतर बोन नगरमें तुम्हारे दो भाई हम लोग रहते हैं। तुम इन दिनों राजकाजमें सदा ही फंसी हो। उन दोनों भाइयोंकी याद कभी कभी कर लेनेके लिये क्या मैं तुमसे अनुरोध कर सकता हूं? सच जानना, मेरा मन तुम्हारे साथ है। आजतक जिसके लिये तुम स्नेह, प्रीति और ममता दिखाती आई हो, उस व्यवहारको न तोड़ देनेके लिये क्या मैं तुम्हारे आगे हठ करूं? तुम्हारा समय अब कीमती है,—बहुत बातें लिखके तुम्हारा वक्त खराब नहीं किया चाहता।

महारानीका विश्वस्त सेवक

—अलबर्ट।"

बारहवां अध्याय।

बालिका विक्टोरिया जवानीमें रानी हुई। ऐसी वैसी रानी नहीं,—इंगलण्डकी रानी हुई। भाग्यका फल कोई भी खण्डन नहीं कर सकता। विक्टोरियाके जन्मकालमें किसने सोचा था, कि यह दुःखिनी राजनन्दिनी इंगलण्डके स्वर्णसिंहासनको एक दिन शोभित करेगी? कालक्रमसे जो होनेवाला था, सो हुआ—लोगोंने केवल आंख फाड़ फाड़के वही देखा।

इंगलण्डके अनेक बड़े बड़े लोगोंने सोच रखा था, कि इस बालिकाके द्वारा—इस नन्हीसी लड़कीके द्वारा इंगलण्डका शासन भली भांति न होगा। अङ्गरेज राज्यकी श्रीवृद्धि नहीं होगी, अङ्गरेज वीरत्वके यशरूपी आमोदसे दशो दिशा पूर्ण नहीं होंगी। परन्तु क्रमशः लोगोंने देखा, समझा, जाना, कि हमको गलत खयाल हुआ था। इंगलण्डेश्वरी कर्त्तव्यपरायण और तेजस्विनी हुई। विक्टोरियाके इस साठ वर्षके राज्यकालमें जितनी सुख सम्पत्ति बढ़ी है, ब्रिटिश जयपताका देश विदेशमें जितनी उड़ी है, उतनी और किसी अङ्गरेज भूपाल वा भूपालिकाके राज्यमें नहीं हुई, कहनेसे अत्युक्ति नहीं होगी। इसीसे कहना पड़ता है, विक्टोरिया परम भाग्यवती लक्ष्मी-स्वरूपिणी स्त्री हैं,—विक्टोरिया मर्त्यलोककी मानवी नहीं, स्वर्गकी देवी हैं। जिनके राज्यमें कभी सूर्य्य अस्त नहीं होता, उन उदयास्त-तक राज्य करनेवालीको ईश्वरीय शक्तिसम्पन्न महादेवी न कहें, तो क्या कहें?

इंगलण्डमें ८ बजे बड़ा तड़का रहता है। विक्टोरिया ८ बजे उठती थीं। सवेरेका काम खतम करके कुछ खाती थीं। इसके पीछे वह राजकीय कागजात देखती थीं, बड़ी बड़ी नत्थियां पढ़ती थीं; जितने कागजोंपर उनका नाम सही होना जरूरी था, उतनोंपर नाम सही करती थीं, और अपना मन्तव्य और आदेश लिखती थीं। विक्टोरियाकी आज्ञानुसार राज्यका सरिश्तेदार सम्पूर्ण कागजात उनके आगे रखता था। कम जरूरी कहके अगर कोई कागज उनके पास नहीं लाया जाता था, तो वह कहती थीं, "ज्यादा जरूरी हो चाहे कम जरूरी हो,—सभी कागज मेरे पास आना चाहिये, पर मैं पढ़ूं, चाहे न पढ़ूं, यह दूसरी बात है।" इस भांति विक्टोरियाके कथनानुसार हर रोज गाड़ीपर लादकर सरकारी कागजात उनके महलमें पहुंचाये जाते थे। किस किस कागजमें क्या क्या लिखा है, एक राजकर्म्मचारी उनको समझा देते थे, इतनेमें उनको जो कागज पढ़नेका शौक और सुभीता होता था, वही कागज वह पढ़ती थीं। यों प्रायः साढ़े दस बज जाते थे।

राजकाज होनेके उपरान्त दस वा साढ़े दस बजे विक्टोरिया खाने जाती थीं। एक सखी तब विक्टोरियाकी माको विक्टोरियाके साथ आहार करनेके लिये बुला लाती थी। जननी बड़ी बुद्धिमती थीं। विक्टोरियाके साथ इस समय वह जो बात चीत करती थीं, उसमें राजनीतिकी जरा भी चर्चा न रहती थी। सरल भावसे बड़े सावधान होकर माता कन्याके साथ केवल खानेकी बात, गानेकी बात, खेलकी बात और सैरकी बात ही कहती थीं।

माताके पास आते ही विक्टोरिया माके साथ खानेको बैठ जाती थीं। अब दरिद्रकी लड़की नहीं,—विक्टोरिया महारानी हैं। भोजन सामग्री बहुत मूल्यवान् और सुस्वादु थी। चर्व्य चोष्य लेह्य पेय सामग्रीकी बातका कहांतक वर्णन करें? आहारके पीछे कुछ देरतक विश्राम होता था। विश्रामके पीछे विक्टोरियाके पास मन्त्री मेलबोन आते हैं। कभी ग्यारह बजे, कभी ठीक दोपहर—यही समय विक्टोरियाके साथ राजमन्त्रीकी मुलाक़ातको निर्दिष्ट था। प्रायः डेढ़ वा दो घण्टे मेलबोर्न विक्टोरियाके पास मौजूद रहकर उनको राजकार्य्य सुनाते समझाते और उपदेश देते हैं। दिनके दो बजे विक्टोरिया सैरके लिये बाहर होती थीं। राजमहलमें जितने स्त्री पुरुष थे, सभी महारानीके साथ टहलने जाते थे। क्योंकि महारानी दल बांधकर टहलना बहुत पसन्द करती थीं। वह घोड़ेपर चढ़कर सैर करनेकी बड़ी पक्षपातिनी थीं। हर रोज बड़ेसे घोड़ेपर चढ़कर सखी सखाओंके साथ महारानी बड़ी द्रुतगतिसे जाती थीं। उनका घोड़ा सरपट वा कदम छोड़के दूसरी चाल चलता न था। इस भांति वायुवेगसे चलती थीं, कि लोग देखकर भौंचक रह जाते थे। इस घुड़दौड़में मन्त्री मेलबोर्न भी घोड़ेपर चढ़कर महारानीकी बाईं ओर जाते थे। अन्यान्य स्त्री पुरुष कोई पीछे, कोई आगे, कोई दाहिने तरफ चलते थे। महारानीकी घुड़दौड़ अपूर्व लीला थी। हर रोज सैकड़ों दर्शक वह घुड़दौड़ देखनेके लिये सड़कपर आकर भीड़ बढ़ाते थे। इस भांति दो घण्टेतक घोड़ेपर दौड़ दाड़कर महारानी राजमहलमें लौट आती थीं। तीसरे पहर

विश्राम करके गाना आरम्भ होता था। सप्ताहमें तीन दिन तीसरे पहरे नाच होता था। पीछे सन्ध्याको भोजन होता था। उत्तम मध्यम भोजनसे पेट भरा जाता था। छोटे छोटे लड़के लड़कियोंके साथ खेलना महारानीको बहुत ही अच्छा लगता था। इसी लिये राज-भवनमें बहुतसे लड़के बाले लाकर रखे जाते थे। सन्ध्याके समय उन्हीं लड़के बालोंको लेकर सखीगणसे वेष्टित होकर महारानी बड़े आनन्दसे पवित्र स्वर्गीय खेल खेलती थीं। रातके १० बजे फिर भोजन होता था। इस भोजनमें बहुतेरे बड़े बड़े आदमी आकर शामिल होते थे। इस भोजनके कुछ आगे ताशका खेल होता था। विक्टो-रियाकी मा किश्ठ ताशके खेलमें बड़ी कामिल थीं। मेलबोर्न भी इस खेलमें शरीक होते थे। रात्रिकालीन भोजनमें मेलबोर्न महारानीकी बाईं तरफ बैठकर भोजन करते थे, और उनकी भांति भांतिकी कहानियां सुनकर सब लोग मोहित होते थे। भोजनकाल और भोजनके अन्त होनेपर मीठे स्वरसे पियानो बजा करता था। मीठी मीठी कानको सुहावनी बातें होती थीं और मीठी मीठी जीभको सुहावनी भोजन-सामग्रियां खाई जाती थीं। स्वर्गमें क्या ऐसा है?

रातके ग्यारह बजे सब अपने अपने घर लौट जाते थे। विक्टो-रिया अपनी न्यारी कोठरीमें सोती थीं। विक्टोरियाकी मा न्यारी कोठरीमें सोती थीं।

मेलबोर्न विक्टोरियाको बहुत ही चाहते थे। कन्याकी भांति विक्टोरियाको देखते थे।

तेरहवां अध्याय।

विक्टोरिया रानी होकर (आज कालकी दरसे) माहवारी साढ़े चार लाख रुपया अपने खर्चके लिये वेतन पाने लगीं। रुपयेसे तङ्ग घरमें रुपयेकी बढ़ती हुई। विक्टोरियाने मासे कहा, "मा, यही तो शुभ दिन आया है। इस समय पिताका ऋण चुका देना क्या हमारे लिये उचित नहीं है?"

मा। बेटी, तुम्हारे मुहसे यह बात सुनकर आपमें कहांतक खुश हुई हूं, सो कह नहीं सकती। मेरे पति अर्थात् तुम्हारे पिता ऋणजालमें जड़ित होकर कितने कष्टमें काल काटते थे, सो तुम नहीं जानती हो, पर मेरे हृदयमें यह बात सदा ही जागती रहती है। तुम अब इंगलण्डकी रानी हो। वह ऋण चुका देना तुम्हें एकमात्र कर्त्तव्य है। विशेष क्या कहूं, वह ऋण मेरे हृदयमें तीरसा खटकता है। मैंने सोच रखा था, कि इस ऋणके चुका देनेकी बात मैं ही तुमसे आगे कहूंगी, पर तुमने आप हीसे यह बात उठाई, इससे मैंने भूतल हीमें स्वर्गसुख पाया।

यह बात कहते कहते, माने गला भरकर विक्टोरियाको बाहोंसे लपेटकर उनका मुंह चूमा और लगातार रोने लगी। पिताकी बात याद आई, पिता कैसी वस्तु थे;—पिताको नहीं देख पाया, यह बात भी हृदयमें उठी। माकी तकलीफकी बात याद आई। विक्टोरिया भी रोने लगीं। रोते रोते कहा, "मा, रोओ मत,—मैं आज ही पिताका ऋण चुका दूंगी।"

माता दूसरे कमरेमें घुस गई। मन्त्री मेलबोर्न आकर विक्टोरियाके पास खड़े हुए। विक्टोरियाने करुण कण्ठसे मन्त्रीसे कहा, "मैं पिताका ऋण चुकाकर पिताको उद्धार करूंगी। इस पवित्र स्वर्गीय कामके विना मेरा प्राण रखना वृथा है।"

मेलबोर्न इस युवती महारानीके करुणकण्ठका कथन सुनकर रह न सके, उनकी आंखमें जल आ गया। उन्होंने जवाब दिया,— "तथास्तु। शीघ्र ही पिताका ऋण चुका दिया जावेगा।" जिन ऋण देनेवालोंने पिताके साथ सलूक किया था, विक्टोरियाने ऋण चुकाकर भी उन्हें कीमती खिलतें दी। महारानीके अच्छे काम इंगलण्डके प्रजावर्ग धन्यवाद करने लगे।

चौदहवां अध्याय।

एक अङ्गरेज ऐतिहासिकने लिखा है, "विक्टोरिया अङ्गरेजोंकी भाग्यलक्ष्मी हैं। आगे इंगलण्डमें रेलगाड़ी नहीं थीं, धूएंके जहाज न थे; विक्टोरियाके राज्यके आरम्भमें रेलवे बनी और कलके जहाज बने। इसके थोड़े दिन पीछे तारके जरीये खबर पानेकी परीक्षा हुई। तब बाजारमें दियासलाई चली ही चली थी। हरेकका दाम चार पैसा था। लोग दियासलाई शौकके लिये, घरमें रखनेके लिये लेते थे, जलानेके लिये नहीं। आजकल इंगलैण्डमें जैसा वाणिज्य फैला है, विक्टोरियाके रानी होनेके आगे चार आना

वाणिज्य भी नहीं फैला था। अब इंगलण्डमें जसे कलकारखाने हैं, विक्टोरियाके रानी होनेके आगे इसके दशमांशका भी एकांश न था। महारानीके राज्यके आगे चारों ओर बलवा गदरकी आग जलती थी; अकालके मारे किसान लोग हाय हाय करते थे और अन्नकष्टके मारे, चीज वस्तुकी महंगीके मारे सौदागर लोगों और प्रजाओंका सर्व्वस्व शेष होनेका डौल लग गया था। पर विक्टोरियाके सिंहासन पानेके कई महीने पीछे ही सुन्दर वर्षा हुई, अन्न पैदा हुआ, अन्नका कष्ट घट गया, सौदागर लोग हंसने लगे। इन्हींके राज्यमें अङ्गरेज समग्र भ[illegible]के सर्व्वमय कर्त्ता हुए। मरहटोंकी शक्ति घट गई; पञ्जाबकी सिखसेना युद्धमें हार गई, दिल्लीके शेष बादशाह कैद करके ब्रह्मदेशमें पहुंचाये गये, लखनऊके नवाब कलकत्तेके मोचीखोलेमें ठहराये गये और टीपू सुलतानके वंशधर बङ्गालवासी कर दिये गये। अमेरिका, अफ्रीका, अष्ट्रेलियामें अङ्गरेजोंका प्रभुत्व बढ़ा। ज्यादा क्या कहें, क्रामिया महायुद्धमें रूसके साथ युद्ध कर अङ्गरेज दिग्विजयी कहलाने लगे। धन्य रानी विक्टोरिया! धन्य तुम्हारी दैवशक्ति! और धन्य तुम्हारी महामहिमा!

विक्टोरिया कदकी छोटी थी। वह पांच फुट दो इञ्च लम्बी थी। छोटे कदकी स्त्री इंगलण्डमें कभी सुन्दरी नहीं कहलाती। विक्टोरियाको देहतत्त्व जाननेवालों कभी सुन्दरी नहीं कहा। पर उनके मुखमण्डलसे एक ऐसी ज्योति बाहर होती थी, जिसे देखकर ही लोग मोहित हो जाते थे, और लोगोंकी इच्छा होती थी, कि उनकी पूजा करें, 'भक्ति' करें। जवानीमें उनकी आंखकी देखन

तेज परन्तु मधुर थी। उनकी तेज दृष्टि लोगोंके मनसे भय और भक्ति दोनोंको खींच लेती थी। उनके शरीरकी गठन गोलमाल नवीन सांचेकी ढली थी। ब्रह्माने विक्टोरियाको ऐसे ही भावसे गढ़ा था, कि चालीस वा पैंतालीस वर्षकी उमरपर भी विक्टोरिया युवतीकी भांति दिखाई देती थीं। पर राजभोगमें रहकर धीरे धीरे कुछ मोटी हो जानेसे उनके चेहरेकी वह बहार कुछ घट गई थी। कोई कोई जीवनचरित लेखक कह गये हैं, "महारानी सुन्दरी न होनेपर भी सुन्दरी थीं। जवानीमें महारानीके चेहरेकी बहार जो देखता था, प्रायः वही मोहित हो जाता था। विक्टोरियाकी गठन चाहे जैसी हो, पर वह लावण्य देवीको भी दुर्लभ था। उस झलमलाते हुए चकचके रङ्गके आगे मानो सभी सिर झुकाते थे। उनके कण्ठकी ध्वनि बड़ी मीठी थी। पार्लिमेण्टमें जब वह वक्तृता करती थीं, तो सभ्य लोग तसवीरकी भांति रहकर वह स्वर्गीय कण्ठध्वनि सुनते थे। उत्तम वीणाका स्वर अच्छा है, वा महारानीका स्वर अच्छा है, सुनते हैं, इस बातके ऊपर कई बार लड़ाई झगड़ा हो जाता था। बात यह है, कि उन दिनों "युरोपके क्या स्त्री क्या पुरुष— ऐसा मधुर कण्ठ और किसीका न था,—" यह बात बहुत लोगोंने मान ली थी।

विक्टोरिया गुणवती थीं। एक तो स्त्री, उसपर युवती और तिसपर भी अविवाहिता। सो संसारमें अनाथिनी अबला होकर विक्टोरिया राजकार्य्यमें काठपुतलीकी न्याई होंगी, इसमें विचित्रता क्या है? कलकी तसवीरकी भांति वह नाचेंगी, गावेंगी, बोलेंगी,

इसमें ताज्जुब क्या है? विक्टोरिया पराई बुद्धिसे चलेंगी, पराई बातसे उठेंगी, पराई बातसे बैठेंगी, पराई बातसे पागल होंगी— विक्टोरियाके सिंहासन पानेके बाद अनेक लोगोंने यही बात ठीक मानं ली थी। पर दो एक महीने हीमें लोगोंका वह भ्रम चला गया। उन्होंने शीघ्र ही देख दिया, इस लड़कीमें ताप है, तेज है, आग है। समझा, कि यह लड़की सामान्य नहीं है। मन्त्री मेल-बोर्नने एक दिन अपने मित्रको लिखा था, "मैं दस राजाको एक कालमें सहजं ही चला सकता हूं, पर इस एक रानीको चलाना मेरे लिये कठिन काम हो गया है।" इसीसे विक्टोरियाका व्यक्तित्व, शक्ति, मर्यादा, सामर्थ्य जानी जा सकती है। स्त्रीस्वभावसुलभ कोमल हृदयके साथ इंग्लण्डेश्वरीका गौरवमय हृदय एकत्र मिल गया था।

एक दिन महामन्त्री मेलबोर्नने महारानीके पास आकर कहा, "हे इंग्लण्डेश्वरि! मैं किसी भारी कामके लिये आपके पास आया हूं, आप इस कागजके टुकड़ेपर अभी दस्तखत कीजिये।"

रानीने जवाब दिया,—"मैं उस कागजको सूक्ष्मरूपसे बिना पढ़े, बिना देखे, बिना समझे क्योंकर सही कर दूं?"

मन्त्री साहबने करुण कण्ठसे कहा, "अभी दस्तखत कीजिये, अभी सही करनेसे बड़ा सुभीता होगा।"

महारानीने गम्भीर भावसे जवाब दिया, "जिस कागजके विषयमें मुझे पूरा ज्ञान नहीं हुआ, उसपर मेरा सही करना उचित है, कि नहीं; यही मेरे लिये इस समय बड़ा भारी सवाल है।"

मन्त्रीने हाथ जोड़के कहा, "सुभीता होगा, यह जानकर ही अभी सही करनेकी जल्दी करता हूं।"

महारानीने धीर अथच गम्भीर स्वभावसे उत्तर दिया; "प्रभु! कौन बात भली है, कौन बात बुरी है; इस विषयका विचार करना मैं सीखी हूं; आप जो सुभीतेकी बात कहते हैं, इस स्थलमें उस सुभीतेकी बात मैं सुनना भी नहीं चाहती, समझना भी नहीं चाहती।"

मन्त्री साहब चुप रह गये। विक्टोरियाने अपनी इच्छानुसार बहुत देरतक उस दलीलको पढ़ा। शेषमें प्रसन्न होकर कागजपर सही की और उसे वजीर साहबको दे दिया।

डियुक अव वेलिङ्टन वाटरलू-विजयी थे। वह उन दिनों अङ्गरेज सेनाके सर्व्वप्रधान कर्त्ता थे। कोई एक सैनिक पुरुष अपने दलसे ऊपर ऊपर तीन वार भागा था। शेष वारके विचारमें वेलिङ्टनकी आज्ञासे उस सिपाहीको फांसीका हुक्म हुआ। प्रधान सेनापति डियुक अव वेलिङ्टन इस फांसीकी आज्ञाका पत्र लेकर इंगलण्डेश्वरीके दस्तखत करानेके निमित्त मौजूद हुए। प्राणदण्डका यह भयङ्कर समाचार पढ़कर, महारानीके कोमल प्राण कांप उठे। 'भागनेके अपराधमें प्राणदण्ड होगा!' यह बात कहते कहते महारानीकी आंखोंसे जलधारा बहने लगी। सजलनयन विक्टोरियाने वेलिङ्टनके मुखकी ओर देखकर रोते रोते पूछा, "अपने पक्षमें कहनेके लिये क्या इस पुरुषको कोई बात नहीं है?" कठिनहृदय लौहमय डियुकने हाथ जोड़कर पूछा, "नहीं महारानी,—कुछ भी नहीं। यह पुरुष कई वार—तीन वार भाग चुका है।"

महारानी। आप कृपा करके और एक बार सोच देखें। सैनिक पुरुषका कुछ भी गुण था या नहीं?"

ड्यूक। यह पुरुष बड़ा दुराचार और बदमाश सिपाही है। पर किसी किसीने इसके मुकद्दमेके समय यह बात कही थी, कि सिपाही व्यक्तिगत चालचलनका अच्छा और इसका स्वभाव भला है। गार्हस्थ्य जीवनमें यह सिपाही खूब भला मानस होकर काम कर सकता है।

महारानी। धन्यवाद—धन्यवाद—आपको अनेक धन्यवाद।

यह बात कहकर अङ्गरेज-अधीश्वरीने उस सुन्दर तानलयभरे सुन्दर कण्ठसे गम्भीर झङ्कार दी और भयङ्कर पार्चमेण्ट कागजके ऊपर, "मैंने क्षमा किया।" यह बात लिखकर अपना सुन्दर नाम सुन्दर अक्षरोंमें तेजपूर्वक लिख दिया।

सिपाही छूट गया।

विक्टोरिया रविवारको किसी भांतिका राजकार्य्य नहीं करती थीं। भगवान्‌की उपासना हीमें दिन काटती थीं। एक दिन मेलबोर्नने शनिवारकी रातको लगभग ग्यारह बजे आकर कहा, "आज रात बहुत हो गई है—वक्त है नहीं; कल इतवारको वे कागजात विशेषरूपसे पढ़कर आपको दस्तखत कर देना होगा। काम बड़ा जरूरी है।"

महारानीने जवाब दिया, मन्त्री जी! कहते क्या हैं? रविवारके सवेरे क्या हमें विषय कर्म्म करना पड़ेगा?"

मन्त्री। पर राजकार्य्य बिना किये भी नहीं बनता। हे इंगलैण्डेश्वरि! मुझे माफ कीजिये,—बड़ी जरूरतमें पड़कर ही आपसे यह बात कहता हूं।

महारानी। मैं जानती हूं, राजकार्य साधना सर्वाग्र है; अच्छा, सो ही होगा। कल सवेरे गिरजेमें जाकर, ईश्वरके भजन सुन आकर आपके आगे ही कागजात पढ़ूंगी और दस्तखत कर दूं । ।

सवेरा हुआ। रविवारको महारानी सखियों वेष्टित होकर गिरजाघर गईं। हुक्मके अनुसार मन्त्री मेलबोर्न भी गिरजाघरमें मौजूद हुए। पण्डित पादड़ी जीने मधुर स्वरसे वक्तृता दी, "हे भाइयो। सब लोग रविवार ईश्वरके भजन और नामसे काटना,— अन्य विषय कर्म्म न करना। अगर सात दिनमें एक बार भी प्रभुका नाम न लोगे, तो फिर तुम्हारी रक्षा कौन है? जीनेका प्रयोजन ही क्या है? छः दिन पाप करते हो, एक दिन क्या पुण्य न करोगे? छः रोज विषय-विषसे जर्ज्जरित हो, इक दिन क्या अमृत न पियोगे?"

पादड़ी साहबकी ऐसी अनेक उपदेशोंसे भरी बहुकालव्यापी वक्तृत्व और गान हुआ। शेषमें उन्होंने खोलकर सबसे कह दिया,— "रविवारको जो मनुष्य विषयकर्म्ममें लिप्त रहता है, वह महापातक सञ्चय करता है। उसका मुख नरकतुल्य है। उस मुहकी ओर देखनेमें भी पाप है।"

सभा टूटी। महारानीके साथ सभी राजभवनमें आये। यह वक्तृता सुनकर कौशली बुद्धिमान् मन्त्रीकी आंखें स्थिर रह गईं। घरमे आकर नीरव निश्चल मन्त्रीसे महारानीने यह बात पूछी, "मन्त्री जी! आजका व्याख्यान कैसा लगा?"

मन्त्रीने कहा,—"खूब अच्छा लगा।"

महारानी हंसने लगी। हंसते हंसते कहा, "तो अब कौनके

चाहती हूं। मैंने पादड़ी साहबको इस भांति ऐसा उपदेश देनेकी बात कह ही कह रखी थी। अब उमेद है, पादड़ीकी वक्तृता सुनके हम सभी सन्तुष्ट और लाभवान् हुए होंगे।"

मन्त्री मेलवोर्नने रविवारके दिन राजकीय कागजात पढ़नेकी बात फिर न कही। धर्मके उपदेश, धर्मकी बातचीत, धर्मके गीत, धर्मके खेल और धर्मशास्त्रके पढ़नेमें ही देखते देखते रविवारका दिन कट गया। रातके ग्यारह बजे महारानी जब सोने चलीं, तब मेलवोर्नसे कहा, "कल बहुत सवेरे ही आपके कागजात मैं पढ़ूंगी। यदि कहें, कि सात बजे सुभीता न होगा, तो मैं छः बजे ही पढ़नेका लगा लगा दूं।" मेलवोर्नने जवाब दिया, "नहीं नहीं, रात रहते इतने सवेरे पढ़नेकी जरूरत नहीं नौ बजे सरकारी कागजात पढ़ना काफी है।

तभी मेलवोर्नने अपने प्यारे मित्रको लिखा था, "दस राजाओंका चलाना मेरे लिये सहज है, पर एक रानीको लेकर मैं अस्थिर हो गया हूं।"

विक्टोरिया अपनी सखियोंको शासनसे रखती थीं। खूब प्यार भी करती थीं। उनका हुक्म बड़ा कड़ा था। अगर कोई सखी आलस्यके मारे उनका हुक्म माननेमें जरा भी इधर उधर करती थी, तो महारानी सखीको मीठी कड़ी धमकी देती थीं। बंधे हुए समयपर काम न होनेसे महारानी चिढ़ उठती थीं। एक मिनिट भी इधर उधर होनेकी बरदाश्त न थी। कोई एक उच्च कुलकी स्त्री नवीना विक्टोरियाकी सखीपदपर नियत हुई थी। पर आलस्यके मारे वो चाहे

ग्रौर किसी कारणसे हो, वह बंधे समयपर महारानीके पास पहुंच न सकती थीं। इसी भांति एक दिन गया। दूसरे दिन महारानी उसे कहा, "देखो, मैंने तुम्हारे लिये पांच मिनिट इन्तजारी की। समयका मूल्य कितना है, सो जानती हो?" उसके पीछे सर्ख एक दिन फिर ठीक समयपर न आई। इधर महारानी बड़ी हाथमें लिये उसके लिये बैठी हुई हैं। उस कुलीन स्त्रीने महारानीके हाथमें घड़ी देखकर जाना, कि ठीक समयपर न पहुंचने से महारानी नाराज हैं। उसने बड़े सङ्कुचित होकर आहिस्ते कहा, "मैं बड़ी मन्दभागिनी हूं। देखती हूं, कि आप इन्तजारी कर रही हैं।"

महारानीने गम्भीर स्वरसे कहा,—"हां. दस मिनिटसे ज्यादा हुआ, मैं तुम्हारी इन्तजारी कर रही हूं। तुमसे मेरा यह विशेष अनुरोध है, कि फिर कभी देर न करना। यह मेरा शेष हुक्म है। देखो, जिससे फिर तुमको यह बात न कहना पड़े।

कुलीना डर गई, रोने लगी। उसके शरीरका कपड़ा खसक पड़ा। कुलीनवाला शाल भली भांति नहीं ओढ़ सकती यह देखकर, महारानी अपनी कुरसीपरसे उठ बैठी और उसको शाल पहनाके अति मधुर भाषासे कहा, "कुलीनकन्ये, डर क्या है। मेरी यह प्रार्थना है, कि जिससे हर समय हम लोग कर्तव्य करनेमें सक्षम न रहें। यत्न करनेसे तुम भी इस काममें शीघ्र ही तत्पर होगी। अब इस कुरसी-पर बैठ जाओ।"

इस भांति बाला महारानीका चरित्र फूटने लगा। महारानीको तेजस्विनी और चरित्रवती इसकी जानकर अनेक लोग कानाफूसी

करने लगे, "यही इंग्लण्डेश्वरी होनेकी योग्य पोती है, हम लोगोंने उलटा समझा था। वह काठपुतली नहीं है।

पन्द्रहवां अध्याय।

घरमें जवान' विनाव्याही कन्या रहनेसे अनेकोंकी दृष्टि उसपर पड़ती है। विशेष करके उस युवतीके मुखकी छवि अगर लावण्यमयी हो, नयनोंकी जोड़ी नीलकमलकी भांति हो, नाक बांसरीकी भांति हो, फिर तो सोनेमे सुहागा होता है। और इन सब मसालोंके ऊपर वह युवती अगर अतुल सम्पत्तिकी अधीश्वरी हों, विशालराज्यकी विधाती हों, कोमलहृदय हो और न्यायदानशील हों, फिर तो कहना ही नहीं है। विक्टोरिया लावण्यवती युवती, इंग्लण्डकी रानी, राज-कार्य्यमें निपुण, नृत्य गीतमें चतुर, मधुरालापमें प्रवीण हैं। विक्टोरिया शिष्टशीला,—मधुर हंसनेवाली, मरालगामिनी, शरच्चन्द्रमुखी है। क्यों विक्टोरियाने, जवान' विक्टोरियाने राजराजेश्वरी होकर भी आजतक विवाह क्यों नहीं किया। विवाहका कोई उद्योगतक क्यों नहीं करती,—युरोपके अनेक जवान यही बात करने लगे। वह स्वर्गकी सती किसके गलेमें वरमाला देंगी,—यही कई एक पागल जवान चिन्ता करने लगे। नन्दनवनकी वह बेलकी किसके गलेका हार बनेगी,' यही सोचकर कोई कोई पागल हुआ। वह पद्मिनी किस मधुकरकी इन्तजारी करती हुई कुमारीजीवन काट रही हैं, इसी विषयपर युरोपके शौकीन इज्जतदार जवान बड़ा आन्दोलन करने लगे। किसीने

कहा, "विक्टोरिया स्त्रीरत्न हैं। वह विवाहके लिये संसारके सुख-स्वच्छन्दके लिये राजा नहीं, राजकुमार नहीं, राजघरानेका पुरुष नहीं चाहती। वह चाहती हैं, केवल पवित्र प्रेम। वह चाहती हैं, गुणवान् स्वधर्म्मपर पुरुष। वह रूपकी भिखारिन नहीं हैं। वह केवल ज्ञान बुद्धियुक्त और सद्भाववाले पुरुषका पाणिग्रहण करना चाहती है।" सचमुच ऐसी ही अनेक बातें सोच सोचकर इंगलण्ड, जर्म्मन, फ्रान्सके अनेक युवक रातमें सोते न थे, पेट भरके खाते न थे और संसारके कामोंमें पूरा पूरा मन न लगाते थे। एक जवानको यह पक्का खयाल हो गया था, कि इंग्लण्डेश्वरी मुझसे विवाह करेंगी ही करेंगी। वह जवान हररोज तीसरे पहर गाड़ीपर महारानीकी प्रमोदवाटिकामें महारानीको देखने और दिखाने जाता था। राजमहलसे लगे हुए उस पाईंबागसे महारानीके आते ही वह पुरुष उनके मुखकी ओर एकटक देखता था। आंखका पलक भी पड़ता था, कि नहीं, इसमें सन्देह है। पहले तो महारानी इस मामलेमें कुछ भी न समझ सकीं। वह अगर अकस्मात् इधर उधर देखते देखते अचानक एकबार युवककी ओर नजर फेंकती थीं, तो जवान सोचता था, महारानी मेरी तरफ देखती हैं। महारानी यदि बिना कुछ जाने जवानके सामनेसे निकल जाती थीं, तो युवक जानता था, कि महारानी मुझसे प्रेमकी बातें करने आई थीं,—परन्तु हाय! स्त्रियोंके लजीले स्वभावके मारे वह बात न कर सकीं। क्रमशः रोग बढ़ने लगा। महारानीकी गाड़ी राजमार्गमें निकलते ही वह जवान भी अपनी गाड़ी उनके पीछे पीछे लिये फिरा करता था। जब महारानीकी गाड़ी धीरे चलती

थी, तब युवककी गाड़ी धीरे चलती थी। जब महारानीकी गाड़ी दौड़ती थी, तब जवानकी गाड़ी भी दौड़ती थी। इंग्लण्डमें अगर उन्मादभञ्जन रस वा महानारायण तैल होता, तो बावलेको शायद इतना कष्ट न उठाना पड़ता।

देखते देखते स्काटलण्डसे एक नवीन युवा इंग्लण्डके राज भवनमें आकर मौजूद हुआ। कहा, "मैं ही महारानीका एकमात्र योग्य वर हूं। कुल, शील, मानमें मैं स्काटलण्डके बीच अद्वितीय पुरुष हूं। मेरे स्वभावकी परीक्षा लीजिये, मेरी बराबर सुशील पुरुष पृथ्वीमें और नहीं पावेंगे। मेरी उमर भी थोड़ी है, रूप भी बहुत बुरा नहीं है।" यह बात सुनकर राजमहलमें महाकौतुकका कलरव मच गया। महारानी हंसने लगीं। राजचिकित्सकने आकर जवानकी नाड़ी देखी। जवानके साथ कई तरहकी बातें करके उसकी परीक्षा ली। कहा, "घोर पागलपन तो मालूम होता है।" जवान पागलखानेमें भेजा गया।

और एक रोज महारानी गिरजेमें घुसकर पुरोहितके मुंहसे धर्म्मकी व्याख्या सुनने लगीं। महारानी जिस आसनपर बैठी थीं, ठीक उसके आगेके आसनपर एक जवान आकर और बैठकर सिर झुकाये हुए महारानीको नमस्कार करने लगा। और महारानीके उद्देश्यसे अपना ही दाहिना हाथ बारम्बार चूमने लगा। यह उद्भट मामला देखकर गिरजाघरमें बड़ा शोर गुल होने लगा। यह विकट शोर गुल देखकर महारानी भी कुछ घबराईं। तब महारानीके पहरे-वालोंने उस जवानको पकड़ा, बांधा और दूर कर दिया। जवानने

कहा, "मुझे पकड़ते क्यों हो, बांधते क्यों हो, और लिये भी क्यों जाते हो? मैं महारानीका प्रेमभिखारी होकर बड़ी दूरसे दौड़ा आया हूं। मेरा मुंह सूख गया है, प्याससे छाती फटी जाती है, मुझे पानी पिलाओ।" तब प्यासे जवानको गरदनिया देकर ठण्डा किया और पहरेवालोंने पुलिसके सुपुर्द कर दिया।

इस समय और भी बहुतेरे मनुष्योंने महारानीको बहुतसे प्रेमपत्र लिखे थे। "हा प्राणेश्वरी! मैं तुम्हारे सिवा और किसीको नहीं जानता। तुम्हीं मेरी सर्व्वस्व हो। मेरा हाथ गहके तुम सुखसे काल काटोगी। मैं राजकुमार नहीं हूं। पर अगर गुण चाहती हो, सुख चाहती हो, सुशील चाहती हो,—तो मेरे ही गलेमें वरमाला पहना दो।

कई एक प्रेमपत्रोंका मर्म ऐसा ही था। दो तीन प्रेमपाती उन दिनोंके अखबारोंमें भी छपी थीं।

१८३८ ई०की बहारका मौसम है। मनोहर वायु मन्द मन्द बहती है। ठंढके रोगसे पीड़ित इंग्लण्डके नरनारियोंके सुखकमल फिर फूल उठे हैं। अनूढ़ा युवती महारानी बादशाही गाड़ीपर चढ़कर सड़कपर हवा खाने निकली हैं। लोगोंकी बड़ी भीड़ है। एकटक नेत्रोंसे तमाशाई लोग सखीगणवेष्ठित महारानीका वह असीम रूपलावण्य, वह नवमल्लिकापुष्पपत्रवत् शरीर दर्शन कर रहे हैं। एक हृष्टपुष्ट बलिष्ठ युवा शरीरके बलसे भीड़को चीरकर महारानीकी गाड़ीके पास आखड़ा हुआ और बड़े जोरसे एक टुकड़ा प्रेमपत्र गाड़ीके भीतर फेंक दिया। उस "पवित्र" प्रणयपत्रके गिरते समय

महारानीके मुहपर विशेष आघात लगा था। "क्या हुआ, क्या हुआ"—"महारानीको किसने मारा, किसने मारा"—पहरेवालोंने तब ऐसी एक महाचीत्कार उठा दी। पर दोषी व्यक्तिको कोई ढूंढ़ न ला सका। क्रमशः गोलमाल बढ़ने लगा। महारानी आघातित होकर भी धैर्य्यच्युत न हुई। उन्होंने कोचमानको गाड़ी थाम-नेका हुक्म दिया। गाड़ी रुकी। महारानीने तब अङ्गुलिसे उस दुष्ट युवकको दिखा दिया; कहा, "इसी मनुष्यने चिट्ठी फेंकी है।" बाघ जैसे करिशावकको पकड़ लेता है, पहरेवालोंने वैसेही तुरन्त उस दुष्ट पुरुषको पकड़ लिया। करुणामयी महारानी बोली,उसे मारना मत,—केवल पकड़े रहो। देखें, चिट्ठीमें क्या लिखा है। एक सखीने चिट्ठी पढ़कर देखा, वही इश्ककी बात—महारानीको पत्नी बनाकर रखनेकी बात है। फिर तो हंसीकी तरङ्ग उभर पड़ी। राजवैद्योंने इस जवानको भी पागल बताया। सो पागलखाना ही उसका भी घर बना।

और एक जवान एक दिन महारानीके शय्याघरमें घुस गया था। वह पुरुष तुरन्त ही पकड़ा गया। अदालतमें उसका मुकद्दमा हुआ और जजके हुक्मसे उसे सजा मिली।

एक दिन महारानी हाइडपार्कके मैदानमें सैर करती थीं। सखि-योंके साथ नाना भांतिका रहस्यालाप करती थीं; ऐसे समयमें एक जवानने महारानीके पास जानेकी चेष्टा की। "सब हट जाओ, दूर हो जाओ, मैं महारानीकी बांई ओर जाकर खड़ा हूंगा, मैं महा-रानीसे विवाह करूंगा।" यह पुरुष भी पहरेवालोंद्वारा पकड़ा गया और विचारानुसार दण्डित हुआ।

जवानीके आरम्भमें और विवाहबन्धनके आगे महारानी इस तरह कई वार चिढ़ाई गईं थीं।

"विवाह विना हुए महारानी अब अच्छी नहीं लगती,—" तब लोग ऐसी ही कानाफूसी करने लगे। मन्त्री लोग महारानीके विवाहके लिये चिन्तित हुए। वर कौन होगा? मन्त्रियोंने युरोपके पांच राजकुमार चुने। इनमें जो पसन्द होगा, महारानी उसे ही विवाह करेंगी। विक्टोरियाने कहा, "इन पांचोंमें मेरा पति एक भी नहीं। मेरा वर तो एक प्रकारसे निर्दिष्ट ही है। मैं अब महारानी हूं, बालिग हूं और स्वाधीन हूं;—वर इच्छानुसार पसन्द कर लेनेमें अब मुझे अधिकार है। मेरे स्वामी शायद मेरे ममेरे भाई प्रिन्स अलवर्ट होंगे। भगवानकी इच्छासे शायद वह मेरे पति हैं और मैं उनकी पत्नी। लेकिन हालमें मैं विवाह करना नहीं चाहती। मैंने स्थिर कर लिया है, कि और दो वर्ष पीछे मैं विवाह करूंगी।"

सोलहवां अध्याय।

"प्यारे अलवर्टको ही ब्याहूंगी, परन्तु दो वर्ष पीछे।" महारानीको यह बात कहनेका प्रयोजन था। जो महारानीके स्वामी होंगे, उनके केवल घने प्रेमी होनेसे काम न चलेगा, केवल पूर्णचन्द्र-विकाशकी भांति सुन्दररूपकी छटा फैलाते फिरनेसे काम न बनेगा। महारानीके प्रेमाधिकारी स्वामी होनेसे बड़ी जिम्मेदारीका बोझ

सिरपर धरना होगा। पक्के राजनीतिज्ञकी भांति दस चाल ढाल सोचकर काम करना होगा। पति घरका स्वामी है; महारानीका पति विशाल विराट राजसंसारका ईश्वर होकर रहेगा। हजारों मनुष्योंके ऊपर नित्य प्रभुत्व करना होगा। अङ्गरेज लाट-घरानोंके लड़के लड़कियोंसे आठ पहर व्यवहार करना होगा। बीस वर्षकी उमरके नवीन युवक द्वारा क्या ये सब कठिन काम सुन्दररूपसे सम्पादित होना सम्भव हैं? अलबर्ट कच्चा छोकड़ा है,—अपेक्षाकृत दरिद्रका लड़का है, एकान्त कालिजमें केवल लिखना पढ़ना ही सीखा है, केवल देशदेशान्तरकी सैर ही कर चुका है और नये जीवनके नये रसप्रवाहमें उछल डूब कर रहा है,—ऐसा नवयुवक क्या इंगलैण्डपत्नीका स्वामी होकर सब कामोंके चलानेका भार अपने कन्धोंपर ले सकता है? महारानीको यही सन्देह हुआ। रूपकी मतवाली युवती होकर भी महारानी कभी कर्त्तव्यको न भूलती थीं, विचार विवेचना करनेसे लाज नहीं आती थीं।

और एक बात है;—महारानी राज्येश्वरी, प्रजाके दुःखसुखकी विधात्री, इच्छामयी और शक्तिमयी थीं। कौन कुलीन सुशिक्षित प्रभावपदवीवाच्य पुरुष आपसे आप ऐसी युवती रानीके आगे प्रेमकी बात कह सकता है? अलबर्ट इंगलैण्डकी प्रजा कहलाना जबतक मञ्जूर न करेगा, तबतक अङ्गरेजी आईनके अनुसार विवाह होना सहज नहीं। क्योंकि अलबर्ट तो एक बार सम्पूर्ण रूपमें स्वाधीन और स्वतन्त्र शासनकर्त्ता नहीं है। वह मझले भाई हैं,—किसी भी गिनतीमें नहीं है। सो इंगलैण्डकी प्रजामें भर्ती होकर उन्हें महा-

रानीका विवाह करना होगा। हम पूछते हैं, प्रजाका पुरुष किस साहससे छाती मजबूत करके राज्येश्वरीसे कह सकता है, "प्रिये! तुम्हें मैं बहुत चाहता हूं, मेरे गोदकी लक्ष्मी होकर मुझे कृतार्थ करो?"

महारानीको स्वयं ही उस विषयका प्रस्ताव करना होगा। पर महारानी होनेसे भी उनका स्त्रीत्व तो न जाता रहा था! युवती जवानोंकी आराध्य देवी है; जवान ही खुशामदकी बातोंसे स्त्रीपर अधिकार करेगा। युवक ही प्रीतिकी बातें कहकर, शर्मसे झुकाये हुए मुंहवाली कामिनीके मुखचन्द्रको प्रेमोल्लासविकशित करके कोकिल-झङ्कारकी बातें कहलावेगा। इष्टदेवी क्या पुजारीको पूजाके लिये अनुरोध कर सकती है? पुजारी ही पूजा करेगा, स्तोत्र पढ़ेगा, श्रीचरणमें प्रेमका अर्घ्य देगा। इस विषयमें सभी उलटा है, शास्त्र उलटा, पुराण उलटा है। युवती होनेसे क्या हो, महारानी तो शासन-कर्त्ता राज्येश्वरी हैं। पहले उनके मुंहसे बात कहलाना पड़ेगी, प्यारे अलबर्टको स्वयं ही कहना पड़ेगा, "भाई, तुम्हें मैं प्यार करता हूं—तुम हमारे स्वामी हो—क्या मेरे हृदयेश्वर बनोगे?"

स्त्रीके लज्जाशील स्वभावके कारण विक्टोरिया अलबर्टके आगे यह बात उठा नहीं सकती थी। हृदय कहना चाहता था, पर न जाने मुंह कौन बन्द कर लेता था। इधर नये जवान अलबर्ट भी अधिक इन्तजारी नहीं कर सकते। जब उन्होंने सुना, कि महारानी विक्टो-रिया और दो वर्ष विवाह किये रहना चाहती हैं, तब उन्होंने सोचा, "कहीं धोखेबाजी न हो? मुझे गगनमण्डलमें प्यासे पपीहेकी भांति

पनाहे रखकर नवीन मेघ क्या जलविन्दु देनेमें कृपणता करेगा? मैं क्या दोनो ओरसे किधरका भी न रहूंगा?" सचमुच अलवर्टकी वह आशङ्का अमूलक न थी। एक तो नया जवान हठमें इस्तेफा नहीं कर सकता;—जो हृदयेश्वरी होगी, सो पूर्ण यौवनका भार लेकर विद्युच्छटाकी भांति दूर बैठे ही दो वर्षतक देखेगी और सुनेगी—क्या यह सहा जावेगा? उसके ऊपर अलवर्ट दरिद्र थे, उन्हें निजका रोजगार निज करना पड़ेगा। अगर महारानी किसी कारणसे दो वर्ष पीछे उन्हें अनङ्गीकार करें, तब क्या उपाय है? उमर ज्यादा हो जानेसे नया व्यवसाय सीखना कठिन होगा, अवस्थाके योग्य उपार्ज्जन करनेकी सामर्थ्यमें कमी होगी। शेषमें क्या एक रानीके मोहसे जीवनको ऊपर मरुभूमिके तुल्य कर डालना होगा?—यह सोचकर अलवर्टने जिद करके कहा, कि १८७८ ई० की शरत् ऋतुके बीतनेपर भी यदि महारानी मुझसे विवाह करनेसे राजी न होंगी, तो मैं वहिन विक्टोरियासे प्रेमके सभी सम्बन्ध तोड़ दूंगा। स्वाधीन भावसे अन्यत्र अन्य प्रकारसे चेष्टा करूंगा।

अलवर्टकी यह प्रतिज्ञा सुनकर रानी घबराईं। जिसको सचमुच प्यार करती हूं, जिसके लिये सचमुच दिन रात प्राणमें क्या क्या उठता है, जिसकी सुकुमार कान्ति देखकर नयन और मन पागल हो जाते हैं, एकबार मुंह खोलकर बात करनेपर जो पैरोंमें लोट जावेगा, उसे पानेके लिये क्या लज्जाके बन्धनमें देर करना बन पड़ेगा? प्रेमकी कट-नसे लज्जाका बालूमय पुल टूट गया। १४ वीं अक्टोबरको महा-रानीने लार्ड मेलबोर्नसे कहा, कि मैं भी अब देर न करूंगी। शीघ्र

ही अलवर्टको मनकी बात जताकर और उनकी सम्मति पाकर पार्लि-मेराट सन्निसभामें यह बात प्रकट कीजिये।

सत्तहवां अध्याय।

प्रेमिक प्रेमिकामें प्रीतिकी बातें होनेके पहले एक दिन विण्डसर कासल महलमें बौल-नाच हुआ। उस नाचके दिन महारानीने अलवर्टको फूलोंका एक छोटा तोड़ा दिया। अलवर्ट उस दिन पुरुश्याके सैनिक लिवासको पहने थे। गलेतक बटनोंसे जड़ा हुआ कोट था, ऐसा स्थान नहीं था, जहां तोड़ा लगा लें! किन्तु रसीले आशिकने रसके उद्वेगमें एक नया उपाय ईजाद किया—जेबसे छूरी निकालकर ठीक हृदयके ऊपर कोटका कपड़ा काट डाला। और फूलोंका तोड़ा वहीं लगा लिया।

इस घटनाके पीछे १५ वीं अक्टोबरको अलवर्ट जब शिकार करके लौट रहे थे, तब एक अर्दली आकर उनको कह गया, कि महारानीका हुक्म है, आप शीघ्र ही उनसे मुलाकात कीजे। अलवर्ट उसी पोशाकमें जल्दीसे महारानीके पास हाजिर हुए। उस गुप्त गृहमें दोनो जनोंमें क्या बात हुई, सो जाहिर नहीं हुआ। परन्तु इस घटनाके पीछे अलवर्टने अपनी दादीको जो चिट्ठी लिख भेजी थी, उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता है।

"रानीने मुझे अपने घरमें आनेके लिये अकेला बुला भेजा था। मैं गया था। उन्होंनेउद्योगमें मुझे हठके साथ कहा, "तुम अगर

मुझे पत्नी बनानेके लिये चुन लो, तो मैं कृतार्थ हूंगी। मुझसे विवाह करके तुम्हें नुकसान तो बहुत होगा। एक तो मैं तुम्हारे बराबर कामदेवविजयीके योग्य नहीं हूं, तिसके ऊपर राज्येश्वरी होकर ऐसी अवस्थामें पड़ी हूं, कि मुझसे विवाह करके अनेक भांतिसे तुम्हें नुकसान सहना होगा। क्या मञ्जूर करोगे? इस सामान्या कुमारीके लिये क्या इतना नुकसान मञ्जर करोगे? तुम्हारे योग्य होनेके लिये मैं तनमनधनसे चेष्टा करूंगी, तुम्हारा मन हरनेके लिये मैं सदा कोशिश करूंगी—क्या मुझे पत्नीस्वरूपसे वरोगे?" रानीकी यह बात सुनकर मैं पागलसा हो गया; क्या कहा, क्या सुना, कुछ भी याद नहीं। अब हम दोनों सचमुच प्रेमके बन्धनमें बंध गये।"

इस दिन प्रेमकी जिस सुवर्ण-श्रृङ्खलामें ये युवतीयुवक बंध गये, जिस सुखके सागरमें दोनोंने एक साथ गोता मारा, सो इंग्लण्डके कितने सुख आनन्दका हुआ;—यह बात हम अभी नहीं समझ सकेंगे। हमारे पौत्र समझ सकेंगे। इन दोनो जनोंने धर्मका जो वृक्ष जमाया था, उसकी शीतल छायामें कितने अगणित नरनारी सुखमें काल काटते थे। देशके शासन-कर्ता केवल शासन करके ही नहीं रह जाते, उनके व्यवहारसे समाजकी मति गति परिचालित हुआ करती है, उनकी रुचिके साथ समाजकी रुचि बदल जाती है। विक्टोरिया और अलबर्टने धर्मका संस्कार सजकर, सुनीति और सुरुचिकी भित्तिपर राजघराना बैठाकर इंग्लण्डका जो उपकार किया, समाजमें जिस पवित्रताकी निर्मल नदी बहाई, मालूम होता है, इंग्लण्डकी किसी भाग्यवान् सन्तानने इतना दूर और यहांतक नहीं किया। और

किसी कारणसे न हो, केवल इसी एक कारणसे राजदम्पति युरोपके इतिहासमें अमरपदवी पावेंगे।

जो हो, इस भांति मनखुलव्वलके पीछे दोनो जनोमें एक साथ गाना बजाना होता था, हंसीदिल्लगी चलती थी। पीछे रीत्यनुसार अलबर्ट और उनके छोटे भाई अरनेष्ट एक महीनेके लिये लण्डन छोड़कर जर्मनीमें गये। २३ वीं अक्टोबरको बकिङ्गम राजमहालयमें एक मन्त्रीसमाज बठा ; महारानीने उपस्थित होकर घोषणापत्र पढ़ा। अपने विवाहका घोषणापत्र बीस वर्षकी युवती दादेके समयके बूढ़े बूढ़े मन्त्रियोंके सामने पढ़नेमें लजाई। घोषणापत्रमें उन्होंने कहा था, कि अलबर्टके साथ मेरा विवाह होनेसे मेरे पक्षमें सुख होगा, सो राज्यके पक्षमें भी सुख ही होगा।

इस घोषणाके समय महारानीने लण्डनकी पतित दुःखित स्त्रियोंकी सहायताके लिये पांच सौ रुपयेसे अधिक दान दिया।

कण्टरबरीके आर्कबिशप एक दिन विवाह-पद्धति ठीक करनेके लिये महारानीके पास आये। उन्होंने महारानीसे कहा, हमारी विवाह-पद्धतिमें एक ठौर लिखा है, कि पत्नीको पतिकी अनुचरी और और आज्ञावही होकर रहना होगा। परन्तु अलबर्टने इन दिनों महारानीके हुजूरमें घुटनोंके बल बैठकर अङ्गीकार किया है, कि मैं महारानीकी अधीन प्रजा हूं। प्रजाको विवाह करनेमें क्या आपको यह कहना उचित है, कि "मैं तुम्हारी आज्ञानुवर्त्तिनी होकर रहूंगी?" हमारी महारानीने जवाब दिया, "पुरोहित जी, मैं तो रानी होकर विवाह करूंगी नहीं ; मैं सामान्य स्त्रीकी भांति पति पाकर सुखाएं

हूंगी। स्त्री हमेशा ही पतिकी आज्ञानुसारिणी है। स्त्री होकर क्या पतिके आगे रानी बनूंगी; जब स्त्री है, तब पतिकी सेविका तो है ही। मेरा अनुरोध और हुक्म है, कि आप मेरे लिये विवाह-पद्धतिका संशोधन वा परिवर्त्तन न कीजियेगा। मैं अबला हूं, अबलाकी भांति ही विवाह करूंगी। सब सामान्य लोग जितनी बातें कहकर पवित्र विवाह-बन्धनमें फंसते हैं, मैं भी वही कहूंगी, कुछ भी भेद न होगा।"

महारानीकी यह अपूर्व बात सुनकर वृद्ध आर्कविशपने आंखोंमें आंसू भरकर आशीर्व्वाद दी और अपने घर चले गये। जगज्जयी अङ्गरेज जातिकी अधीश्वरी महारानी विक्टोरियाने सामान्याकी भांति ही विवाह किया। यह दृष्टान्त सब राजकुमारियोंके अनुकरण-योग्य नहीं है क्या?

अठारहवां अध्याय।

शुभ दिन १० वीं फरवरी १८४० ई०को दोपहर सेण्टजेमस गिरजेमें महारानीका शुभविवाह सम्पादित हुआ। उस उत्सवकी धूमधाम, वह आमोद आनन्द मनुष्यकी लेखनीसे वर्णित नहीं हो सकता! स्वर्गराज्यमें बैठकर कल्पनाकी आंखोंसे और स्नेहके हृदयसे यदि वह देखना हो—तोभी वह सुखका दृश्य दिखा नहीं सकते, दिखाया नहीं जा सकता। पितृहीन अनाथ नवीना युवती जब माताके साथ स्रुखे मुह, कातरनयनसे इधर उधर देखती हुई प्रजावर्गके उच्चकण्ठसे

विक्टोरियाका विवाह-वेश ।

निकली हुई जयध्वनिसे घबरानीसी होकर गिर्जाघर जाती थी, उस समयका वह घबराया हुआ चिहरा, वह चिन्ताभरी देह, वह चकित कम्पित कमलनयनद्वय क्या कारसुही लेखनीके लेखसे चित्रित हो सकता है? इटनेश्वरीका विवाह जैसे होना चाहिये, वैसे ही समारोहके साथ सम्पादित हुआ। परन्तु अङ्गरेजमहेश्वरी होकर भी सामान्या स्त्रीकी भांति विक्टोरियाने वैवाहिक मन्त्र उच्चारण किये। कैसे स्वामीका मुह देखकर प्रतिज्ञा की थी, वह देखने और दिखानेकी सामिग्री है!

अङ्गीकारके कुछ आगे ही महारानी कुछ देरतक श्वेतकमलसमान दोनों हाथोंके ऊपर थोड़ा रागरञ्जित कमलमुख रखकर ईश्वरकी उपासनामें बैठी रह गईं। वह स्थिर प्रेमकी तसवीर जिसने देखी, उस भक्तिपूर्व्वक सिर झुकाये हुए मुहकी कातर प्रार्थनाकी दृष्टिको जिसने देखा, उसने जाना है, कि विक्टोरिया मानवी नहीं हैं,—देवी हैं। मर्त्यलोककी रानी नहीं, ब्रह्मलोकविलासिनी श्वेतपद्मालयनिवासिनी शारदा है।

उपासना शेष हुई। सम्राटके भी सम्राट विश्वसम्राटकी आशीर्वाद पाकर महारानी स्थिरमूर्त्तिसे प्रधान पुरोहितके पास पहुंच गई। पुरोहित साहब यथाशास्त्र उपदेश देने लगे और "अलबर्ट विक्टोरिया"का नाम एक करके आशीर्व्वाद उच्चारण किया।

शेषमें कम्पितकण्ठ पुरोहित आर्कविशपने पूछा, "विक्टोरिया, तुम क्या अलबर्टको अपने विवाहित स्वामीके पदपर चुनना चाहती हो? तुम क्या भगवानकी व्यवस्थाके अनुसार पवित्र वैवाहिक सम्बन्धमें बंधकर जीवनयात्रा निवाहना चाहती हो? तुम क्या अलबर्टकी भक्ति

करोगी? सम्मान करोगी? प्यार करोगी? उनके हुक्मको मानोगी? रोगशोकमें उनकी सेवा करोगी? नीरोग सुखमें क्या उनकी अनुचरी होगी। और जितने दिन इस जगतमें दोनों जने जीते रहोगे, उतने दिन पवित्र प्रेमके बन्धनमें फंसकर क्या दोनों प्राण एक करोगी?"

जवाबमें विक्टोरियाने अकम्पित कण्ठसे कहा, "हाँ मैं वैसा ही करूंगी। अलबर्टके हुक्मको खूब मानूंगी।" यह बात कहनेके समय विक्टोरियाने एक बार चञ्चल नयनसे अलबर्टको विवाहके मण्ड-पमें चौंका दिया। उस कटाक्षकी विद्युच्छटा जिसने एक बार देखी वही समझ गया, कि नोनों घने प्रेमसे बंधे हुए हैं। राजा रानीमें ऐसा प्रेम नहीं होता।

अलबर्टने विवाहकी अंगूठी कांपते हुए हाथसे विक्टोरियाकी चम्पक-अङ्गुलिमें पहना दी। और तुरन्त ही चारो ओरसे करोड़ कण्ठोंसे निकली हुई जय जयध्वनिने घरके आंगनको कंपा दिया। तोपका शब्द, घण्टेका शब्द, बन्दूकका शब्द—नाना शब्दोंसे एक बड़ा अपूर्व कोलाहल होने लगा।

वृटनेश्वरी महारानी विक्टोरिया राजकुमार अलबर्टसे शुभ विवाह-बन्धनमें फंसकर उनकी दासी होकर रहीं।

परन्तु इतने सुखके विवाहका "मधुमास" एक दिनसे ज्यादा न रहा। विलायतमें युवक युवती विवाहके पीछे एकान्त स्थानमें कुछ दिन रहकर निर्विघ्न प्रेमामृत पिया करते हैं। परन्तु विक्टोरिया तो राज्येश्वरी हैं; राज्येश्वरीको इतने सुखमें डूबना उचित नहीं, जिससे राज्यका कोई अमङ्गल न हो जावे, राजकार्य्यमें कोई बाधा विघ्न न

पड़ जावे। सो एक दिनको छोड़कर दम्पति दो दिन भी एकान्तमें न रह सके। कर्त्तव्यके लिये सुखका स्वर्ग भूलकर संसारमें फिर आये।

उनीसवां अध्याय।

शुभ विवाह तो यथारीति हो गया। महारानी और अलबर्ट "मधुमास"का आनन्द भोगकर फिर राजकार्य्यमें प्रवृत्त हुए। अलबर्टके लिये और क्या राजकार्य्य है। वह तो सिर्फ राज्येश्वरीके भर्त्ता हैं। विलायतमें उन दिनों और तो कोई उनका पद न था। सो कहना पड़ता है, कि केवल "खसमगरी"की नौकरीमें बहुत फसाद है। राज-कुमारको विवाहके पहले वर्षमें यह सब फसाद सहना हुआ। महा-रानी विक्टोरिया जैसी प्रेममयी थीं, रसमयी थीं, वैसी सुहागिनी, पतिपदपरिचारिका भी थीं। इंग्लण्डेश्वरी होकर उन्होंने राज-कुमार अलबर्टको पति बनाकर कृतार्थ किया है, यह नीच भाव उनके मनमें कभी उदय नहीं होता था। औरके पास जैसे रानी होकर रहना उचित है, वैसे ही रहती थीं, परन्तु अलबर्टके साथ वह आज्ञानुवर्त्तिनी पत्नी होकर रहती थीं। जब दोनोंने घरमें प्रवेश किया, तब विण्डसर राजपरिवारमें राजकुमारको कोई उतना मानता न था। और तो क्या—लाट चेम्बरलेन अर्थात् राजमहलके प्रधान कर्म्मचारी बड़े बड़े उत्सवोंपर महारानीकी गाड़ीमें अकेले बैठकर जानेपर रुठी हो गये थे। वह कहते थे, कि उत्सवके समयमें

हमी महारानीके अनुगामी हैं, छायाकी भांति महारानीका अनुगमन करना ही हमारा अधिकार है।

इन सब नाना कारणोंसे दुःखी होकर, महारानीके प्यारे कहलाते हुए क्षतार्थ होकर भी अलबर्टका मन मानो कितना छोटा बना रहता था। वह घरमालिक हैं, पर महारानीको छोड़कर उन्हींके घरमें उन्हें कोई मानता नहीं,—धीरे धीरे यह बात महारानीके कान-तक पहुंची। तब उन्होंने सबको बुलाकर कह दिया, कि "देखो, मैं राजराजेश्वरी हूं तो क्या हुआ, पर इस घरके स्वामी ही राजा हैं। इस घरमें मैं महारानी नहीं हूं, केवल पत्नीमात्र हूं। मेरे स्वामी ही मेरे इस राजघरानेके मालिक और प्रभु हैं। मैं उनकी आज्ञाकारिणी दासी रहूंगी, यह प्रतिज्ञा मैंने ईश्वरके मन्दिरमें की है। मैं उनकी सेविका हूं, सो लोग मेरे स्वामीकी सेविकाके सेवक वा सेविका हैं।" महारानीकी यह अपूर्व वाणी सुनकर, सब लोगोंने विस्मित होकर राजकुमारको देखा और उनसे माफी मांगकर, घट-नोंके बल बैठकर उनकी अधानता स्वीकार की। राजकुमार गृहपति हुए। उनके सब चोभ दुःखका कारण दूर हुआ।

राजकुमार अलबर्टका निजका खर्च निवाहनेके लिये पार्लिमेण्टने उनको वार्षिक साढ़े चार लाख रुपया देना मञ्जूर किया। जितने दिन वह जीवित रहें, उतने दिन यह रुपया पावें।

खैर! घरबार ठीक हो जानेपर और यथारूप गृहस्वामी होकर अधिष्ठित होनेपर अलबर्टके भाई अरनेष्ठ उनसे विदा मांगकर चले गये। लड़कपनके सभी सङ्गी चले गये। स्वजाति और स्वदेश

उन्हें चिर दिनके लिये छोड़ना पड़ा। वह इंगलैण्डकी रानीके भर्त्ता होकर इंगलैण्डके खरीदे हुए होकर रहे। इस वियोगसे उन्हें कातर होना पड़ा, उन्हें जीमें घबराना पड़ा। परन्तु विक्टोरियाकी भांति देवी जिनकी पत्नी है, वह सहज हीमें सब दुख भूल जा सकते हैं, स्वदेश और स्वजातिके त्यागका जो क्षणभरका दुःख है, वह उनको मलिन नहीं कर सकता।

वीसवाँ अध्याय।

नवविवाहिताका मान अभिमान जैसा होना चाहिये, अवश्य ही इस नवदम्पतिमें वह था। जैसी गाढ़ी जिद और चाह थी, वैसा ही अभिमान भी कभी कभी बिजलीकी न्याई कौंध जाता था। एक दिन महारानीकी किसी बातपर नाराज होकर अलबर्ट एक कमरेका द्वार बन्द करके मानमें सीधे पड़ रहे। महारानीने भी पहले क्रोधके डरसे अलबर्टको पकड़कर समझा देनेकी चेष्टा न की। दोनों जनोंके मन उफनते हुए दूधकी न्याईं अभिमानसे फूल गये थे। दोनोंने मनमनमें सङ्कल्प कर लिया था, कि "विना मान तोड़े बात न करेंगे।" खूब तेजीसे दम्पतिका कलह बढ़ गया। परन्तु एक घड़ी बाद महारानी अलबर्टको विना देखे अधीर हुईं। क्या करें, धीरे धीरे जिस घरमें अलबर्ट अपनी इच्छासे कैदी हुए थे, उसी घरके दरवाजेके पास जाकर मौजूद हुईं। चम्पक अङ्गुलिसे धीरे धीरे किवाड़पर दो टक्कार मारी; कुछ भी जवाब नहीं। धक्का मारा;—कुछ उत्तर नहीं। "अलबर्ट

द्वार खोलो" इस मधुर अज्ञानसे कोई न बोला। "फिर ऐसा न कहूंगी—द्वार खोलो;—" इस आदरकी आवाजसे कोई न बोला। तब राजेश्वरीने महारानीकेसे दृढ़ कण्ठस्वरसे आवाज मारी,—"अलबर्ट, तुम्हारी महारानी तुम्हें बुलाती हैं, उनके हुक्मसे तुम शीघ्र द्वार खोल दो।" यह हुक्म सुनकर अलबर्ट महारानीके आगे सामान्य प्रजाकी भांति घुटनोंके बल बैठे और हाथ जोड़कर उनकी इच्छा पूछते हुए माथा झुकाकर रह गये। मानो कितने नम्र आज्ञाकारी नौकर हैं,—कितनी राजभक्त सभ्य अधीन प्रजा हैं। धीरे धीरे अलबर्टने फिर कहा, "रानीकी क्या आज्ञा है, दास मौजूद है।" अलबर्टने पांव पकड़ लिये थे, कि नहीं, सो हम नहीं जानते। नई प्रीतिके नये रसके ऐसे नित्य नये खेल हुआ करते थे।

एक दिन दोनों लण्डन नगरमें सैर करने गये। मार्गमें औक्सफोर्ड नाम एक सत्रह वर्षके बालकने महारानीपर निशाना लगाकर पिस्तौल छोड़ दी। भगवान्‌की कृपासे गोली महारानीके अङ्गको न छू सकी। पीछे यह औक्सफोर्ड अदालतमें पागल निश्चित हुआ। प्रायः पैंतीस वर्ष यह जेलमें रखा जाकर औष्ट्रेलिया भेज दिया गया। वह वहां मकानोंपर रङ्गामेजी करके आहार वस्त्रादिका उपार्ज्जन लगा। महारानीने दया करके उसे प्राण दान दिया।

नवेम्बर मासके बीचाबीचमें महारानी विण्डसर महलसे लण्डन नगरमें आईं। वह गर्भिणी थीं। प्रसवका समय नजदीक आ गया था। पहला प्रसव था, इससे विशेष सावधानीसे सब व्यवस्था की गई। २१ वीं नवम्बरको उन्हें प्रसवकी पीड़ा हुई। राज्यके

प्रिन्स आलबर्ट।
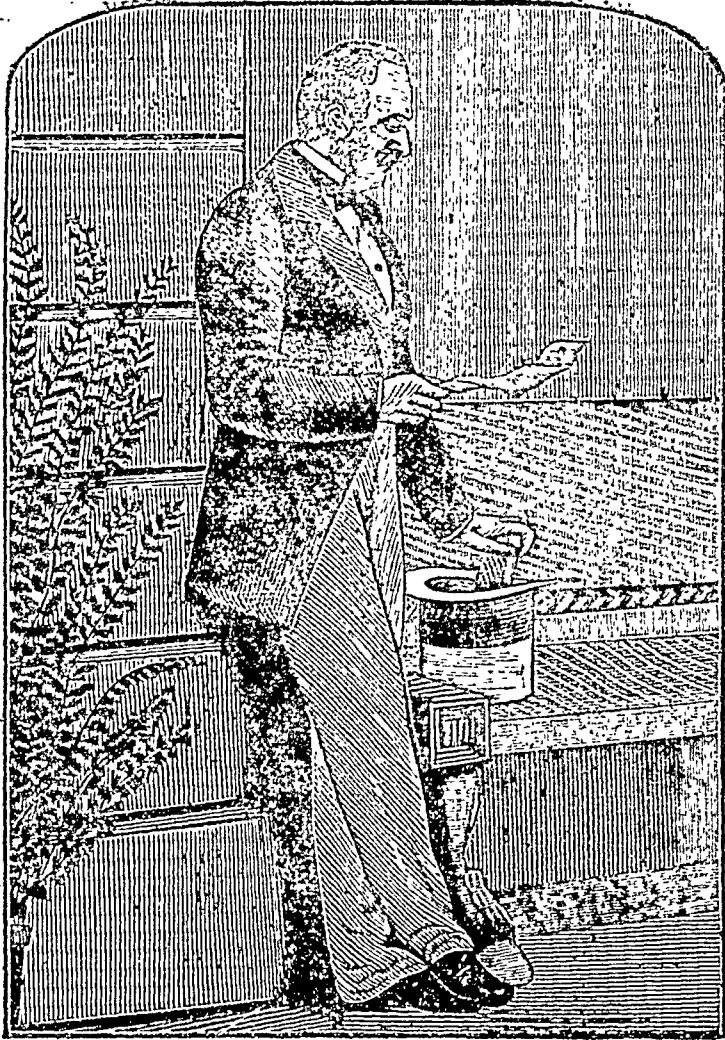
बड़े बड़े डाक्टर, राजकुमार अलबर्ट और दाई श्रीमती लिली प्रसवागारमें मौजूद थे। क्या हो, क्या हो, करके सभी लोग आशङ्का और सम्भावनामें पड़े थे। राज्येश्वरी होकर भी मा होनेका जो कष्ट है, सो भोगना ही पड़ेगा। खैर! दोपहर पीछे एक बजके चालीस मिनिटपर महारानीकी बड़ी लड़की—वर्त्तमान जर्मननरेशकी मा, सम्राट फ्रेडरिककी पत्नी राजकुमारी विक्टोरिया भूमिष्ठ हुईं। पासके कमरेमें राज्यके सब प्रधान कर्म्मचारी और राजनीतिक लोग उपस्थित थे। दाई लिली सद्यःप्रसूता राजकुमारीको गोदमें लेके इन सब राजपुरुषोंके पास लेकर हाजिर हुईं। राजपुरोहितने आशीर्वाद करनेके अभिप्रायसे कन्याको मेजके ऊपर रखनेकी बात कही। परन्तु नवजात लड़की रोने लगी। तब दाई उसे गोदमें रखकर जीवनका प्रथम वस्त्र पहनाने ले गईं। पहले लड़की होनेसे राजकुमार अलबर्ट जरा दुःखी हुए। उन्होंने सोचा, शायद प्रजाके लोग कुछ निराश हो जावेंगे। अलबर्टके इस दुःखकी बात सुनके महारानीने कहा, "डर काहेका है, अबकी बार लड़का जनूंगी।" बहुतसे पुत्र कन्याओंकी मा होनेका शौक जवानी हीसे था। भगवान्‌ने भी यह शौक पूरा करनेमें कञ्जूसी नहीं दिखाई।

प्रसवके लिये जितने दिन महारानी सौतिक-घरमें बन्द रहीं, उतने दिन अलबर्ट दिन रात उनके पास बैठे रहते थे। पोथी पढ़ा करते थे, उनकी चिट्ठियां लिखा करते थे, और कोठरीमें अगर ज्यादा रोशनी आती थी, तो उसे बन्द करते थे। बिछौनेसे उठकर आराम चौकीपर सोनेकी यदि इच्छा होती थी, तो अलबर्ट धीरे धीरे विक्टोरियाको

गोदमें लेके आराम-चौकीपर लिटा देते थे। एक कोठरीसे अगर दूसरी कोठरीमें जाना चाहती थी, तो अलबर्ट ठेलागाड़ीपर बिछौना बिछाकर उन्हें चढ़ाकर खींच ले जाते थे। घरमें कहीं क्यों न रहें, हुक्म पाते ही अलबर्ट महारानीके पास हाजिर हो जाते थे। अल-बर्टकी सावधानी, अलबर्टकी शुश्रूषाकी बात लोगोंके मुख मुखमें घूमने लगी। मालूम होता है, पुरुष पति होकर अलबर्टने महारानीकी जितनी सेवा की, उतनी मा भी अपनी प्यारी लड़कीकी न करेगी।

महारानीकी गैरतनदुरुस्तीमें अलबर्ट ही सब चिट्ठियां लिखते थे, और सरकारी कर्म्मचारियोंसे सरकारी बातचीत करते थे। अल-बर्ट महारानीके पक्के मन्त्री होकर दिन रात उन्हींके पास हाजिर बने रहते थे।

इक्कीसवां अध्याय ।

जाड़ेमें विलायतकी नदी और तालाब वगैरहका जल जमके बरफ होकर इतना कड़ा हो जाता है, कि अनायास ही उसके ऊपर चलो फिरो। चिकनी बरफके ऊपर साहब लोग एक प्रकारकी खड़ाऊं पहनकर टहला करते हैं। इस खड़ाऊंको "स्केट" कहते हैं। इसे पैरमें पहनकर बरफके ऊपर खूब जल्दी चला जा सकता है। मनमें होता है; मानो फिसले जाते हैं, मानो तीव्रवेगसे दौड़े जाते हैं। इस प्रकार शीघ्र चलनेसे मनमें बड़ी फुर्त्ती आती है। सो जाड़ेमें विला-यतके सब भले मानस "स्केट" करके दौड़ते फिरते हैं।

एक दिन राजकुमार अलवर्ट महारानीके आगे इसी "स्केट"पर टहलते थे; खूब द्रुतगतिसे मानो देवमूर्त्तिके समान रपटे जाते थे; महारानी उन्हें अनिमिष नेत्रसे देखती थीं और प्रियतमके रूप और गुणकी प्रशंसा करती थीं। ऐसे समय अचानक एक स्थानकी एक टुकड़ा वरफ टूट गई और अलवर्ट जलमें गिर पड़े। "डूवा डूवा" कहके तुमुल शब्द उठा। महारानीकी सङ्गिनी रोने लगीं; परन्तु विक्टोरियाने स्थिरभावसे साहसपर भरोसा रखकर, उस टूटी वरफके किनारे खड़े होकर धीरे धीरे अलवर्टको हाथ पकड़के उठा लिया। अलवर्ट जब ऊपर आकर खड़े हुए, तब वह न रह सकीं; रो उठीं। दोनों जने रोते हंसते भींजे कपड़े पहने हुए महलमें गये और शान्त हुए।

दूसरे वर्ष १८४१ ई० की ६ वीं नवम्बरको महारानीने एक सुन्दर पुत्र जना। राज्याधिकारी राजकुमार भूमिष्ठ हुए, यह समाचार लण्डनमें प्रचारित होते ही आनन्दका एक ऐसा कल्लोल कोलाहल उठा, कि उसे सुनकर मनमें आया, शायद आनन्दकी उमङ्गसे जमीन आस्मान फटे जाते हैं।

लगातार तोपोंकी घनी ध्वनि, अनवरत गिरजोंकी घण्टाध्वनि, घोड़ोंकी हिनहिनाहट, तुरहीकी अवाज, अस्त्रोंकी झनझनाहट और साधारण लोगोंके जयशब्दसे मानो आकाश मथित हुआ। सबके मुहसे हंसी, सबकी आंखसे मानो आनन्द-ज्योति बाहर निकली पड़ती है। इतने आनन्दका दिन इंग्लण्डमें शायद इसके आगे नहीं हुआ था। चतुर्थ जोर्ज अपुत्रक मरे थे, चतुर्थ विलियम निःसन्तान

लोकान्तर गये थे। राजकुमार राज्याधिकारी युवराजके जन्मोत्सव बहुत दिनोंसे इंग्लण्डमें न हुआ। सुनकर अङ्गरेज आनन्दमें पागल हो उठे थे।

प्रसवका क्लेश जाते रहनेपर महारानी तनदुरुस्त हुईं। जब मुंह उठाकर देखनें योग्य हुईं, तब प्राणप्रिय अलबर्टकी ओर ताक-कर और मन्द हंसकर उन्होंने कहा, "अलबर्ट, यह अपना लड़का गोदमें लो; आज मेरा जन्म सार्थक है; मैं पुत्रवती हुई, राजाकी मा हुई। मेरे पुत्रको आशीर्वाद करो। प्यारे, मैं राज्येश्वरी होनेके बदले राज-माता होना बहुत चाहती हूं। कहा था, कि तुम्हारी गोदमें पुत्र रखकर कृतार्थ हूंगी, आज मेरी वह इच्छा पूरी हुई। भगवान हम लोगोंको सुखमें रखें।"

माई, तुम सुखमें रहो। तुम राजाकी मा हो, सम्राटकी मा हो और दीन दुःखमयी हमारी भी मा हो। तुम जगज्जननी स्नेहमयी होकर सुखमें रहो। तुम्हारे सब पुत्र कन्या सुखमें रहें!

इस बार महारानीके सुस्थ होनेमें विलम्ब हुआ था। प्रसवक्लेश बड़ा भारी हुआ था। जितने दिन विक्टोरिया कोठरीमें बन्द थीं, उतने दिन छायाकी भांति अलबर्ट उनके पास रहते और सेवा करते थे। छोटीसी लड़की "विकी" माके बिछौनेपर बैठकर गोलमाल माखनसे दोनों हाथोंको चलाकर नये आये हुए छोटे भाईके साथ टूटी बातोंमें बोलती थी। दोनो जने कभी कभी हंसकर घरको पागल कर देते थे। लड़की हंसी जिस घरमें नहीं, वह घर घर ही नहीं है।

लड़का किसके समान होगा, महारानीको तब यही चिन्ता हुई। ताऊ बेलजियमनरेश लियोपोल्डको चिट्ठी लिखनेके समय महारानीने लिखा था, "ताऊ साहब, मेरे लड़का हुआ। यह सुनके तुम निश्च सुखी होगे। मुझे बड़ा शौक है, कि लड़का अपने पिताके समान रूप गुणमें उत्तम हो। मेरा पुत्र प्यारे अलवर्टके सदृश हो, यही मेरा एकमात्र शौक है।"

नवप्रसूत युवराजका नामकरण उत्सव बड़ी धूमधामसे हुआ, पुरुश्याके राजा इस उत्सवमें खुद आकर मौजूद हुए। २५ वीं जनवरी सन् १८४२ ई० को युवराजका नामकरण हुआ। इंगलण्डके प्रधान पुरोहित आर्कविशप कार्टरवरीने लड़केको गोदमें लेकर क्रस्तानी धर्मकी व्यवस्थाके अनुसार उसे आशीर्वाद दी और अभिषेक करके नामकरण किया। नाम पड़ा, युवराज अलवर्ट एडवार्ड प्रिन्स अव वेल्स।

इस समय पार्लिमेण्टमें स्थिर हुआ, कि भगवान् न करें, अगर महारानीका देहान्त हो, तो प्रिन्स अलवर्ट ही अपने पुत्र युवराज अलवर्टके अभिभावक रहेंगे। अङ्गरेजोंने इतने दिन पीछे प्रिन्स अलवर्टकी श्रद्धा और भक्ति करना सीखा, इस बातसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है। क्योंकि इंगलण्डके राज्याधिकारी युवराजकी शिक्षा और भरणपोषणके लिये इंगलण्डके निवासी ही जिम्मेदार हैं। इंगलण्डकी प्रजा चाहती है, कि देशके राजा अङ्गरेज हों, शिक्षा और विचारमें पूरे अङ्गरेज हों। अलवर्ट विदेशी जर्मन हैं, वह राजाके बाप हैं, तो भी राजमुकुटपर उनका कोई अधिकार नहीं है। महारानीके पति

कहकर ही उनका कुछ आदर था। अब वह पार्लिमेण्टद्वारा युव-राजके अभिभावक और राज्यके रक्षक नियत हुए, इससे सबने जाना, कि इंग्लेण्डवासी लोग प्रिन्सपर विश्वास रखना सीख गये।

बाईसवां अध्याय।

अभीतक हमने केवल महारानीके गार्हस्थ्य जीवनकी बात कही। घरमें वह देवी थीं, सो मालूम होता है, सब समझ गये। महारानी होकर भी कैसे प्यार करना होता है, पत्नी होकर कैसे पतिकी सुहागिन होना होता है, गृहणी होकर कैसे पतिकी मर्य्यादा रखना होता है, सो विक्टोरिया खूब जानती थीं। उनके पवित्र जीवनके गुणसे इंग्लण्डका राजघराना पवित्र हो गया है। जहां अधर्म्म था वहां धर्म्मका पवित्र आसन बिछाया गया है। महारानी विक्टोरियाकी भांति स्वर्गदेवी ब्रटिश सिंहासनकी अधिष्ठात्री हैं, तभी आज ब्रटनवासी जगत्‌में पूज्य और सब लोगोंके मान्य हैं। परन्तु केवल घरकी बात कहनेसे राज्येश्वरीका जीवन पूरा नहीं होता है। राज्यकी बात और राज्यशासनकी शृङ्खला भी कहना होगा। इस बार उसकी आलोचना की जाती है।

इंग्लण्डकी महारानी स्वेच्छाचारिणी नहीं हो सकती। प्रजाके दण्डमुण्डकी कर्त्री नहीं हैं। उनकी सामर्थ्य खूब सीमाबद्ध है। राजा होनेपर भी हत्याके अपराधका उन्हें जवाब देना होगा। राजा होकर भी बिना अपराध वह किसी प्रजाको बांध नहीं सकती। राजा

होकर भी विचारालयमें यथार्थ विचार विना हुए वह किसी प्रजाका शासन नहीं कर सकती। राजा होकर भी वह खजानेसे मनमाना रुपया नहीं खर्च सकती। राजा होकर भी वह इच्छानुसार किसी राजाके साथ सन्धिसूत्रमें नहीं बंध सकती। अन्य साधारण प्रजा जैसे आईन कानूनद्वारा बंधी है, इंगलण्डभूपाल वैसे ही आईन कानूनद्वारा जकड़े रहते हैं।

इंगलण्डकी राजशक्ति भिन्न भिन्न लोगोंपर भिन्न भिन्नरूपसे पड़ी है। एक शासकके पास सब शक्ति नहीं है। शासन शक्तिके व्यवहारमें एकका अधिकार दूसरेकी शक्तिको कुछ कुछ घटाता रहता है। एक दूसरेका रोकनेवाला बना रहता है, इसके जरीये कोई भी शक्तिशाली यथेच्छाचारी हुए नहीं हो सकता।

शासन-व्यवस्थाके ऊपर राजा तो हैं ही ; इनके ऊपर दो पार्लिमेण्ट वा पञ्चायत-सभा हैं। एक सभामें तो केवल रईस वा देशके श्रेष्ठ उपाधिधारी जमीन्दार, बड़े राजपुरोहित वा विशप और मशहूर आईनवेत्ता जज लोग सभासद होते हैं। यह सभा "हौस अव लौर्ड्स" कहलाती है। इस सभाके सभासद होनेमें वोटका हङ्गामा नहीं होता। बुनियादी जमीन्दारका ज्येष्ठ पुत्र उत्तराधिकारीके हकसे इस सभामें बैठ सकता है ; विचारपति लाट उपाधि पानेसे भी बैठ सकता है, प्रधान पुरोहित वा "विशप" कहलाकर भी इसमें बैठ सकता है। हौस अव लौर्ड्सको आईन बनाने बिगाड़ने और मुकद्दमा कर-नेकी सामर्थ्य है।

दूसरी सभा साधारण सभा वा "हौस अव कमन्स" कहलाती है।

इस सभामें जो वोटके जरीये चुने जाते हैं, वही सभ्य हो सकते हैं। वार्षिक आमदनी, शिक्षा और गृहाधिकार इन तीन विषयोंकी विवेचना करके निवासियोंको वोटका अधिकार दिया जाता है। किसीके तीन, किसीके पांच, किसीके दो वोट रहते हैं। जितने मध्यधनके भलेमानस साधारण सभामें चुने जानेके अभिलाषी होते हैं, उन्हें वोटोंकी भीख मांगना पड़ती है। बहुत वक्तृता करना होती है, बहुतसी प्रतिज्ञा करना होती है, साधारण लोगोंकी बहुतसी खुशामद करके काम निकालना होता है। इस कमन्स सभामें लगभग ६२५ लोग मेम्बर होते हैं। अर्थात् इंगलण्ड, वेलस, स्काटलण्ड और आयर्लण्ड—ये स्थान ६२५ भागोंमें बंटे हैं। हरेक भागसे एक मेम्बर चुना जाता है। निवासियोंकी संख्या और रुपया पैसा तथा शक्ति विचार देखकर भाग बांधा जाता है। यहांतक कि कोई कोई नगर चार पांच भागोंमें बांटा जाता है। इन ६२५ मेम्बरोंके ऊपर एक सभापति होते हैं, वह "स्पीकर" कहलाते हैं। एक सहकारी सभापति भी होते हैं। जब "स्पीकर" ग़ैरहाजिर होते हैं, तब यह नायक बन जाते हैं। और किसी आईनके मसौदेका विचार होनेके लिये अगर छोटी सभा वा "कमिटी" हो, तो सहकारी साहब ही उसके मुखिया बनते हैं।

इन दो सभाओंमें—हौस अव लौर्डस और हौस अव कमन्समें दो दल हैं। एक "ह्विग" या "लिबरेल" और दूसरा "टोरी" वा "कन्सरवेटिव" हमारी हिन्दी भाषामें "उन्नतिशील" और "स्थितिशील" नाम ठीक है। जब जिस दलकी संख्या अधिक हो, तब उसी

दलकी प्रधानता रहती है। उसी दलके मुखिया राजमन्त्री मुकर्रर होते हैं, और वही राजकार्य्य चलाते हैं। ब्रिटन राज्यकी लगभग सब प्रजा इन दो दलोंमें बंटी हुई है।

राजाकी इच्छा हो, चाहे न हो, जिनका दल पुष्ट है, उन्हींको राजमन्त्रीका पद देना होगा। राजमन्त्रीका पद वह लोग नहीं चाहते, जिनके दलकी संख्या छोटी होती है। वह केवल विपक्षता करनेके लिये बैठे रहते हैं। वह "विपक्ष" नामसे मशहूर भी होते हैं। इस विपक्ष दलकी सदा यही चेष्टा रहती है, कि कैसे बड़े दलको अपमानित और लज्जित करें, कैसे उनकी शासनप्रणालीकी भूल दिखाकर, हराकर हम निजमें बड़े हों। इस दलबंधव्वल और आपसकी ईर्षासे आईन कानूनके दोषशून्य रहनेकी सम्भावना रहती है; इसीसे यह रीति इंग्लण्डमें जारी है।

किसी सभामें किसी बातकी आलोचना होते होते अगर प्रधान दल युक्तिमें हट गया और वोटमें परास्त हो गया, तो तुरन्त ही पराजित दलके मुखियाको राजमन्त्रीका पद छोड़ देना होगा। राजाको इच्छा न रहनेपर भी इन पराजित मन्त्रियोंके पदत्यागका पत्र मञ्जूर करना पड़ेगा। अथवा सभामें पराजित दल, साधारण सभा तोड़कर फिर अपनी चुनावटके लिये देशके लोगोंसे विनती कर सकता है। साधारणमें सात सात वर्ष पीछे एक एक बार साधारण सभाकी चुनावट होती है। परन्तु मन्त्रिदल इस भांति किसी बातमें हार जावे, तो चाहे जब सभा तोड़ सकते हैं।

हौस अव कामन्समें स्पीकर साहब तो सभापति रहते ही हैं,

तिसपर मन्त्रिदलकी ओरसे साधारण सभाके एक प्रधान वा "लीडर" कहलाते हैं। यह सभाके सब नये आईनोंके मसौदेकी बातको विचार करनेकी व्यवस्था कर देते हैं। साधारण सभामें राज्यके आय व्ययके विषयका विचार होता है। साधारण सभाके मेम्बर ही राज-खजानेके मालिक हैं।

कोई नया आईन हो, तो पहले चाहे वह कामन्स सभामें चाहे लौर्डस सभामें पेश करना होता है। एक सभाके मेम्बरोंद्वारा आई-नकी पूरी आलोचना होनेपर दूसरी सभाके विचारके लिये आईनका मसौदा वहां भेज दिया जाता है। दूसरी सभा उसका विचार करके और जरूरी बदल सदल करके राजाकी परवानगीके लिये भेज देती है। इच्छा होनेसे राजा कुछ दिन सम्मति बिना प्रकाश किये भी रह सकते हैं।

जो हो, अन्दाजन इसी हिसाबसे इंग्लण्डका राज्यशासन होता है।

तेईसवां अध्याय।

जब महारानी विक्टोरिया इंग्लण्डके राजसिंहासनपर बैठी, तब महामन्त्री थे ह्निग-दलके श्रेष्ठ लाट मेलबोर्न।

लाट मेलबोर्नकी शिक्षाके अधीन रहकर महारानीने राजकार्य चलानेकी प्रणाली सीख ली थी। जब जो प्रधान मन्त्री रहते हैं, तब उन्हींके रिश्तेदार और मित्र लोग अमात्य सहयोगी

मन्त्रियोंका उहदा पाते है। लाट मेलबोर्न उन्नतिशील दलके मुख्य थे, इस लिये उन्हींके आउदमी लोग महारानीकी सेवामें नियुक्त थे। बालिका महारानीने इन लोगोंमें रहकर रानीपनके काममें चतुराई पाई थी। विलायतमें प्रधान मन्त्रीकी इतनी सामर्थ्य है, कि महारानीके दासदासीगण भी उसीके मनके अनुसार होना चाहिये।

सन् १८३७ ई० से लेकर १८४१ तक लाट मेलबोर्न प्रधान मन्त्री थे। दूसरे पक्ष कनसरवेटिवदलके नायक सर रौबर्ट पील इतने दिनों-तक केवल मेलबोर्नकी विरुद्धता ही करते आते थे, परन्तु किसी काममें उनको हटा न सके। शेषमें एक दिन उन्होंने साधारण पार्लिमेण्टमें मेलबोर्नकी शासनप्रणालीका दोष दिखाकर उनको हटा दिया। लाट मेलबोर्नने पार्लिमेण्ट तोड़कर नवीन पार्लिमेण्ट बुलानेके बन्दोबस्त किया। पर नये पार्लिमेण्टमें पील साहब हीका दल अधिक हुआ। लाट मेलबोर्नको इस्तिफा देना पड़ा।

महारानीके लिये यह वियोग असह्य हुआ। पहले रानी होनेके दिनसे जिसकी शिक्षाके अधीन रहकर विक्टोरियाने सब राजकार्य सुन्दररूपसे सीखे थे, आज अचानक एक कूट रीतिके वशमें उनको पदच्युत करना पड़ा। प्रिन्स अलबर्टकी भांति स्वामीके पास न रहनेसे विक्टोरिया यह विरह सहजमें सह लेती, यह हमारी समझमें नहीं आता।

विदाके समय लाट मेलबोर्नने महारानीसे कहा था, "आज चार वर्षसे मैं आपको हर रोज देख पाता हूं। अब लो चला। परन्तु प्रिन्स अलबर्ट खूब स्थिर बुद्धि और योग्य है। वह आपको साव-

धानीसे रखेंगे ?" यह कहकर आंखोंसे आंसू बहाते हुए राजभक्त मेलवोर्नने प्रस्थान किया।

सर रौवर्ट पील नये प्रधान मन्त्री नियुक्त हुए। अबतक महारानी टोरीदलके किसी भलेमानसको बहुत पहचानती भी न थीं। टोरीदलके मुखिया लोग महारानीसे उतना खुश न थे। विशेष प्रिन्स अलवर्टको विदेशी जानकर वे खुलकर व्यौहार न करते थे। टोरी राज सर रौवर्ट पीलके मन्त्री होनेसे महारानी जरा चिन्तित हुई थीं। परन्तु सर रौवर्ट खूब विवेचक और बुद्धिमान् पुरुष थे। उन्होंने महारानीके साथ मुलाकात करने आकर ऐसे मधुर भावसे व्यवहार किया, कि सब गोलमाल और वैमनस्य एक ही दिनमें दूर हो गया।

हां, एक गोलमाल उठा। महारानीकी सङ्गिनी "डचेस वेडफोर्ड" "डचेस सदरलण्ड" और "लेडी नरमानवी" इज्जतदार ह्विग जमीन्दारोंकी स्त्रियां थीं। टोरियोंके अमलमें यह अगर महारानीकी अनुचरी रहें, तो टोरियोंके स्वार्थकी हानिकी सम्भावना है। इसी कारणसे मन्त्री पीलने इन स्त्रियोंको इस्तिफा देनेका अनुरोध किया। उनका अनुरोध माना गया। महारानीने बड़े दुःखसे पुरानी सङ्गिनियोंको विदा किया।

नवीन मन्त्रियोंने पदारूढ़ होते ही प्रस्ताव किया, कि सुकुमार शिल्पकी उन्नति करनेके लिये एक सभा होना चाहिये। और उस सभाके मुखिया हों प्रिन्स अलबर्ट। पार्लिमेण्ट बैठनेके लिये उस समय एक विशाल भवन तय्यार होता था। उसमें जितनी कारीगरी की जाती थी, उसीको परखनेके लिये ही इस

सभाका मिलन था। प्रिन्स अलवर्ट होशयार कारीगर और गुण-ग्राही थे। वह शिल्पकार्य्यका यथायोग्य तदारुक कर सकेंगे, इसी लिये उन्हें इस नये काममें व्रती होना पड़ा।

उन दिनों विलायतमें "डुएल" वा द्वन्द्वयुद्ध जारी था। कोई किसीको किसी प्रकारसे अपमानित करता तो दोनोंकी एकान्तमें कुश्ती होती थी। सेनाके लोगोंमें इस व्यवहारका विशेष चलन था। जरा पानसे चूना खसकनेपर तुरन्त "युद्ध देहि"की ललकार थी। ललकार होते ही दोनों पक्षके दो जने "सेकण्ड" वा मित्र चुने जाते थे। मित्र साहब नरहत्याकी सब सामग्री पूरी कर देते थे। पीछे अपमानित और अपमानकर्त्ता, दोनों जने यथानिर्दिष्ट समय और स्थानपर जा मौजूद होते थे। एक मनुष्य निशाना लगाकर दूसरेपर बन्दूक छोड़ता था। जिसका निशाना अचूक होता था, वही दूसरेको मार लेता था। यह निठुर रीति प्रिन्स अलवर्टकी कोशिशसे और महावीर वृद्ध डियुक अव वेलिङटनकी सहायतासे विलायतसे उठ गया। स्वयं बहुत चेष्टा करके अनेक लोगोंको समझाकर उसे बन्द करनेमें समर्थ हुई।

इस समय महारानी बड़े सुखसे दिन काटती थीं। मनमें किसी भांतिका क्षोभ वा कष्ट न था। हृदयमें किसी भांतिका उद्वेग न था। राज्यकी अवस्था बुरी नहीं थी। स्वामी और स्वामिनी दोनोंमें प्रेम है;—सोनेके चांद दो लड़के लड़की हैं,—इतना सुख क्या और किसीको होता है?—नहीं हो सकता।

चौबीसवां अध्याय।

सन् १८४२ ई०में दुःखका बोझा माथेपर आया। पहली बुरी खबर आई भारतवर्षके सीमाप्रान्तसे। अफगानस्थानमें सर विलियम मकनाटन अङ्गरेज सेनापति होकर गये थे। सर अलखजन्दर बर्नेस अङ्गरेजोंके दूत थे। देशके महाराज दोस्त मुहम्मद भाग गये थे। उनका बदमाश बेटा अकबर खां काबुलमें रहकर अङ्गरेजोंकी चाल ढाल परखता था। अमीर थे शाह शुजा। धूर्त हत्यारे अकबर खांने अङ्गरेज सेनापर टूटकर और सबकी शृङ्खला तोड़कर उन्हें काबुलसे भगा दिया। कोई एक डाक्टर ब्राइडन हिन्दुस्थानमें लौट आ सके। इस समाचारसे विलायतवासी स्तम्भित हो गये। उन दिनों विलायतके बड़े लाट थे लार्ड अकलण्ड। वह हारके पीछे ही विलायत चले गये। उनके स्थानपर बड़े लाट हुए एलेनबरा। जल्द ही लाट अकलण्ड बदला लेनेका सब बन्दोबस्त कर गये थे। लाट एलेनबराने आकर उसपर अमल किया और अफगानस्थानको विषम युद्धमें पराजय करके, उनके बाजार और घरोंको तोपसे उड़ाकर, गजनीसे सोमनाथके चन्दन-कपाट निकाल लाकर यथायोग्य बदला लिया।

इन दिनों चीनके साथ भी अङ्गरेजोंकी एक छोटीसी लड़ाई हुई। अङ्गरेज चीनका कियाङ्‌चू नाम स्थान दखल करके नानकिन शहरपर चढ़ने बढ़ने लगे। तब चीनने अङ्गरेजोंकी अधीनता मञ्जूर करके अफीम व्यवसायकी एक चुकती कर दी। और जिससे अङ्गरेज पादड़ी चीनमें महफूज रह सकें, उसका भी बन्दोबस्त हुआ।

विदेशमें तो जैसा हुआ, वैसा बन्दोबस्त भी हो गया; परन्तु स्वदेश इंगलण्डकी प्रजा भी विषम कष्ट पाने लगी। किसान और मजूरोंको अन्न जुड़ना दिनपर दिन कठिन होने लगा। मालगुजारी धीरे धीरे कम होने लगी, राजकोष धीरे धीरे खाली होने लगा; राणाको दिनपर दिन ऋण लेना पड़ा। विलायतमें अन्नकी आमदनी और रफतनीके विषयमें एक कर था। आमदनी और रफतनीका मार्ग रुकनेसे व्यापार उतना अच्छा न चलता था। किसी साल इतना अन्न उत्पन्न होता था, कि किसानको नुकसान सहना होता था; किसी साल इतना कम होता था, कि प्रजा भूखों मरने लगती थी। आईनकी दृष्टिमें जो व्यवस्था होनेसे देशका मङ्गल था, ठीक वह अवस्था कभी न होती थी। सो कष्ट भी कभी दूर न होता था। शेषमें विलायतके अनेक लोगोंने कहा, कि अन्नकी आमदनी और रफतनीके ऊपर जो कर है, सो उठा देना चाहिये।

जाड़ोंकी छुट्टीके पीछे फरवरीमें जब पार्लिमेण्टकी पहली बैठक होती है, अर्थात् नई चुनावटके पीछे जब नया पार्लिमेण्ट बैठता है, तब राजा वा रानी एक आदेशपत्र पढ़ते हैं। इस आदेशपत्रमें राज्यके सुख दुःखकी बात लिखी जाती है। भविष्यत्‌में राजमन्त्री लोग क्या काम करेंगे, उसका भी आभास रहता है।

सन् १८४२ ई० में महारानीने खुद पार्लिमेण्टमें जाकर आदेशपत्र पढ़ा था। उस दिन लण्डन नगरमें बड़ी भीड़ हुई। मार्गकी दोनो ओर कतार बांध कर लोग खड़े थे। पार्लिमेण्टमें बड़े बड़े गण्य मान्य लोग एकत्र थे। बीबियां बहुत विचित्र सुन्दर पोशाक पहनकर मानो

हाथमें रूपकी डाल लेकर वहां उपस्थित हुई थीं। उस दिन पार्लि-मेण्टका भवन मानो इन्द्रका नन्दन कानन हुआ था। मानो करोड़ चांद रूपकी प्रभा लेकर जगत्‌को रोशन करके, मनुष्योंके नेत्रोंको मोहके उदय हुए। इस रूपके सरोवर—अद्भुत सरोवरमें मानो हमारी महारानी सहस्रदल कमलकी भांति झलझल कर रही थीं। उनके उस वीणाविनिन्दित कण्ठ, उन खञ्जननयनोंके अपूर्व कटाक्ष, उस पवित्र देवीमूर्त्तिने इंग्लण्डके सब श्रेष्ठ व्यक्तियोंको स्तम्भित कर दिया था। जैसे जगत्‌की श्रेष्ठ-जाति अङ्गरेज हैं, वैसे ही जगत्‌की देवी रानी विक्टोरिया हैं।

उस आदेशपत्रमें बहुतसी आशाकी बातें लिखी थीं, पर सम्पूर्ण नहीं हुई।

इस समय महारानीकी हत्या करनेके लिये हत्यारेने फिर दो बार गुप्त चेष्टा की। हत्यारेका नाम जोन फ्रान्सिस था। ३० वीं मईकी शामके सात बजे फ्रान्सिसने अपनी जेबसे एक पिस्तौल निकालकर रानीकी गाड़ीका निशाना लगाया और आवाज कर दी। गाड़ीसे लगभग चार हाथकी दूरीपर दुष्ट खड़ा था। एक कनिष्टबल और एक जङ्गी पैदलने उसे गिरफ्तार किया। पकड़े जानेके पीछे उसने कोई बात ही न कही। पार्लिमेण्टमें यह खबर पहुंचते ही बड़ा गोलमाल हाहाकार पड़ गया। पार्लिमेण्टकी बैठक हो रही थी, सो बन्द हो गई। सभी दौड़कर महारानीको देखने आये। घट-नाके समय महारानीने बड़ा धैर्य दिखाया। परन्तु पीछे वह अवसन्न हो पड़ीं। डाक्टर साहबने महारानीकी परीक्षा करके कहा, कि

आप जैसे रोज हवा खाने जाती हैं, वैसे ही जाइये। महारानीने कहा, "हां, ठीक कहा। ऐसे प्राणसङ्कटमें मैं कबतक बच सकती हूं। नित्य प्राणभयसे डरते रहनेसे मरना अच्छा है। मैं नित्य जैसे हवा खाने जाती हूं, वैसे ही जाऊंगी। कोई बात अन्यथा न करूंगी।" इसी फ्रान्सिसने एक दिन आगे बन्दूक छोड़नेकी चेष्टा की थी, पर उस दिन आवाज न हुई। दूसरे दिन आवाज तो हुई, पर भगवदिच्छासे महारानीने रक्षा पाई।

पृथ्वीपर ऐसे पागल पिशाच भी हैं, जो केवल हाहाकार मचानेके लिये केवल नामके लिये महारानी विक्टोरियाकी भांति देवीकी हत्याकी चेष्टासे बाज नहीं रहते।

पचीसवां अध्याय।

विवाहके पीछे, प्रिन्स अलबर्टको पास रखकर दम्पत्ति सुखसे काल काटते थे। सैर करनेकी बात तो दूर रहे, राज्यके किसी स्थानमें भ्रमण करनेके उद्देश्यका भी अवकाश न था। परन्तु सन् १८४२ में बहुत सोच विचारके पीछे एक बार राज्य-परिदर्शन करनेके लिये उद्योग करने लगे। स्थिर हुआ, स्काटलण्डमें जाना होगा। राजकर्म्मचारियोंके बन्दोबस्त कर देनेके बाद २९ वीं अगस्तको स्वामी अलबर्टको साथ लेकर "रौयेल जौर्ज" जहाजपर, चढ़कर उन्होंने स्काटलण्डकी यात्रा की।

मार्गमें सब गांव और बन्दरोंके पासकी गंवईसे राजभक्त प्रजा आकर महारानीको प्रणाम आदि—राजसंमान और पूजा करके चली जाती थी! किनारेके पहाड़ोंसे रोशनीकी हंसी समुद्रकी छाती फाड़नेवाले जहाजपर चमकदार राजभक्तिका वह्नि-निशान उड़ाती थी। इसके आगे महारानीने यह न जाना था, कि हमारी राजभक्त प्रजा हमारी इतनी भक्ति करती है। वह प्रकृतिके आगे देवी कहकर पूजी जाती थीं, सो वह उतना समझ न सकी थीं। इस बार स्काटलण्ड जानेके मार्गमें प्रजाकी अपूर्व राजभक्तिका विकाश देखकर वह विस्मित और पुलकित हुईं।

१ ली सितम्बरके पीछे वह दलबल समेत एडिनबरा नगरमें पहुंच गईं। बहुत दिनोंसे एडिनबरा नगर राजचरणके संस्पर्शसे पवित्र न हुआ था। बहुत दिनोंसे स्काटलण्डीय लोग राजदर्शनसे कृतार्थ न हुए थे। इतने दिनके पीछे देवी विक्टोरियाको पाकर मानो वे पागल हो उठे। तीस चालीस कोस दूरसे कितनी ही राजभक्त स्काट प्रजा पैदल आकर विक्टोरियाके दर्शन कर गई। एडिनबरा नगर भी खूब अद्भुत साजोंसे सज्जित हुआ। लण्डनसे एडिनबरातक समुद्रकी राह आनेसे महारानीको खूब माथा घूमनेका रोग हो गया था। यह रोग "समुद्रका रोग" कहा जाता है। जरा तनदुरुस्त होनेपर एक दिन एडिनबरा नगरके प्रधान प्रधान राजमार्गोंसे महारानी खूब सजावट करके खूब ही दौड़ती फिरीं। नगरके बड़े बड़े अधिवासियोंने महारानीकी सजावट देखना चाही थी। उनका शौक मिटानेके लिये ही महारानीका यह भ्रमण था। एडिनबरा छोड़कर महा-

रानी स्काटलण्डके अन्यान्य बड़े बड़े नगरोंमें भी फिरी थीं। सभी स्थानोंमें प्रजाकी राजभक्ति देखकर महारानी मोहित हो गईं। इंग्लण्डमें लौट आनेके आगे ही उन्होंने साथके मन्त्री लार्ड एवर्डीनको आज्ञा दी, कि स्काटलण्डवालोंके लिये एक राजसन्तोषसूचक पत्र लिखना होगा। उस पत्रमें यह लिखा रहे, कि स्काट लोग राजभक्त हैं, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। परन्तु इतना हठ, इतनी इच्छा, इतनी उत्कण्ठा प्रजागणको महारानीके देखनेके लिये हो सकती है, यह समझकर महारानी बहुत खुश और सन्तुष्ट हुई हैं।
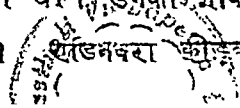
महारानीके ताऊ डिउक अव ससेक्सका २१ वीं अप्रेलको देहान्त हुआ। महारानी जब राजसिंहासनपर अभिषिक्त हुई थीं, उस समय बूढ़े ताऊ राज्येश्वरीको प्रथोचित पूजा देने और अधीनता दिखानेके लिये ज्योंही घुटनोंके बल हाथ चूमने चले, त्योंही विक्टोरियाने राजयोग्य सम्मान सम्भ्रम भूलकर, सिंहासन छोड़कर बूढ़े ताऊको गले लगाकर चूमा दिया। भतीजी विक्टोरिया इतनी स्नेहमयी थीं, कि इहने भी कर्त्तव्य भूलकर और विक्टोरिया सर्व्वमयी हैं, इसे विसरकर प्रेमकी अधिकाईके मारे उनका निज कन्याके समान आदर किया। वही स्नेहमय पितृव्य इतने दिन पीछे यह लोक छोड़ गये। विक्टो-रिया खूब मर्माहत हुईं। महारानीके ताऊकी जितने धूमधामसे अन्त्येष्टि क्रिया करना होती है, ठीक उतनी ही धूमधामसे काम सम्पादित हुआ।

इस समय २५ वीं अप्रिलको महारानीने और एक कन्या जन्मी। इन दिनों प्रसवकालमें महारानीको बहुत पीड़ा न भोगना पड़ी।

राजनीतिक लोग और प्रधान राजकर्म्मचारियोंने हाजिर होनेके पहले ही कन्या भूमिष्ठा हुई। कन्याका नाम राजकुमारी आलिस पड़ा। पाठक! आगे इस राजकुमारीके विषयमें बहुत बातें सुन पावेंगे। यह साक्षात् देवीरूपिणी थीं। ऐसी मिष्ठभाषिणी, मधुरहासिनी, कर्त्तव्य-परायण दयामयी कन्या महारानीके शायद और नहीं हुई। राज-कुमारी सेवामें रुक्मिणी, रसोईमें अन्नपूर्णा, शिष्टाचारमें गान्धारी और सहनशीलतामें धरित्री समान थीं। पिताकी सेवा करने और माताको सुख दुःखमें समझानेके लिये शायद दूसरा व्यक्ति न था।

छब्बीसवाँ अध्याय।

बारीक कारीगरीकी उन्नतिके लिये एक मण्डली गठित हुई, प्रिन्स अलबर्ट उसके प्रधान हुए। उस सभाका काम नियमित रूपसे आरम्भ होनेपर अलबर्ट रोज पार्लिमेण्ट भवनमें कारीगरोंका काम देखने जाते थे। हर रोज प्रातःकालीन ईश्वरोपासनाके पीछे महारानी और अलबर्ट दोनो देखने जाते थे। वहां युवराजकुमार और जेठी कुमारीको भी ले जाते थे। इंग्लण्डकी महारानी स्वामी और पुत्र समेत परमसुखसे हंसते हुए सैर कर रहे हैं, जरा भी दुःख वा चोभकी हलकी छाया भी किसीके मुहपर पड़ी नहीं। खूब सरल उदार प्रेमके पूर्ण उच्छ्वाससे दम्पति चार आंखें एक करके बातचीत करते हैं। यह दृश्य जो देखता था, सो ही मोहित विस्मित हो जाता था।

राजपरिवारमें इतना गार्हस्थ्य सुख और कहीं था या नहीं, और कहीं है या नहीं—यह बात सहजमें कोई कह नहीं सकता था।

महारानी १८३७ ई० के अगस्त महीनेमें अलवर्टको साथ लेकर समुद्रविहारको निकलीं। जहाजपरसे अन्यान्य स्थानोंकी सैर करके वह फालमौथ गांवमें जा पहुंचीं। वहांका मेयर वा प्रधान पुरुष क्वेकर-धर्मी था। क्वेकर इन्सान किसीके आगे माथेकी टोपी नहीं उतारते; परन्तु राजाके आगे तो अधीनता दिखानेके लिये खुले मुण्ड ही खड़े होना पड़ेगा। मेयर साहबने अपने धर्मकी बात महारानीको जनाई। महारानीने हंसते हंसते माथेकी टोप माथेपर रखे रहनेका हुक्म सुनाया। जरा जरासी बातोंमें भी महारानीने कभी किसीको पीड़ा नहीं दी।

जब फालमौथसे फरान्सके किनारे शेरवर्ग बन्दरमें आते थे, तब एक दिन महारानी जहाजके पहियेकी आड़में एक दरवाजेके सामने अन्यान्य सहेलियोंसे घिरी हुई बैठी बातें करती थीं। वे सब विशाल विस्तृत नीलसमुद्रकी ओर देखती हुई कितनी ही बातें कह रही थीं, ऐसे ही समय मल्लाहोंमें एक कैसी चुपचाप बात होने लगी। एक दल जहाजी गोरोंका आया, महारानीको अङ्गुलिसे दिखाकर चला गया। शेषमें बड़े साहब लाट फिजक्लारेन्स भी आकर हाज़िर हुए। महारानीने यह अद्भुत मामला आगेसे ही देख लिया था बड़े जहाजी लाटको आते देखकर, उन्होंने मन्द मन्द मुस्कराकर पूछा, "क्या मामला है? क्या गदर होगा?" जवाबमें साहबने कहा, "कुछ कुछ वसा ही है। महारानीको वह स्थान छोड़ देना होगा। आप

मेरा अनुग्रह करके अलग स्थानमें जा बैठिये।" महारानी बोली, "क्यों, अपराध?" जहाजी लाटने जवाबमें कहा, "हुजूर! मल्लाहोंके शराब-घरके दरवाजेसे आप रगड़कर बैठ गई हैं। दरवाजा न छोड़नेसे जहाजियोंको ग्रोग शराब पीना न बन पड़ेगा?"

महारानी। एक शर्तसे रास्ता छोड़ सकूंगी।

जहाजी लाट। जो हुक्म। ऐसी क्या शर्त है, जिसे हम लोग मञ्जूर न कर सकेंगे?

महारानी। हमें अगर एक ग्लास ग्रोग शराब दो, तो रास्ता छोड़ सकती हूं।

राज्येश्वरीकी शौकिया दरखास्त है, किसकी सामर्थ्य है, जो रोक सकता है? आज्ञाके अनुसार एक ग्लास ग्रोग शराब आई। महारानीने पी और मल्लाहोंको सुखकामना की। सारे अङ्गरेज जहाजी गोरोंने महारानीका यह अपूर्व व्यवहार देखकर गगन-विदारी जय-ध्वनिसे समुद्रकी छाती विचलित कर डाली।

फरान्सीसी बन्दर यू नगरके सामने जब महारानीका जहाज जा पहुंचा, तब किनारेसे फरान्सीसी लोग घनी तोपोंकी बाढ़ दागने लगे। फ्रान्स देशमें तब लुइ फिलिप महाराज थे। यह बोर्बोवंशी बड़े साधु और सरलप्रकृतिके मनुष्य थे। लुइ फिलिप हमारी महारानीका स्वागत करनेके लिये स्वयं दलबल समेत महारानीके जहाजमें आ खड़े हुए। विक्टोरिया भी आगे बढ़कर उनसे बात चीत करने लगीं। युरोपीय शिष्टाचारकी रीतिके अनुसार लुइने महारानीको सादर आलिङ्गन किया और उनके दोनों गालोंपर स्नेहकी कानाफूसी की; पीछे

भरी हैं। महारानीके ऐसे चिन्ताहीन, सदाफूलेफाले चञ्चल खुशी हुए नेत्र कभी किसीने नहीं देखे। उनको देखते ही मनमें आता था, शायद यही सब सुखकी अधिष्ठात्री देवी हैं। इतना सुख, इतना आनन्द, इतनी फुर्त्ती राजपरिवारमें कभी थी कि नहीं। इतना दम्पतिप्रेम, इतनी लड़कोंकीसी खुशामद, इतना सुहाग, इतना अनुराग महारानीके हृदयमें किसीने देखा है क्या? नहीं देखा है। फिर देखना असम्भव समझकर इंगलण्डके लोग उन दिनों महारानीको दोनों आंखें खोलकर एकटक निहारते थे।

परन्तु सुख भी सदा नहीं रहता, रह भी नहीं सकता। इस समय समाचार आया, कि प्रिन्स अलबर्टके पिता डियुक सक्सि-कोबर्ग यह लोक छोड़ गये। महारानीके श्वशुरका साठ वर्षकी अवस्थामें देहान्त हुआ। पितृशोकसे अलबर्टकी देह मानो टूट गई। नया शोक है, पहला शोक है, सब शोकोंका राजा जन्मदाताकी मृत्युका शोक है। अलबर्ट सह न सके, मानों मर्ममें मर गये। इस शोकको छायाने महारानीपर भी अधिकार किया। महारानी भी विह्वल हो गईं। पिताका प्रेतकर्म्म करनेके लिये अलबर्टको जर्म्मनीमें जाना पड़ा। विवाहके पीछे अलबर्ट और महारानीका यह पहला वियोग हुआ। यह विरह दोनो ओर न सहा गया। बराबर दोनो जनोंका एक साथ रहना था—सो पन्द्रह दिनके लिये भी अलबर्टको दूर भेजकर महारानी मानो अधीर हो गईं। अलबर्ट भी वियोगकी पीड़ासे विशेष दुर्बल हुए। पिताका शोक भूलकर अलबर्टने आधेमार्गसे, डोवर-बन्दरसे महारानीको एक चिट्ठी लिखी। उसमें लिखा था,—"हमारी

परमप्यारी, मैं यहां एक घण्टा पहले आ गया हूं और मनमनमें दुःख करता हूं, कि क्यों आगे आ गया। यह एक घण्टा तो तुम्हारे साथ काट सकता। मैं अब यहां बैठकर चिट्ठी लिखता हूं और तुम वहां खाने पीनेका बन्दोबस्त करती हो। तुम्हारी बगलका स्थान कुछ दिन सूना रहेगा। तुम्हें शायद बहुत कष्ट होगा। परन्तु तुम्हारे हृदयके एक कोणमें मैंने जो थोड़ा स्थान पाया है, भरोसा करता हूं, वह स्थान ज़रा भी सूना न रहेगा। तुम्हारे हृदयमें मैं सदा हाजिर रहूंगा। विरह-पीड़ित होकर चञ्चल मत होना। मैं शीघ्र ही लौट आऊंगा। जितनी जलदी सकूंगा, काम खतम करके लौट आऊंगा। बराबर काम धन्धेमें लगी रहना और मेरी बाट देखती हुई दिन गिनती रहना।" क्यों न? पितृशोकमें डूबकर भी अलबर्टने ऐसा पत्र लिखा। दोनोंके बीच कितना गाढ़ा प्रेम था!

इस वर्ष महारानीने गृहस्थीका एक सुन्दर बन्दोबस्त किया। रसोई-घरमें हर रोज बहुतसी बची हुई रोटियां फेंक दी जाती थीं वा जिस तिसको दे दी जाती थीं। महारानीने हुक्म दिया, कि बची हुई रोटियां विण्डसरके पासवाले अनाथाश्रम और दरिद्रशालाओंमें बांट देना होगी। इस उपायसे अनेक दरिद्रोंकी सहज हीमें आहार-व्यवस्था हो गई। महारानीका रसोईघर एक बड़ा भारी विशाल-भवन है। उसकी बड़ाई कल्पनाके भी बाहर है। मानो अन्नपूर्णका घर है। एक वर्षमें दासदासी समेत एक लाख तेरह हजार मनुष्य राजघरानेमें भोजन करते हैं। इसमें बड़े बड़े बौल-नाच और फ्रासके

भोजनका रोजीना हिसाब न रखा गया। अगर उनको भी गिनें, तो दो लाखसे भी ऊपर आहार करते होंगे।

रूसके मशहूर जार निकोलस इस समय इंग्लैण्डमें आये। सुन्दर सुडौल देह थी, अद्भुत अनिन्द्य कान्ति थी, तो भी निकोलसका हृदय बड़ा कठोर था। उनका व्यवहार बड़ा गंवारी था। ऐसी देहके भीतर इतनी कठोरता रह सकती है, यह बात किसीने स्वप्नमें भी न देखी थी। जार निकोलस घोड़ोंकी सूखी घास बिछाकर शयन करते थे। एक चमड़ेका तकिया उनके पास रहता था। जहां रात रहना होगा, वहीं किसी अस्तबलसे घास लाकर उस तकियामें भरकर तोफा गद्दी बनाकर—उसीके ऊपर महाराज रूस-नरेशकी शयन होती थी। रूस-नरेशका यह अद्भुत तेज देखकर महारानीके कर्म्मचारी खूब हंसे।

परन्तु जार निकोलसने हमारी महारानीका मन मोह लिया। उन्होंने अलबर्टकी सौ मुहसे तारीफ की। जारके मुहसे पतिकी तारीफ सुनकर महारानी सहजहीमें जारकी अनुचरी हो गईं।

इसी साल ६ ठी अगस्तको महारानीके और एक पुत्र हुआ। इसके पहले महारानीको प्रसवकी पीड़ासे कष्ट पाना होता था, परन्तु इस बार कुछ भी पीड़ा न हुई। और इतनी जल्दी पुत्र जन्मा, कि ठीक प्रसवके समय कोई मौजूद न था। नये कुंवरके भूमिष्ठ होनेके ४० मिनिट पीछे विलायतके मशहूर "टाइम्स" अखबारमें यह आनन्द-समाचार प्रकाशित हुआ। अखबार पढ़कर अनेक लोग दशो दिशासे दौड़े आये और नवीन पुत्रका दर्शन किया। इस राजकुमारका नाम पड़ा—अलफ्रेड अरनेष्ट अलबर्ट डिउक एडिनबरा।

डिउक अहिनवराने पीछे इनकी राजकुमारीको विवाह करके दादाके राज्य सेक्सि-कोवर्गका राजत्व लिया। इनकी भांति मितव्ययी तेजस्वी राजकुमार बहुत थोड़े देख जाते हैं।

इस साल महारानी स्काटलण्ड देशमें सैर करने गई थीं। वहां खूब आदर संमान पाकर आमोद प्रमोद समेत लण्डनमें फिर आईं।

फरान्सीसीश्वर लुइ फिलिप १८४४ ई० में विलायत आये। इनके पहले और कोई फरान्सीसी राजा विलायत अङ्गरेजनरेशके साथ मुला-कात करने नहीं आया था। लुइ ही पहले आये।

इस लिये विलायतवालोंने लुइराजाको खूब धूमधामसे आदरपूर्व्वक अतिथि बनाया। प्रिन्स अलवर्ट पोर्टस्मौथमें जाकर राजाका स्वागत करने गये थे। लुइ राजा अलवर्टको विलायती रीत्यनुसार, आग्रह-पूर्व्वक आलिङ्गन करने लगे। गालमें दो चुम्बन दिये। महारानीके साथ भी उतने ही आग्रहके साथ चुम्बन आलिङ्गन किया। लण्डनकी नाना प्रकार दर्शनीय सामग्री देखकर भोज और नाचमें मतवाले होकर दो दिन पीछे यह स्वदेशमें चले गये।

२८ वीं अक्तोवरको रौयेल एक्सचेञ्ज नाम बड़ा सौदागरी आफिस महारानीने स्वयं प्रतिष्ठित किया। लण्डनके लाट मेयर महारानीका स्वागत करनेके लिये खूब पोशाकसे सजे। मार्गमें कादा बहुत होनेसे यह एक जोड़ा खूब बड़ा बूट पांवमें पहन चले। परन्तु महारानीके हुजूरमें इतना बड़ा जूता पहनकर हाजिर होनेका कायदा नहीं है। सो जब महारानीके आनेका समय हुआ, तब बूट उतारने लगे, एक पांवका जूता उतरा, दूसरेका उतरा ही नहीं। ठीक इसी समय

महारानी आकर मौजूद हुईं। तब कातर होकर सड़बड़ सड़बड़ एक पांवमें बूट पहने और दूसरे पांवसे उतारे ही मेयर साहब महारानीके साथ साथ दौड़ते फिरे।

अठाईसवां अध्याय।

प्रिन्स अलबर्टकी बड़ी इच्छा थी, कि रानी विक्टोरियाको साथ लेकर अपने जन्मस्थान रोसेनोमें जाकर कुछ दिन पति पत्नी रहनेकी वासना बड़ी बलवती हुई। परन्तु इंगलण्डेश्वरी तो अब किसीकी गृहिणी होकर नहीं रह सकती। तोभी अलबर्टका शौक मिटानेके लिये उन्होंने इस वर्ष पतिसमेत ससुराल जानेका प्रस्ताव किया। महारानी तो कभी ससुराल गई नहीं, एक बार जाना होगा।

यह प्रस्ताव सुनकर अलबर्टकी दोनों आंखोंमें जलधारा बही। उस सुखमय लड़कपनकी जन्मभूमिमें इस लोकके जीवित देवता पिता अब नहीं हैं। कौन अब हंसते हंसते स्नेहकी दोनों बांहें पसारकर पुत्र और पतोहूको आलिङ्गन करके गृहमें प्रवेश करावेगा। यह बात सोचकर अलबर्टने नयन जलसे छाती भिंगो डाली।

जो हो, सुख दुःख हास्य रोदनमें दोनों जनोंने जर्म्मनी यात्रा की। यथाकालमें अस्टवर्प बन्दरमें प्रवेश करके जर्म्मन राज्यमें प्रवेश किया। पुरुशाके राजा विलियमने खूब धूमधामके आदर संमानसे इनको ग्रहण किया।

पुरुश्याके राजाको बात करनेकी ऐसी एक मीठी मनोहर रीति याद थी, कि अनायास ही वह लोगोंका मन मोह लेते थे। एक दिन भोजके पीछे उन्होंने शराबका ग्लास हाथमें लेकर कहा, "साहबो! एक शब्द हम लोगोंकी जर्म्मन और अङ्गरेजी भाषामें है, जो हम दोनोंके कानमें बहुत मीठा सुनाई देता है। वह शब्द क्या है, जानते हो—विजया (विक्टोरिया)? तीस वर्ष पहले वाटरलूके श्मशान-समान भयानक रणक्षेत्रमें इस शब्दकी मोहिनी शक्तिसे मुग्ध होकर अङ्गरेज और जर्म्मन रणोन्मादसे मत्त हो गये थे। और आज वही शब्द मूर्त्तिमान् होकर विजया-रूपसे हमारे नयनगोचर हुआ है। महारानी विक्टोरिया हमारी मिहमान हुई हैं। आप लोग इस बार सब मिलकर उसी तीस वर्षके पुराने आदर उत्साहसे इनका अभिवादन संमान करें। इनके दीर्घ जीवनकी कामनासे सुरापान करें।" चपल पटु चाटुकरकी भांति पुरुश्या-नरेशके मुहकी यह चारु चटुल चाटूक्ति सुनके महारानीका स्त्रीहृदय सहजमें मुग्ध हुआ। वक्तृताके शेषमें वह उठकर डबडबाई आंखोंसे राजाके पास गई और उनके दोनो गालोंमें दो बोसे देकर अपने आसनपर आ बैठीं।

इसके पीछे महारानीने प्रिन्स अलबर्टके साथ ससुराल जाकर लगभग एक सप्ताह वहीं काटा। विशाल राज्यका रानीपन दूर फेंककर, मन्त्री आदिको छोड़कर राजकाजके कागजात त्यागकर प्रेममयी रसमयी विक्टोरिया स्वामीके साथ साधारण लोगोंकी भांति घर आंगनके काममें मशगूल रहती थीं। घरबार देखना, रन्धन

वगटन करना, खरीद फरोख्त करना, हंसी तमाशे करना—सभी मानो साधारण दम्पतिकी भांति होता था। दोनो जने शामको गलवांही करके सैरको जाते, दोनो जने पास बैठकर गीत गाते, दोनों जने आसनपर नतजानु होकर देवाधिदेव राजाधिराज जगदीश्वरको उपासना करते, दोनो जने आमने सामने बैठकर बाइबल पढ़ते और छोटीसी खिड़कीमेंसे छोटेसी चिड़ियोंकी कलकल सुनकर चुपचाप निस्पन्द रहकर चार आखें एक करके आकाशकी ओर देखा करते थे। विक्टोरिया भूल गई थीं, कि मैं इंगलण्डेश्वरी हूं; अलवर्ट भूल गये थे, कि मैं भूमीश्वरीका पति हूं।

इतना सुख, इतना प्रेम, इतनी देवभक्ति और कहीं नहीं। जीवनके वह सर्व्वसुखमय सात दिन कट गये—कहां होकर कैसे कट गये, किसीने न जाना। इन दिनोंमें दोनोंके खानेका नियम न था, सोनेका प्रबन्ध न था, सैर करनेका समय न था। सात दिन बीत जानेपर दोनोंको फिर विलायत लौट आना पड़ा।

१८४५-४६ सन्में आयरलण्डमें भीषण अकाल पड़ा। महारानीने इस अकालके दिन दुःखी दुरवस्थ प्रजाको सहायताके लिये खूब दान किया। उनकी दरिद्र प्रजाने दोनो हाथ उठाकर और उनको माता कह बुलाकर आशीर्वाद दी।

प्रधान मन्त्री सर रौवर्ट पीलने एकदा इस बार पद त्याग दिया। परन्तु विपक्षके लाट जौन रसेल मन्त्री-सभा गठित न कर सके, इससे पील साहबने फिर प्रधान मन्त्रीका पद अङ्गीकार करके और अन्नके ऊपरका महसूल उठाके विलायतमें बेरोकटोक वाणिज्यका मार्ग खोल

दिया। इस "कौर्न-लौ" पर विलायतमें खूब आन्दोलन हुआ; दोनों दलमें बातोंकी लड़ाई भारी हुई।

इस वर्ष महारानीके एक और कन्या उत्पन्न हुई।

उनतीसवां अध्याय।

भयङ्कर फरान्सीसी गदरके बाद युरोपमें राजा प्रजामें एक अपूर्व द्वेषभाव तुषानलसा धकधक जलता था। प्रजामात्रको ही पक्का खयाल हो गया था, कि राजा स्वेच्छाचारी और अत्याचारी है। प्रजाके धनसे राजाकी देह पुष्ट होती है, राजाका भोगविलास विभव ऐश्वर्य्य बढ़ता है, तोभी राजा प्रजाकी भलाई नहीं चाहता, और करना भी नहीं चाहता। सो राजाको राजगद्दीसे बिना उतारे प्रजाका मङ्गल नहीं। इस भ्रमके वशमें पड़कर युरोपकी प्रजा राजभक्ति भूल गई,संसारकी सुखशान्ति बिसर गई। विशेषत: फरान्सीसी गदरके पीछे प्रजाने समझ लिया था, कि सब प्रजाकी संमिलित शक्तिके आगे राजा धूलिकी रेणुकाकी भांति उड़ जावेगा। प्रजाकी शक्तिको तिल तिल हरके राजा शक्तिमान् हुआ है; उसी शक्तिसमूहको दूर कर देनेसे राजा लंगड़ा, लूला,अपाहज हो जावेगा। युरोपीय-समाजमें जब दु:ख बहुत बढ़ा, जब प्रजा पेटकी आग और दुराशाके मारे पागल हो गई, जब देशके सब दरिद्रोंने देखा, कि राज्यमें केवल राजा और उसके भृत्य लोग खूब ऐश आराम करते हैं, तब कर्त्तव्याकर्त्तव्यके ज्ञानको भूल-

कर प्रजाने गदर मचाया और राजाके बलको तोड़ताड़ डालनेका यत्न किया। फ्रान्समें यह चेष्टा बलवती हुई। अन्यत्र नहीं हुई।

अन्य देशके राजोंने प्रजाका अनुरोध बनाये रखा और अपनी स्वेच्छाचारवृत्तिका विशेष दमन करके और दुष्ट राजकर्म्मचारियोंका शासनमें रखकर प्रजाको शान्त रखनेकी सामर्थ्य पाई। यों राजपाटकी रक्षा तो हुई, परन्तु राजाका जो देवसमान आदर था, सो न रहा। आगे प्रजा जैसे भक्तिविह्वल नेत्रसे राजा और राजशक्तिको देखती थी, फरान्सीसी गदरके पीछे वह बात न रही। अनेक लोगोंने स्थिर कर लिया, कि राजा राज्यका प्रधान नौकर है। प्रजाके मङ्गल होनेके लिये राज्यका स्थापन है, प्रजाके मङ्गल होनेके लिये राजा राजभक्ति चलानेकी चेष्टा करता है, प्रजाको आपत्तिसे बचानेके लिये ही भोजन वस्त्रका क्लेश राजाको अनुभव करना नहीं होता। नहीं तो राजा प्रजा एक ही वस्तु है, उच्चनीच एक भी नहीं है, हो भी नहीं सकता है।

इस प्रकार दानवीय बुद्धिने युरोपके लोगोंके माथेमें घुसकर युरोपीय-समाजको पिशाचका ताण्डवक्षेत्र कर डाला है। पीछे क्या होगा, सो कहना सहज नहीं है। जो हो, १८४८ ई०में प्रजाबलके और एक झोंकेसे फ्रान्स नष्ट प्राय हो गया था। राजा लुइ फिलिपने अपने ओर्लियन्स वंशको फ्रान्सके राजसिंहासनपर चिरस्थायी करनेके लिये यथारीति चेष्टा की। इस चेष्टामें वह प्रजाके उचित और अनुचित अनेक अनुरोध बजा न रख सके। प्रजाको उतने आदरसे न रख सके। सो प्रजापुञ्जके मुंहसे राजा बड़े निन्दित हुए। १८४८ ई० के

फरवरी महीनेमें फ्रान्सकी राजधानी पारी नगरीके अधिवासियोंने गदर करके राजाको हटा देनेका उपाय किया। राजा बूढ़े हो गये थे, तुच्छ राजसिंहासनके लिये नरहत्या करना उन्होंने न चाहा। उन्होंने सहजमें राज्यभार छोड़ दिया और एक दिन छिपे छिपे "जौन स्मिथ" नाम धारण करके इंग्लण्डमें भाग गये।

इस फरान्सीसी गदरकी हवा उन दिनों विलायतको भी लगी। विलायतके "चार्टिष्ट" लोगोंने विप्लव करनेकी सामग्री रच ली थी। प्रजाकी अति वृद्धिसे दुःख नहीं रुक सकता। इंग्लण्डमें विलक्षण प्रजावृद्धि हुई थी। सो दुःखियोंकी संख्या भी खूब बढ़ी थी। युरोपके इन्सान पूर्व्व कर्म्मफल नहीं मानते, कपाललिखितको नहीं जानते, दुःखको सङ्गी बनाकर भगवान्‌का नाम लेते हुए सन्तुष्ट नहीं रह सकते। इसका फल यह होता है, कि दुःखरूपी बिच्छूके तेज डङ्कसे ये मतवालेसे हो जाते हैं। चाहे जिस उपायसे हो दुःख दूर करनेकी चेष्टा करते हैं। जब लोगोंकी दुःख दूर करनेकी चेष्टा वृथा हो पड़ती है, और जब सब उपाय ही विफल हो जाते हैं, तब मूर्ख प्रजापुञ्ज राजाको सब दुःखका मूल समझकर उसे हटा देनेकी चेष्टा करते हैं। विलायतमें रोजाना मजदूरोंको बड़ी तकलीफ हुई थी। मजूरी न मिलती थी; काम न मिलता था। अब भी नहीं मिलता है। इसी लिये भोजन वस्त्र उपार्ज्जन करना कठिन हो गया था। उस समय विलायतके रोजाना रोजीवाले मजदूर और कारीगरोंने मिलकर सोचा, कि राजनीतिक अधिकार उदार होनेसे शायद उनका दुःख दूर हो जावेगा। सो आओ, राजनीतिक आन्दोलन

कर डालें। इस आन्दोलन करनेमें राजविद्रोह होनेका डौल हो गया था। महारानी विक्टोरिया यदि उस भांति प्रजापालिनी न होती, विलायतके प्रधान राजनीतिज्ञ यदि वैसे विवेचक और विज्ञ न होते, तो इस "चार्टिष्ट" गदरका क्या ही भयङ्कर परिणाम होता, सो सोचनेसे भी अब शरीर कांपने लगता है।

रणवीर वेलिङ्टन और अन्यान्य राजभक्त सैनिक पुरुषोंने राज्यमें शान्ति बनाये रखनेके लिये विशेष यत्न किया था। उनके बन्दोबस्तके गुणसे "चार्टिष्ट" लोग कोई हानि न कर सके। परन्तु आन्दोलनके मूल मन्त्रपर पीछे जोसेफ ह्यूम साहबने पार्लिमेण्टमें विशेष आन्दोलन किया और राजनीतिक अधिकारके प्रसारमें कुछ कुछ क्रतकार्य्य भी हुए।

तीसवां अध्याय।

युरोप और इंग्लण्डमें इस विषम विप्लवके समय महारानीकी चौथी कन्या राजकुमारी लुसे जन्मी। इन्होंने जवान होकर स्काटलण्डके प्रधान डियुक आरगाइलके ज्येष्ठ पुत्र मार्क्विस लौर्नसे विवाह किया। प्रजातुल्य जमींदारको पति बनाना राजकुमारीके लिये कम मानसी शक्तिका परिचायक नहीं है!

इस बार पहले ही ५वीं सितम्बरको महारानी स्काटलण्डका वालमो-रोल कासल देखने गईं। यह भवन लाट एवर्डीनसे खरीदकर महा-रानीने उसे अपना न्यारा वासस्थान बनाया। वालमोरलके चारो

और मनोहर दृश्य है। देखनेसे नयन मोहित और मन मोहित हो जाते हैं। यहां महारानीने अलवर्टके साथ बहुत सुखके दिन काटे।

बालमरोल देख आकर महारानीने नवेम्बरमें समाचार पाया, कि उनके विश्वासी पुराने मन्त्री लार्ड मेलवोर्न मर गये हैं। वह मेलवोर्नकी म्टत्युसे विशेष शोकित हुई। मेलवोर्न उनके प्रथम प्रधान मन्त्री, उनके शिक्षादाता और ज्ञानदाता थे। वही मेलवोर्न यह लोक छोड़ गये। अब मुलाकात न होगी, इसी चिन्तासे महारानीका स्नेहशील हृदय पीड़ित हुआ।

बहुत दिनोंसे महारानीको आयरलण्ड देखनेकी इच्छा थी। राज-काजकी बहुतायतके मारे वह वासना पूरी न होती थी। इस बार अगष्ट मास सन् १८४८ ई०में प्रिन्स अलवर्टको साथ लेकर आयरलण्ड देखने गईं। समुद्रके किनारेके सब बड़े बड़े बन्दर देखकर वह आयर-लण्डकी राजधानी डवलिनमें गईं। यहां महारानीके दर्शनके लिये जितनी भीड़ हुई थी, शायद इतनी आगे कहीं नहीं हुई थी। जिस दिन वह डवलिन छोड़कर लौटी, उस दिन समुद्रके तटपर इतनी भीड़ हुई, कि उसका वर्णन करना असाध्य काम है। जहाज़की नीचली मञ्जिलमें महारानी दो सहेलियोंसे बातचीत करती थीं; लोगोंकी भीड़ देखकर वह रह न सकीं। दौड़ती दौड़ती जहाजके पहियेके पास जाकर छतके ऊपर चढ़ गईं। जहां अलवर्ट थे, वहीं उनकी गर्दनमें दाहिना हाथ डालकर और बांये हाथसे सफेद रूमाल लेकर उड़ाने लगीं। उनकी इस शक्तिको देखकर प्रजा विस्मित हुई और "महारानीकी जय"ध्वनिसे दिङ्मण्डल कम्पित कर डाला।

इस बार विलायतमें हैजा महामारी आई। महारानीने इस भयङ्कर महामारीसे प्रजाकी रक्षाके लिये यथासम्भव नाना प्रकारका यत्न किया। प्रत्येक गिरजेमें उपासना हुई और प्रत्येक गांवमें अस्पताल हुआ। भगवान्‌की कृपासे महारानीने प्रजाकी बहुत हानि न की।

राजा चतुर्थ विलियमकी पत्नी रानी एडिलेड, हमारी महारानीकी ताई इस वर्ष लोकान्तरवासिनी हुई। रानी एडिलेड महारानी विक्टोरियाको जीसे चाहती थीं। उनके सन्तान न थी, परन्तु विक्टोरियापर वह कन्यासे भी अधिक प्रेम करती थीं।

१८५० ई०की १ली मईको महारानीका सप्तम पुत्र जन्मा। उस दिन डियुक अव वेलिङटनका जन्मदिन था। इसीसे राजकुमारका नाम पड़ा "अर्थर विलियम पट्रिक अलवर्ट डियुक कनौट।"

इस समय आयरलण्डमें एक बार गदरकी हिलोड़ उठी। मिचेल, मीघर और स्मिथ ओब्रायिन नाम तीन आयरलण्डवासी राजविद्रोहके अपराधमें मुकद्दमेके लिये अदालतमें पकड़े आये। तीन जनोंमें दो जने सबूत न मिलनेसे छोड़ दिये गये। केवल मिचेल अपराधी साबित होकर चौदह वर्षके लिये दीपान्तरित हुआ। इस विचारके पीछे आयरलण्डके लिये खास विद्रोह आईन पास हुआ।

इकतीसवां अध्याय।

जब प्रधान मन्त्री पील राज्यशासन करते थे, तब महारानीने उनसे कहा, कि प्रिन्स अलवर्टका जैसा उच्च सम्बन्ध है, समाजमें उतना उच्च पद नहीं है। युवराज प्रिन्स वेल्स यद्यपि अलवर्टके पुत्र हैं, परन्तु सामाजिकताके देखे युवराजकी इज्जत आवरू ज्यादा है। कोई बड़ा दरबार हो तो युवराज प्रथम आसन पावेंगे, विदेशी बड़े बड़े राजदूत संमुख आसन पावेंगे, परन्तु प्रिन्स अलबर्ट महारानीके पीछे राजसिंहासनकी आड़में बैठनेका आसन पावेंगे। कोई विदेशी बड़ा राजा आवे, तो गृहस्वामी होकर भी उनकी प्रधानता न रहेगी। सो प्रिन्स अलवर्टको एक उपाधि देकर उच्चपदारूढ़ करना चाहिये। महारानीने कहा, कि प्रिन्स अलवर्टको "राजा और रानी भर्त्ता" कहना चाहिये। प्रधान मन्त्रीने इसपर आपत्ति की और कहा, कि विदेशीको अङ्गरेज लोग राजा उपाधि देनेमें कभी राजी न होंगे। यह प्रस्ताव पार्लिमेण्टमें करनेसे लोग पागलवत् हो जावेंगे। प्रिन्स अलवर्टकी जो थोड़ी बहुत इज्जत आवरू है, सो भी नष्ट हो जावेगी। महामति पीलने इसी लिये भांति भांतिके छल छन्द करके, अनेक लोगोंकी सलाह लेके प्रिन्स अलवर्टको "प्रिन्स कन्सर्ट" या रानी-भर्त्ताकी पदवी दिला दी। और सब दरबारमें सबसे ज्यादा उन्हींकी प्रधानता अधिक रहे, उसकी भी व्यवस्था कर दी। परन्तु पार्लिमेण्टमें निर्द्धारित हुआ, कि यह पदवी महारानीके जीवनतक ही कायम रहेगी। जो हो, महारानी इस व्यवस्थासे विशेष सन्तुष्ट न हुईं, तो भी असन्तुष्ट न रह सकीं।

प्रिन्स अलबर्टके उपाधिका गोलमाल चुक जानेपर, उन्होंने सुकुमार शिल्पसभाके मेम्बरोंके साथ सलाह करके एक विराट अन्तर्जातिक प्रदर्शनीका बन्दोबस्त करना आरम्भ किया। १८५१ ई० की १ली मईको लण्डन नगरके हाइडपार्क मैदानमें यह बड़ी नुमाइश खोली गई। प्रदर्शनीका भवन विलायतके विख्यात शिल्पी सर जोसेफ पैक्स-टनने बनाया था। यह भवन नखशिखसे काच और लौहपत्रसे बनाया गया था। इससे पहले विलायतमें ऐसी नुमाइश भी कभी हुई न थी, नाना देशोंके लोग लण्डननगरमें खाली तमाशा देखनेके लिये भी यों कभी आये न थे। पृथ्वीमण्डलके स्थान स्थानकी अद्भुत अपूर्व्व सामग्री भी यों एक स्थानमें कभी एकत्रित न हुई थी। जिसने उसे देखा, वही मुग्ध हुआ। और जब सबने समझा, कि यह अपूर्व्व व्यापार प्रिन्स कनसर्टके उद्योगसे सिद्ध हुआ है, तब आगेकी सब बात भूलकर इंग्लण्डवासी लोग अलबर्टको वास्तविक राज-भक्ति दिखाने लगे! नुमाइश खोलनेके दिन राजघरानेके सभी लोग एकत्र होकर एग्जिबिशनके भवनमें गये। प्रायः साढ़े पांच महीने नुमाइश खुली रही इन दिनोंमें प्रदर्शनी देखनेके लिये लगभग १२ मनुष्य गये। और दर्शनी टिकटका लगभग एक करोड़ रुपया जमा हुआ। इस टिकटके रुपयेसे नुमाइशका सब खर्च निकालकर कुछ लाभ भी हो गया था।

इस वर्ष हनोवरके राजाका देहान्त हुआ। यह इंग्लण्डनरेश तृतीय जौर्जके पञ्चम पुत्र थे। कूणगिरि-देशहितैषी तेजस्वी लुइ कसूथ इसी वर्ष औष्ट्रीय-नरेशके अत्याचारसे छुटकारा पाकर विलायत भाग

आये। उनके आगमनसे लण्डनपुरी मानो विक्षुब्ध हो उठी। उतना बड़ा वाग्मी शायद इन दिनों इस जगत्में और उत्पन्न नहीं हुआ।

परन्तु इस वर्षकी सर्व प्रधान घटना हुई फ्रान्समें लुइ नेपोलियनका राज्यभार ग्रहण करना। उन्होंने सेनाकी सहायता, चतुरता और विश्वासघातसे फरान्सीसियोंको मोहकर लुइ फिलिपके त्यक्त सिंहासनको फिर अधिकृत कर लिया। १८४८ ई०के पीछे फरान्सीसियोंमें साधारण तन्त्रकी व्यवस्था चल गई। परन्तु साधारण तन्त्रके मुख्य पुरुष योग्य और निपुण न थे। इसी लिये वे शासनगुणसे फरान्सीसी लोगोंको मोहित न बना सके। लुइ नेपोलियन महावीर नेपोलियों बोनापोर्टके भतीजे थे। पहले इन्होंने जबरदस्ती फरान्सीसी साधारण तन्त्रका प्रधान पद अधिकृत किया, पीछे मशहूर कर दिया, कि यह प्रधानता यावज्जीवनव्यापिनी रहेगी। शेषमें जगत्में प्रचारित कर दिया, कि मैं फ्रान्सका महाराज हूं।

१८५२ ई० में विलायतमें बहुत दैवविपत्ति घटी। "अमेजन" और "बर्कनहेड" नाम दो जहाज समुद्रमें डूब गये और लगभग एक हजार मनुष्य डूब गये। बिलबरी नाम जलका हौज फट गया, उससे दो गांव बह गये। महारानी इन दुर्घटनाओंसे विशेष व्यथित हुईं। चन्दा करके लगभग डेढ़ लाख रुपया जमा किया और घरबारहीन लोगोंको सहायता दी।

जब्हनके आमोद आह्लादसे मत्त होकर महारानीकी तन्दुरुस्ती कहीं न बिगड़ जावे, इसी लिये मामा लियोपोल्डने इन्हें दूसरे स्थानमें

चले जानेकी सलाह दी। परन्तु आगेसे ही महारानी बड़ी सावधान हो गई थीं।

अगष्ट महीनेमें महारानी वालमोरलको चली गईं। वहां स्वामी स्त्री दोनोंने खूब सामान्य लोगोंकी भांति गृहस्थी चलाई। दोनो एक साथ मछली पकड़ते थे, पहाड़के पास टहलते थे, साथ साथ खेलते थे। सेना सामन्त कोई भी साथ न रहता था। स्वामी स्त्री दोनो घने सन्ध्या होनेके आगे वालमोरल गांवके दीन दरिद्रोंके झोंप-ड़ेमें जाते थे, उनके दुःखकी वात सुनते और जहांतक हो सकता, उसे दूर करनेकी चेष्टा करते थे।

एक दिन दोनो जने वेष वदलकर दूर सैर करने गये थे। मार्गमें अचानक दृष्टि आई। ऐसा कोई योग्य स्थान न था, कि वर्षासे रक्षा मिले। पर थोड़ी दूरपर एक छोटीसी झोंपड़ी पाकर दोनो जने उसकी और हाथ पकड़कर दौड़े। आधे भींजे कपड़ोंको लिये हुए बुढ़ि-याकी झोंपड़ीमें घुस गये। बुढ़िया तो गुस्सेके मारे लाल हो गई। ऐसे बुरे अवसरपर यह कौन आकर मेरी कुटीमें घुस आया? परन्तु अलवर्ट तो छोड़नेके नहीं, वह जबरन विक्टोरियाको घरमें खींच ले गये। आग जलाई और महारानीके भींगे कपड़े सुखा दिये। वर्षा वन्द न हुई, धीरे धीरे अन्धेरा होने लगा। रानीको थोड़ासा भय हुआ। मार्ग जानते नहीं, कहांसे इस खटरागमें आ पड़े, सो मालूम नहीं। अव घर कैसे लौटेंगे? अलवर्टको भी अकेला न लौटने दूंगी, अपनी पहचान भी न वताऊंगी और बुढ़ियाको नाराज भी करूंगी। अलवर्टके मनमें भी खूब भय हुआ। साथमें किसी भांतिका हथि-

थार नहीं, लाठी टूट गई है, जेबमें जो पैसा था, सो खर्च हो गया है, कोई उपाय नहीं, जो इस विपत्तिसे बचें। इधर बुढ़िया लगातार चबर चबर करके बक रही है। बकती भी थी और मिहमानकी सेवा भी कर रही है। डोकरीने कहा, "अरी, तू इस मरदुवेके साथ क्यों भाग आई है? मरदुवा तो खूब बदमाश है? आप तो सोलह आना सुख लेगा और लुगाईको दुःखमें डालेगा। अहो बेटी! तुम्हारी होसी एक मेरी लड़की एक जहाजी कप्तानके साथ न जाने कहां चली गई। यह छोकड़ा क्या जहाजी कप्तान है? अरी तू कौन है?" विक्टोरिया ये बातें सुनती थीं और मन्द मन्द मुसकाती थी। इतनेमें दो सवार उस झोंपड़ीमें आये और महारानीको देखकर झुकके सलाम की तथा उन्हें साथ ले गये। बूढ़ी तो आश्चर्यके मारे मुंह बाये रह गई।

बत्तीसवां अध्याय।

१८५२ ई०की १६वीं अगस्टको महाशूरवीर डिउक वेलिङ्टनने शरीर छोड़ दिया। विलायतके प्रधान वीर चले गये।

इस वर्ष महारानीकी अष्टम सन्तान और चतुर्थ पुत्र प्रिन्स लियोपोल्डने जन्म लिया। बेलजियमनरेश मामा लियोपोल्डके नामसे नये कुंवरका नाम रखा रखा गया। इस वर्ष महारानी और एक बार आयर्लैण्डके डबलिन नगरमें गई। लण्डनमें लौट आकर देखा, कि युरोपके पूर्व्वप्रान्तमें महायुद्धका घनघन गर्ज रहा है। रूस और

राजराजेश्वरी विक्टोरिया।

सेनापतिके वेषमें महारानी।

तुरुष्कमें युद्ध छानिकारक उद्योग हो रहा है। अङ्गरेज और फरान्सी-सियोंने बीचमें पड़कर तुरुककी रक्षा करना चाही। सो रूसको अङ्गरेज और फरान्सीसियोंसे भी युद्ध करना पड़ा। यह महायुद्ध क्रिमियन युद्ध नामसे इतिहासमें लिखित है। रूसके अन्तमें रूसकी हार हुई और तुरुककी स्वाधीनता ज्योंकी त्यों रही। इस युद्धमें अङ्गरेज और फरान्सीसियोंने अद्भुत बहादुरी दिखाई। बालाक्ला-वाका युद्ध, सिवाष्टोपलका अवरोध, रेडनका आक्रमण,—ये कई एक मामले क्रिमियन युद्धके लेखनीय वर्णन हैं। इस क्रिमियन युद्धमें मिस मेरी नाइटिङ्गेलने स्कटरीमें विशाल अस्पताल बनाकर जखमी सिपाहि-योंकी सेवा की थी। मिस नाइटिङ्गेलकी भांति परदुःखकातर, शुश्रूषा-परायण स्त्री खूब कम देखी गई है। इस युद्धमें अङ्गरेजोंके जिम्मेके काममें बहुत टूट हुई थी। सिपाहियोंके लिये विलायतसे जो जूते भेजे गये थे, ठेकेदारने जो जूते तय्यार किये थे, उनको रणभूमिमें सिपा-हियोंने पहनकर देखा, तो सभी एक पांवके जूते, बांये पैरके जूते हैं। इस भांति नाना प्रकारकी कुप्रबन्धता हुई थी।

महारानी इस युद्धके समय विशेष पीड़ित और चिन्तित रहती थीं। क्योंकर सिपाही लोग सुखमें रहेंगे, क्योंकर उनके भोजन वसनमें कोई कष्ट न होगा, क्योंकर जखमी बहादुरोंकी यथारीति सेवा होगी,—महारानी दिन रात यही सोचती थीं, और जिससे सुप्रबन्ध होवे, उसकी ओर चित्त लगाती थीं। रणक्षेत्रस्थ अङ्गरेज सेनापति लाट रेगलनको महारानीने लिख भेजा था,—"सेनापति साहब, विशेष सावधानी रखिये, जिससे तुम्हारे अधीन सिपाही लोगोंको निष्फल कष्ट

न सहना होवे। सेना यदि वृथा केवल क्लेशभोग ही करेगी, तो महा-
रानी विशेष पीड़ित होंगी। अवश्य ही समर-भूमिका जो अनिवार्य्य
दुःख है, सो तो होगा ही। परन्तु आशा, बिना विचारे सेनाके लिये
कोई नया दुःख न उपजे।"

महारानीके पाससे ऐसी चिट्ठी पाकर सेनापति साहबको खूब
सावधानीसे काम करना पड़ा।

लाट एबरडीन जब प्रधान मन्त्री थे, तब क्रिमियन युद्ध आरम्भ
हुआ, पर लाट पामरष्टनने युद्धका काम खतम किया। इस समय
मरे हुए सिपाहियोंकी विधवा स्त्री और अनाथ बालकोंकी सहायताके
लिये लण्डन नगरमें पानीके रङ्गकी तसवीरें बिकीं। महारानीकी
पन्द्रह वर्षकी पुत्री जेठी कुमारीने एक सुन्दर तसवीर खींचके बेची,
वह तसवीर बहुत ऊंचे दामोंपर बिकी।

क्रिमियन युद्ध शेष होनेपर फरान्सीसी महाराज और उनकी पत्नी
इंगलण्डमें आईं। सम्राट नेपोलियनके भतीजे लुइ नेपोलियन मैत्री
करनेके इरादेसे कभी इंगलण्डेश्वरीकी मिहमानी अङ्गीकार करेंगे, यह
किसीने स्वप्नमें भी नहीं देखा था। महावीर नेपोलियन अङ्गरेजोंके
चिरशत्रु थे; अङ्गरेज-नरेश तृतीय जौर्जके साथ उन्होंने शेषतक
दुश्मनी साधना न छोड़ा। वाटरलू-समरक्षेत्रमें अङ्गरेज वीर वेलिङ्-
टन हीने नेपोलियनको हरा दिया। उसी महाशत्रुके "भतीजे"
नेपोलियन तृतीय जौर्जकी पौत्री राजराजेश्वरी विक्टोरियाकी मुलाकात
करनेको आवेंगे, यह एक प्रकारका अपसार स्वप्न है।

जो हो, महाराज आये, उन्हें राजोचित आदर सत्कारसे विण्डसर

राजमहलमें ले आये। महारानी विक्टोरिया उन्हें देखते ही आगे दौड़ी और युरोपके राजव्यवहारके अनुसार उनका आलिङ्गन किया और उनके दोनों कपोलोंको दो बार चूमा। फरान्सनरेशने यथारीति महारानीका हाथ चूमके आलिङ्गनका बदला चुकाया। इस चुम्बनके लिये महारानीकी थोड़ीसी निन्दा हुई। इन नेपोलियनके साथ नाचते नाचते महारानीने कहा, "क्या ही ताज्जुब है। मैं तृतीय जॉर्जकी पोती होकर अङ्गरेजोंके प्रधान शत्रु वीर नेपोलियनके भतीजेके साथ वाटरलू नाम घरमें नाचती हूं। तिसपर यही नेपोलियन दीन हीन दरिद्रावस्थामें इंग्लण्डमें रहता था; उन दिनों मैं महारानी थी।" कृतकार्य्य और सफलमनोरथ पुरुषोंका सभी अपराध छिप जाता है।

२१ वीं मईको महारानीने लण्डन नगरकी प्रधान छावनी हौर्सगार्ड्समें जाकर बहादुर जखमी सिपाहियोंको बहादुरीके इनामकी तरह स्मारक तमगा अपने हाथसे दिया। हरेक जखमी सिपाहीको बुलाकर मीठी बातोंसे सम्भाषण करके महारानीने सबको खुश किया।

इस वर्ष महारानी अपने स्काटलण्डस्थ ग्रीष्मावास बालमोरलको जाकर संसारके सुख्य सुखसे सुखी हुईं। उनकी पहली कन्या इस समय पन्द्रहवीं वर्षमें पैर रख चुकी थीं। प्रुशियाके तत्सामयिक राजाके भ्रातुष्पुत्र प्रिन्स फ्रेडरिक विलियम विलायतमें सैर करने आकर परदेशमें हृदय खो बैठे। महारानीकी ज्येष्ठा कन्याके नवयौवनकी जोर जुवारमें पड़कर वह पागल हो गये। महारानीसे लाचार उन्हें कहना पड़ा, कि मैं तुम्हारा जेठा जमाई होना चाहता

हूं। संसारके हिसाबसे लड़कीका विवाह करना बड़े सुखका काम है। महारानी भी इतने दिन पीछे इस सुखकी भागिनी हुई। पन्द्रह वर्षकी कन्याका विवाह आज कल विलायतमें शायद कभी कभीही होता है। अब तो "वाईस" पूरे हुए विना विवाहकी फिकर भामिनियोंके माथेमें नहीं बैठती।

१८५६ ई०के जनवरी महीनेमें रूसके साथ सन्धि हुई। इसी साल महारानीकी पांचवीं कन्या और शेष वा नवमी सन्तान जन्मी। इसका नाम पड़ा प्रिन्सेस बियेट्रिस। इन्होंने पीछे वाटन वर्गके प्रिन्स हेनरीसे विवाह किया। आजकल विधवा होकर विलायतमें रहती और बूढ़ी माताकी सेवा शुश्रुषा करती हैं।

क्रिमियन युद्धके समय महारानीने सिपाहियोंकी अद्‌भुत बहादुरीका इनाम देनेके लिये विक्टोरिया क्रौस नाम पदवीकी नई श्रेणी चलाई। जो तोपें क्रिमियन युद्धमें काम आई थीं, उनमेंसे कुछ एकको गलाकर यह विक्टोरिया क्रौस बना। विक्टोरिया क्रौस अङ्गरेज वीरोंकी बड़ी आदरणीय सामग्री है। विक्टोरिया क्रौस पाकर अङ्गरेज वीर और सब मान संमानोंको तुच्छ समझता है।

इस क्रिमियन युद्धभयके समय वलनटेर वा शौकीन सेना तय्यार हुई। विलायतमें घनेरी शौकीन सेना बनी। आगे चार्टिष्ट गदरके समय इसकी पहली बुनियाद पड़ी थी।

तेतीसवां अध्याय।

इंगलण्डकी महारानी होके, त्रिभुवनकी चिन्ता माथेपर धरके भी महारानी पुत्र पुत्रियोंको यथारीति पालन करना न भूलीं। वह नित्य राजकुमार और राजकुमारियोंका पहनाव-ओढ़ाव देखती थीं, नित्य खाना पीना देखती थीं। इतने दासी दासी, इतने नौकर चाकर थे, परन्तु महारानी जबतक लड़के वालोंके अशन-वसनकी खोज तलाश न कर लेती थीं, तबतक उन्हें नींद न आती थी। लड़के लड़कियोंका पढ़ना लिखना किस भांति चलता है, वह खुद देखती थीं। फुरसत मिलनेपर वह स्वयं उनको पढ़ाती थीं। क्योंकर लड़कोंको धर्म्मकी शिक्षा अच्छी मिले, क्योंकर लड़कोंका अच्छा स्वभाव और भली प्रकृति हो, महारानीको दिन रात यही चिन्ता थी। किसीको भी कभी चुपचाप नहीं बैठने देती थीं। चाहे खेलो, चाहे पढ़ो लिखो, यह हुक्म था। जब लड़के ओसबर्न महलमें रहते थे, तब महारानी और अलबर्ट लड़कोंके पास बहुत समय विताते थे। अलबर्टने लड़के और लड़कियोंके खेलनेके लिये एक खिलौनेका बगीचा तय्यार करा दिया था। वे लोग हरेक लिखना पढ़ना हो जानेपर अपने अपने बांटमें जाकर मट्टी खोदते थे, कियारी काटते थे, फूलके पेड़ोंकी सेवा करते थे, जमीनमें खाद डालते थे। छोटे छोटे फावड़े, कुदाल और खुरपे वगैरह मालीके अन्यान्य हथियार राजकुमारोंके वर्त्तनेके लिये खरीद कर लिये गये थे। बड़े माली और परखनेका काम करते थे स्वयं पिता अलबर्ट। राजकुमार लोग बड़ी खुशीसे पिताकी आज्ञाके

अधीन रहकर मालीका काम सीखते थे। इस मालीपनका इम्तं-हान होता था, इम्तहानमें पास होनेसे इनाम दिया जाता था। राजमहलमें जो हेडमाली था, वह राजकुमारोंके कामका हिसाब रखता था। किसने कितनी मट्टी खोदी, कितने पेड़ सींचे, कितनी खेती नराई—इस सबका हिसाब रहता था। उस हिसाबके अनु-सार हरेक राजकुमारको मजूरी बांटी जाती थी। वे मजूरीका पैसा पाकर अपने अपने बागकी शोभा बढ़ाते थे।

इसके सिवाय रस्सी बंटने और मोचीपनका काम करना भी राजकुमारोंको सिखाया गया। कोई सन्दूक गढ़ता था, कोई कुरसी बनाता था, कोई लोहा पीटता था। इन छोटे छोटे कामोंसे लेकर किला बनानातक लड़कोंको सिखाया गया। वे जूता बनाना, कपड़ा सीना, बाग लगाना बन्दूक चलाना, जानते हैं, दुर्गस दुर्गनिर्माणका गुण भी सीखे हुए हैं। इसके अलावह हरेक बालक सात आठ भाषा जानता है, हरेकने पृथ्वीके सब देशोंमें भ्रमण किया है, विज्ञान-रसायन, जीवतत्व, उद्भिदतत्व सभी जानते हैं। व्यवहारमें सब बालक अतीव शान्त, विनयी और कष्टसहिष्णु हैं। यही तो सच्ची शिक्षा है।

राजकुमारियोंकी ऐसी शिक्षाका अलग बन्दोबस्त था। हरेक कन्याके व्यवहारके लिये एक एक रसोईघर था। सवेरे ही लिखने पढ़नेके पीछे आहारादि करके अपनी रन्धनशालामें जाकर रांधनेको बैठती थीं। जो पुत्री जो वस्तु पकावेगी, वह तीसरे पहर वही खानेको पावेगी। जो रांध न सकेगी, वह खानेको भी न पा सकेगी। एक

बड़ी बावर्चिन राजकुमारियोंको रन्धन सिखाती थी। हर रोज महारानी इस लड़क-खेल रसोईघरमें आकर कौन कैसे रांधती है, सो देख जाती थीं। सन्ध्याके समय जो राजकुमारी हिसावसे अधिक रांध सकती थी, उसे इनाम दिया जाता था। एक दरजी लड़कियोंको कपड़ा काटना और सिलाई करना सिखाता था। जो अच्छा गौन तयार करती थीं, वह महारानीसे उसका दाम पाती थी। महारानीकी लड़कियां सीना पिरोना, ऊन बुनना, तसवीर खींचना, मूर्त्ति बनाना, गाना और रन्धन करना खूब अच्छा जानती हैं। राजाकी पुत्रियां होकर भी वे स्वहस्तसे रन्धन करके दस लोगोंको खिलाना बहुत ही आनन्दकर समझती हैं। गृहस्थीका तो इतना काम हुआ, तिसपर हरेक राजकुमारी ही विदुषी बहुभाषावेत्री और बहुविद्यापारङ्गता है। यह कह देना भी अच्छा है, कि लड़कियां नौवेल नाटक नहीं पढ़ने पाती थीं और केवल चुपचाप बैठकर भी नहीं रहने पाती थीं।

यह नहीं था, कि इनमें लड़कोंकीसी नटखटी न हो। सभी खूब दुष्ठ थे। दो एक बात सुनावेंगे। एक दिन एक बुढ़िया महलकी दीवारोंपर अलकतरा पोत रही थी; महारानीकी बड़ी लड़की और युवराज दोनों जनोंने मिलकर उस बुढ़ियाके मुहपर अलकतरा लगा दिया। अलवर्टने खबर पाकर दोनो जनोंको खूब धमकाया और बुढ़ियासे क्षमा मांगनेके लिये दोनों जनोंको भेज दिया, हमारे युवराज हमेशा नटखट लड़के रहे, किसीको भी मानते न थे, परन्तु मा बापका बाघके समान भय करते थे। क्रिमीय युद्धके पीछे जब महा-

रानी सेनापतिकी वर्दीमें फौजकी कवायद कर रही थीं, तब दुष्ट पुत्रने एक सेनापतिके मुंहपर थूक दिया? सेनापतिने उसे न पहचानकर एक थप्पड़ लगा दिया। महारानी इसकी खबर पाकर सेनापतिके ऊपर नाराज न हुईं, पर खुश हुईं। बड़ी पुत्री "विकी" बड़ी चञ्चल नटखट लड़की थीं; एक दिन मा बेटी टहलने गईं। तेरह चौदह वर्षकी कन्या सायके सिपाहियोंसे नटखटी करके बड़प्पन दिखाती थी। महारानीने आंखके इशारेसे दुष्ट लड़कीको बहुत समझाया, पर उसने न माना। पर जान बूझकर अपना रूमाल फेंक दिया। तुरन्त पांच जवान पांच ओरसे घोड़ेपरसे उतरकर रूमाल उठा लानेके लिये दौड़े। महारानीने रूखे स्वरसे कहा, "आप लोग रह जावें। हमारी लड़की खुद जाकर धरतीपरसे रूमाल उठा लावेगी। जाओ, विकी, रूमाल उठाओ।" विकी अब क्या करे, अपनासा मुंह लिये जाकर रूमाल उठा लाई। इतना कड़ा हुक्म था, अच्छी शिक्षापर इतनी तेज निगाह थी। राजाका लड़का होनेसे आदरका ठिकाना न रहेगा, यह महारानी कभी नहीं जानती थीं। जैसे साधारण लोगोंके लड़के लिखना पढ़ना सीखते हैं, काम काज सीखते हैं, वैसे ही रा-जेश्वरीके लड़के बाले भी कामकाज और लिखना पढ़ना सीखते थे। मालूम होता है, विलायतमें भी कभी किसीने इस भांति लड़के लड़-कियोंको शिक्षा नहीं दी। इसी शिक्षाके गुणसे महारानीके लड़के बाले बुरे चरित्र और बुरे शौकके लालची नहीं हैं। इसी शिक्षाके गुणसे इस बुढ़ापेमें महारानी पुत्रपुत्रियोंके साथ सुखसे समय काटती हैं। खाने पीनेके लिये राजकुमार और राजकुमारियोंको कभी पसन्द नहीं

सुनी जाती थी। अच्छा खावेंगे, अच्छा पहनेंगे, यह शौक कभी किसीको नहीं हुआ। मोटा महीन खाना, सादी सीधी पोशाक,— इन्हींसे छटनेभरी पुत्रपुत्रियोंको लेकर निर्विघ्न रहती हैं।

हमारे देशके बाबू लोग इस मामलेको जरा मन लगाके विचारें, तो अच्छा है।

चौतीसवां अध्याय।

२५ वीं जनवरी सन् १८५८ ई०में महारानीकी बड़ी लड़कीका विवाह हुआ। इस विवाहके दिन महारानी और अलवर्ट खूब सज बजके गिर्जाघरमें गये। लड़कीका विवाह है,—दोनोंके मुंह हंसीसे और पेट सुखसे भरे हैं। परन्तु तोभी न मानो एक विषादकी छाया हंसीभरे मुखपर आ पड़ी है। इतनी प्यारी लड़कीको विवाहके साथ विदाकर देना होगा, इसी कारणसे दोनो जने पीड़ित थे।

महारानी इस समय हिन्दुस्थानकी मशहूर मणि कोहेनूर पहनकर आई थीं। महारानीके निजके विवाहमें शायद इतनी धूम नहीं हुई थी, जितनी इस वार उनकी ज्येष्ठ पुत्रीके विवाह हुई। जमाई थे प्रुशियाके राजाके भतीजे ; आगे यही प्रुशिया राज्यके मालिक और युरोपके महाबलोंमें परिचित हुए। कुल शील मानमें जहांतक ऊंचा होना होता है, वहांतक थे।

२ री फ़रवरीके दिन कन्याको ससुराल भेज दिया। उस वर-

कन्याको विदाके दिन महारानी रोते रोते व्याकुल हो गईं। बड़े कष्टसे उन्होंने अपनी प्यारी पुत्रीको विदा किया। अलबर्ट और युवराज "विकी"के साथ साथ जाकर ग्रेवसण्ड गांवतक पहुंचा आये।

इस साल अगष्ट महीनेमें अलबर्टके साथ महारानी और एक बार फ्रान्समें गईं! वहां नये महाराज नेपोलियनने खूब आदर संमान करके इनसे भेंट की। युवराज प्रिन्स वेलस भी इस बार थे। खूब नाच तमाशा हंसी दिल्लगी करके सब लोग विलायत लौट आये।

कई एक सप्ताह विलायतमें विश्राम करके ये लोग फिर युरोपकी सैर करनेके लिये निकले। जब डसेलडर्फ नगरमें थे, तब अलबर्टने समाचार पाया, कि उनके पिताके समयका बहुत पुराना नौकर "कार्ट" मर गया। यह दुःखभरी खबर सुनकर अलबर्ट आंसू न रोक सके। आठ वर्षकी उमरसे "कार्ट"ने अलबर्टको बड़ा किया था। "कार्ट" छायाकी भांति अलबर्टके पीछे जाता था, पुत्रकी भांति अलबर्टको प्यार करता था, आज वही "कार्ट" मर गया। इस संसारमें "कार्ट"की बराबर सुखमें सुखी और दुःखमें दुःखी अलबर्टके लिये कोई न था। लगभग आठ दिन अलबर्ट "कार्ट"के शोकमें रोते रहे। दोनो आंखोंकी जलधारासे उनकी छातीका कपड़ा भींग जाता था। "कार्ट" नाम लेते लेते वह व्याकुल होकर रोने लगते थे। बड़ी कन्या "विकी"के आकर बापके पास खड़ी होनेसे अलबर्टका शोक किसी प्रकार दूर होता था। रेलवे ष्टेशनपर खड़ी होकर एक फूलोंका हार महारानीकी गाड़ीमें आकर राजकुमारीने पिता माताको बड़ी तसल्ली दी।

महारानीको इस समय खबर मिली, कि कन्या गर्भिणी है। यह

सुखका समाचार पाकर भी कन्याके लिये बड़ी चिन्तित हुईं। शौक यह हुआ, कि प्रसवकालमें मैं स्वयं पास रहूंगी। क्योंकर पास रहकर पुत्रीको छुटकारा दूं, इसकी विशेष चेष्टा की। परन्तु पुरुश्या राज्यका उत्तराधिकारी जन्मेगा, राज्यके प्रधान कर्म्मचारी क्या राजकुमारीको स्वतन्त्र स्थानमें रहने देंगे? उन्हें पुरुश्या राज्यमें ही प्रसव करना होगा, पुरुश्या भूमिमें सन्तान धर्त्ती पड़ेगी। ये सब बातें सुनकर महारानीने कहा, "मैं मा हूं, मातृवेदना जो है उसे मैं जानती हूं। मा होना कितना कष्टमय है, उसे भी मैं समझती हूं। मेरी लड़की सन्तान प्रसव करके सबको निश्चय आनन्दित करेगी, परन्तु वह पीड़ाके समय जब मा कहके पुकारेगी, तब मैं कहां रहूंगी; मैं तो पास रह नहीं सकती।" माताका मन बड़ा मोहल होता है, महारानी सब समझकर भी नासमझकी भांति अनुरोध करने लगीं। जो हो १८५९ ई॰की २७ वीं जनवरीको महारानीकी प्रथम दौहित्री जन्मी; महारानीकी उमर जब चालीस वर्षकी थी, तब नानी हुईं। उनकी कन्या तब १९ वर्षकी थीं। इस बार अलवर्ट और महारानी डोकर डोकरी बने; दौहित्री हुई।

उसी साल जर्मनीके हेसिडर्मष्टडके प्रिन्स लुइ विलायतमें टहलने आकर राजकुमारी आलिसके प्रणयसूत्रमें बंध गये। दोनो युवक युवतीने सलाह करके प्रीतिकी बात जाकर महारानीको कही; अवश्य ही वह भी राजी हो गईं। परन्तु उनकी इच्छा थी, कि कुछ दिन और भी आलिसको पास रखें। विधाताने पीछे यह इच्छा पूरण भी की।

१८६१ ई० में महारानी और अलवर्टके विवाहकी इक्कीस वर्ष पूरी हुई। इस उत्सवमें खूब भोजन पान हुआ। हमारे युवराज इस वर्ष कमब्रज विश्वविद्यालयकी परीक्षामें पास हुए।

इस साल महारानीने एक बड़ा शोक पाया। उनकी मा डचेस केण्ट ७६ वर्षकी बूढ़ी हुई थीं। उनका शरीर जराग्रस्त हो गया था। वह अब बहुत दिन बचेंगी नहीं, यह सब समझ गये थे। अचानक एक दिन उन्हें कम्पज्वर हुआ। इस भयङ्कर ज्वरके समाचार पाकर महारानी अलवर्ट और आलिसको लेकर शीघ्र ही फ्रोगमोर गांवको गईं। उस दिन सारी रात महारानी मरती हुई माकी खाटकी पट्टीपर बैठकर सेवा करती रहीं। दूसरे दिन सवेरे धीरे धीरे बूढ़ी मा यह लोक छोड़कर चली गईं। महारानी माताका हाथ पकड़कर रोने लगीं। कहां जाती हो मा, कहके चिल्लाने लगीं। जो मा विक्टोरियाके लिये एकाधारसे पिता माताके समान थीं, जो मा विक्टोरियाका भला चाहती हुई जगत्को भूलकर कन्याको पालती थी, जो मा विक्टोरियाको गोदमें बिठाकर सब दुःख भूल जाती थी, जो मा अनन्त कष्ट सहकर विक्टोरियाको अच्छी शिक्षा देती थी, आज वही मा आंख मूदकर कहां चली गई। भुवनेश्वरी होकर विक्टोरिया आज उस माका हाथ पकड़े रह न सकी, केवल साधारण स्त्रियोंकी भांति रोते रोते छाती भिगोने लगी। अलवर्टने आकर धीरे धीरे उन्हें गोदमें बिठाकर दूसरे कमरेमें ले जानेकी चेष्टा की, परन्तु विक्टोरियाने लड़कीकी भांति आकर मरी माका हाथ पकड़ लिया। "विकी"का नाम लेनेमें जिस माके मुहसे लाला टपकती थी,

स्नेहसे आंखोंमें आंसू आते थे, उसी माके दोनो हाथ पकड़कर विक्टो-रिया खूब रोई। इस रोनेका माने कुछ जवाब न दिया। पूरा हुआ, आंज, जगन्माता विक्टोरियाका मा कहना पूरा हुआ। पूरा हुआ ब्रिटनेश्वरी विक्टोरियाका कन्या बनकर लाड़प्यार दिखाना इस वार पूरा हुआ।

पैंतीसवां अध्याय।

अब एक वार भारतके इतिहासपर निगाह करना होगी।

भयङ्कर काबुलकी लड़ाईके पीछे लाट एलिनवरा कुछ दिन और भी वड़े लाटके पदपर अधिष्ठित रहे। गवालियरका गदर दवाकर वह विलायत चले गये। उनके स्थानमें मशहूर योद्धा सर हेनरी हार्डिञ्ज वड़े लाट होकर आये। उन्होंने आतेही पञ्जावके खालसा सिख लोगोंके साथ भयङ्कर युद्ध किया। अङ्गरेजोंके पराक्रमके आगे सिख लोग हट गये। अङ्गरेजोंने लाहौर दखल किया, पर वड़े लाट हार्डि-ञ्जने सिखोंके हाथसे पञ्जाव देश न छीन लिया। दिलीपसिंहको लाहौरकी गद्दीपर विठाकर वहां सर हेनरी लौरेन्सको राजप्रतिनिधि वनाके रखा। हार्डिञ्ज भारतमें शान्ति करके विलायत चले गये। उनके पीछे जवान लाट डलहौसी वड़े लाट वनकर आये। रण-जित् सिंहकी रमणी चान्दकुमारीके अत्याचारसे पीड़ित होकर खालसा सिख सेना फिर पागल हो उठी। मुलतानमें मूलराजने गदर किया, दो अङ्गरेज मारे गये, देशमें हाहाकार मच गया। लाट डलहौसीने

पञ्जाबपर चढ़ाई की। लाट गफ अङ्गरेजी फौजके बड़े सेनापति थे। चिलियांवालाके घोर युद्धमें अङ्गरेजोंको कुछ कुछ हटना पड़ा। पीछे गुजरातके युद्धमें सिखोंकी शक्ति चर्ण विचूर्ण करके लाट डलहौसीने पञ्जाब देशको अङ्गरेजोंके अधिकारमें कर लिया।

लाट डलहौसीने अवधके बादशाह वाजिद अली शाहको राज्यसे हटा दिया, सितारेका राज्य छीन लिया, झांसीका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें शामिल कर लिया। नागपुरके भौंसलोंका विशाल राज्य योग्य दत्तक पुत्रको न दिया। यह छीन छानकर अङ्गरेजोंका राज्य बढ़ाकर चले गये। इनके पीछे लाट कानिङ बड़े लाट होकर आये।

भयङ्कर सिपाहीविद्रोह लाट कानिङकी अमलदारीमें हुआ। पृथ्वीपर शायद इतना बड़ा गदर और कभी नहीं हुआ था। शायद पृथ्वीपर इतने निष्ठुरभावसे नरनारियोंकी हत्या इसके पहले किसी मनुष्यने नहीं की थी। हिमालयसे लेकर कुमारीतक इस गदरने सारे हिन्दुस्थानको कंपा डाला। मानो अङ्गरेजोंका राज्य अब जानेको हुआ। जो हो, भगवानकी कृपासे गदरकी आग ठण्डी हुई। देशमें फिर शान्ति हुई। इस गदरमें अङ्गरेजोंकी तरफ हैवलौक, औटराम, लाट क्लाइव, रौस वगैरह महायोद्धोंका यश चारो ओर फैल गया। इन्हींके वीरत्व और सर हेनरी लौरेन्स और सर जौन लौरेन्सके धीर शासनके गुणसे अङ्गरेजोंने फिर हिन्दुस्थानका राज्य पा लिया।

इतने दिनोंतक हिन्दुस्थानका शासन करनेकी व्यवस्था सौदागर अङ्गरेजोंकी कम्पनीके हाथमें थी। इस गदरके पीछे महारानीने स्वयं भारतका शासनभार लिया। उन्होंने भारतराज्य लेते

समय एक अपूर्व घोषणा प्रचारित की थी। हम लोग नहीं जानते, कि किसी देशकी विजयशालिनी जातिकी ओरसे कभी ऐसी घोषणा प्रकाशित हुई है, कि नहीं। महारानीने कहा था, कि जाति धर्म और वर्णकी विशेषता छोड़कर गुणके अनुसार भारतके शासनमें वह भारतवासी प्रजागणको समान अधिकार देंगी। कभी किसी कारणसे वह किसी प्रजाके धर्ममें हस्तक्षेप न करेंगी और जितने गदर करनेवाले हैं, सभीको माफ करेंगी।

यही १८५८ ई०की घोषणा भारतवासियोंके भरोसेकी स्थली, अन्धेकी लाठीकी भांति है। राजनीतिक अधिकारोंके प्रसारकी कामना आदि जो कुछ है, सो इसी भित्तिके ऊपर अधिष्ठित है।

इसके पीछे हिन्दुस्थानके बड़े लाटको राजप्रतिनिधिकी पदवी मिली और भारतवर्षमें उनको राजोचित संमान दिया गया।

छत्तीसवां अध्याय।

मनुष्य जो भविष्यत् नहीं जान सकता, मनुष्य जो भावी सुख दुःखकी कोई बात नहीं जान सकता, यह मनुष्य मात्रके लिये कितना मङ्गलकर है, सो कहनेकी आवश्यकता नहीं। हटनेश्वरी त्रिभुवनविदिता महारानीके भाग्यमें क्या है, सो यदि वह जान सकती, तो चाहे राजपट्ट छोड़कर अलबर्टके साथ वनवासिनी हो जाती। परन्तु मङ्गलमय भगवान्की अपार करुणासे मनुष्य जान बूझकर भी विपद नहीं जान सकता। महारानी न भी जान सकी।

इन दिनों अलबर्टको न जाने क्या अम्लशूलकी भांति रोग हुआ। कभी कभी पेटमें भयङ्कर पीड़ा होने लगती थी, व्यथाके मारे छटपटाने लगते थे, पीछे जो सो दवा खाकर थोड़ा बहुत दरद कम कर लेते थे। खाना पीना कुछ भी हजम न होता था। देहका बल भी दिन दिन घटता जाता था।

अनेक प्रकारकी विपद अलबर्टके माथेके ऊपर टल गईं, भगवान्की कृपासे सभी विपत् झेल लीं। एक दिन घोड़ेपर चढ़कर सैर करने गये चलते चलते घोड़ा भड़क गया और एक बागके भीतर दौड़ने लगा। अचानक एक दरखतकी डाल माथेपर लगनेसे अलबर्ट गिर पड़े। इसीसे बच गये, नहीं तो उस दिन प्राण जाता। और एक दिन कोबर्गकी सड़कपर वह चार घोड़ोंकी गाड़ीमें जाते थे, अचानक चारो घोड़े भड़ककर ऊर्द्ध्वश्वाससे दौड़े। सामने रेलकी सड़क थी। रेलका फाटक बन्द था, रेल जोरसे आती थी, उस फाटकमें धक्का लगनेके पहले ही अलबर्ट कूद पड़े। उनके साथ पांव नाक कट गये। पर और किसी प्रकारका साङ्घातिक घाव न पाया। एक घोड़ा मर गया, और तीन न जाने कहां भाग गये। अलबर्टको पड़ा देखकर कर्नेल पनूसनवी दौड़े आये। और प्रिन्सको उठा ले जाना चाहा। अलबर्टने कहा, कि मुझे ले जानेके पहले मूर्च्छित कोचमानको ले जाओ। उनके हुक्मसे पहले कोचमान ही उठाया गया। महारानीने यह समाचार पाकर अलबर्टको मङ्गलकामनाके लिये ईश्वरकी प्रार्थना की।

पर अलबर्टके लिये इतनी मङ्गलकामना करनेपर भी अमङ्गलकी

छाया धीरे धीरे उनके ऊपर आ गई। जितना देहको सहता था, उससे ज्यादा परिश्रम अलबर्टको करना होता था। अलबर्ट राज्यके सब काम महारानीकी ओरसे करते थे। "प्रिन्स कनसर्ट"की उपाधि पाकर महारानीके चिरस्थायी मन्त्री बने थे। इसके सिवाय राजपरिवारका सब भार उनके ऊपर था। तिसपर राज्यके अनेक ऊपरी काम भी उन्हींको करना पड़ते थे। महारानीकी मा डचेस केण्ट महारानीको सब सम्पत्ति दे गई थीं, उस सम्पत्तिका बन्दोबस्त अलबर्टके ही ऊपर पड़ा था। अलबर्ट एक थे, पर सौ होकर सब काम सुन्दररूपसे चलाते थे। चलानेसे क्या हो, देहमें तो इतना परिश्रम सहनेकी शक्ति न थी। अम्लशूल, नसोंकी कमजोरी आदि दुरारोग्य रोगोंने धीरे धीरे उन्हें आकर घेर लिया। धीरे धीरे वह बल खोने लगे, धीरे धीरे उनकी भूख कम होने लगी, धीरे धीरे अरुचिने आकर जकड़ लिया। उनमें यह बड़ा दोष था, कि वह रोगको तुच्छ समझते थे। जवानीमें देह पुष्ट बलिष्ठ थी, यह समझकर रोगको वह कभी गिनते न थे। उसे छोड़कर आजकल उन्हें कैसी एक सुस्तीसी हो गई थी। कोई काम भला न लगता था, किसी बातमें मन न लगता था। वह सदा ही कहा करते थे, "जीते रहनेकी अब मुझे इच्छा नहीं है। मुझे सदा यही इच्छा है, कि तुम सब जीती रहो, पर मेरे जीवनका कोई भरोसा नहीं है। मैं अगर यह समझ लूं, कि जिनको मैं प्यार करता हूं, उनकी रक्षाका अच्छा बन्दोबस्त हो गया है, वे आगे कोई कष्ट न पा सकेंगे, तो मैं हंसते हंसते मर सकता हूं—कल ही मर सकता हूं। अपने सुख—सुखके लिये मैं

बचनेकी इच्छा नहीं कर सकता।" महारानी अलबर्टकी यह बात सुनकर कांपने लगीं। मन मनमें स्वामीकी मङ्गल-कामनाके लिये भगवान्से प्रार्थना की। यह बात सुननेके दिनसे महारानीके प्राण मानो हारे हुएसे रहने लगे। अचानक ही वह चौंक उठती थीं, और मनको समझा बुझाके ठण्डा करती थीं। समझाती थीं, कि यह सब भ्रम है, मेरा अलबर्ट चङ्गा है। मैं राक्षसी हूं, क्या देखती हूं? और क्या आंखोंके सामने है। अलबर्ट चङ्गा ही रहेगा—चङ्गा ही है। यह कुछ भी नहीं, साधारण कमजोरी है। इस भांति मनको ताड़ना देकर मनको समझा लेती थीं।

सैंतीसवां अध्याय।

दिन दिन अलबर्टका मिजाज कैसा कुछ चिड़चिड़ासा होने लगा। कोई काम भला न लगता था, किसीकी बात प्यारी न लगती थी,—सब बात और सब कामोंसे चिढ़ थी। लोग अलबर्टका यह क्रोध भाव देखकर ताज्जुब करते थे। साथ ही नितान्त जिद्दी भी होने लगे। जिस कामके करनेकी ठान लेते थे, वह सौ बाधा विघ्न होनेसे भी करते थे। शरीर खराब था, बाहरकी ठण्डी हवा खानेको सब लोगोंने मना किया, तौ भी फौजकी कवायद देखने गये। खूब कमजोर थे, तोभी गिरजेमें प्रार्थना करने गये। वहां बारम्बार घुटनोंके बल बैठने और उठनेसे तथा बड़ी देरतक एकासन बैठे रहनेसे उनका

शरीर और भी खराब हो गया। १ली दिसम्बर सन् १८६१ ई०को पहले ज्वर आया। साधारण झुरझुरीका बुखार था। नाड़ीमें भली भांति मालूम भी न होता था, इस चोर ज्वरकी बात सुनकर महारानीके प्राण धर्रा गये। उन दिनों पुर्तगाल देशमें बड़ा वातकफ-विकार हुआ था। पुर्तगाल-नरेशके घरानेके अनेक लोग इस विकारसे लोकान्तरित हुए थे। इसी डरसे महारानीने अलवर्टको पूछा, "तुम्हें क्या ज्वर आया है?" उन्होंने जवाब दिया, "नहीं तो ज्वर होनेसे क्या बचूंगा?" महारानीने ईश्वरका स्मरण करके मन स्थिर किया। पर बड़े वजीर लाट पामरष्टनका मन भी कांपने लगा। उन्होंने और भी एक डाक्टर बुला लिया। डाक्टर तो आने लगे, पर अलवर्टके ज्वरने पिण्ड न छोड़ा। आठो पहर हलका बुखार रहता था। भूख काम हो गई, सब चीजोंसे अरुचि हुई, नींद न रही—ये तीन बुरे लक्षण दिखाई दिये। कुछ न खानेसे देह खूब दुबली हो पड़ी; वह अब बिछौनेसे न उठ सकते थे। एक बार ही शय्याशायी हुए। डाक्टर लोगोंने समझा, मामला खराब है, थोड़ा ज्वर और भोजन बन्द रहनेसे साक्षात् धन्वन्तरि भी हों, तो बीमारीको नहीं हटा सकते।

इस समय पुत्री आलिस अलवर्टके पास बैठी रहती थी। राजकुमारी पिताको सन्तुष्ट रखनेके लिये नाना भांतिकी पोथियां पढ़कर सुनाती थी, कितनी ही कहानी कहती थीं, कितनी मीठी मीठी बातें बोलती थीं। जैसे छोटे बच्चेको बहलाया करते हैं, उसी तरह बहलाकर आलिस पिताको कुछ खिलाती पिलाती थीं। अलबर्ट भी

छोटे लड़कोंकी भांति आलिसकी बात मान लेते थे। इतने दिनोंतक अलवर्टने अपने कपड़े न उतारे थे और किसीको उतारने भी न देते थे। आलिसने ही मीठी बातें कहकर पिताकी देहसे कपड़े उतरवा लिये। ८ वीं दिसम्बरके दिन अलवर्टको एक और भी बड़े कमरेमें उठा ले गये। दैवकी ऐसी ही व्यवस्था है, इसी कमरेमें राजा चतुर्थ विलियम और चतुर्थ जौर्जने देहत्याग की थी। एक पियानो बाजा उस घरमें रखा गया। आलिस बापके हुक्मसे धर्मके भजन गा गाकर पिताको प्रसन्न रखती थी। दिन रात पिताके पास बैठकर पिताकी सेवा करनेमें आलिस कभी कष्ट न समझती थीं, कभी न थकती थीं।

इतवार आया। इस जगतमें अलवर्टका शेष इतवार आया। उस इतवारको और सब उपासना करनेके लिये गिरजाघर गये। अलवर्टने आलिससे कहा, "माई, मेरा बिछौना एक बार जङ्गलेके पास ठेल ले चलो। मैं एकबार आकाश देखूंगा—उस आकाशमें सफेद सफेद बादल क्योंकर लीन हो जाते हैं, सो ही देखूंगा। वह नील आकाश फिर कहां देखनेको मिलेगा, वह सोनेके रङ्गकी सूर्यकिरणें फिर आंखोंको न गर्म करेंगी; उस आकाशकी गोदमें बैठी हुई छोटी छोटी चिड़ियोंका मधुर शब्द फिर कानोंको तृप्त न करेगा। बेटी, जन्मभरके लिये आकाश देखनेको मेरा बिछौना खिड़कीके पास सकेल दो।" पिताकी ऐसी बातें सुनकर आलिस रोने लगी। रोते रोते पिताकी शय्या ठेलकर जङ्गलेके पास ले गईं। ऊंची निगाह करके खुली खिड़कीसे असीम अनन्त नील आकाश देखकर अलवर्टने दीर्घ श्वास ली। और करुण मुखसे कहा, "बेटी, कुछ गीत गाओ, अपने मीठे कण्ठसे

ईश्वरकी भक्तिभरी रागिणी अलापो। मैं कानसे भगवान्‌का नाम सुनूं, आंखसे स्वर्गके सिंहासनपर भगवान्‌का अद्भुत रूप निहारूं।" आलिस गीत गाने लगी, अलबर्टने धीरे धीरे दोनों आंखें मूदकर हाथ जोड़े और देवादिदेवकी उपासनामें लीन हुए। आलिसने भजन शेष करके देखा, अलबर्ट आंखें मूदे चुपचाप न हलते हैं, न करवट लेते हैं। ज्योंही उठकर पास जाकर देखा, त्योंही अलबर्टने पांवकी पैछर सुनकर मलिन मुखसे जरा हंसकर आलिसको देखा। आलिस बोली, "बापू, तुम क्या सो गये थे?"

अलबर्टने मुस्काकर कहा, "नहीं माई, मैं सोया नहीं। कुछ ध्यान कर रहा था, उस ध्यानमें बड़ा आनन्द था।"

महारानी आठो पहर अलबर्टके पास आया करती थीं, पर सेवाका भार योग्य कन्या होने लिया था। उन्हें स्वामीकी सेवा न करना पड़ती थी। पर वह बिछौनेपर बैठकर अलबर्टके माथेके बाल सम्हाल देती थी, पीठपर हाथ फेर देती थीं, थोड़ी बहुत जरूरी सेवा किये बिना भी नहीं रह सकती थीं। आलिस बाहर चली जाती थीं, तो विक्टोरिया खुद ही सेवा करती थीं और किसीको छूने भी न देती थीं।

परन्तु रोग किसी भांति न घटा। धीरे धीरे विकारके सभी लक्षण प्रगट हुए। और भी दो डाक्टर इलाजके लिये बुलाये गये। पर किसीसे कुछ न हुआ।

अलबर्टको सेज कण्टकसी मालूम होती थी। बिछौनेपर पड़े पड़े स्थिर नहीं रह सकते थे। केवल विक्टोरियाके पास रहनेसे चुप रहते

थे। विक्टोरियाके गालपर हाथ रखते थे, बालोंको हाथसे सुलझाते थे और धीरे धीरे कहते थे, "मेरी प्यारी सङ्गिनी, मेरे सुखकी स्त्री।" विक्टोरिया स्वामीकी शय्यापर बैठ कर रो न सकती थी; रोगीको स्थिर रखनेके लिये सूखे मुहसे हंसती थी।

१२ वीं दिसम्बरको श्वासका लक्षण हुआ। १३वीं के सवेरे डाक्टर जेनर महारानीसे छिपाव न कर सके, वह रोग तो अब असाध्य हो गया है। विक्टोरिया दौड़कर स्वामीके कमरेमें जा हाजिर हुईं, देखा अलबर्टके चेहरेका रङ्ग फीका हो गया है, मौतकी काली रेखा मानो धीरे धीरे आंखके कोयोंपर आती जाती है। महारानी सबको छोड़कर स्वामीके पास आ बैठीं। सब लड़के बाले एक एक करके पिताके पास आने लगे; मरते हुए पिताका हाथ चूमा, हृदयपर हाथ रक्खा, मुहके ऊपर नरम नरम हाथ रखा। महाघोर निद्रामें पड़े हुए अलबर्टको कुछ भी न मालूम हुआ। इस समय प्रलाप भी तेज हुआ, दोनो आंखोंके तारे ऊपर चढ़ गये। केवल महारानी उस समय पछाड़ खा कर अलबर्टपर जा गिरीं। "कहां जाते हो? हमें अकेला छोड़कर कहां जाते हो?" तभी अलबर्टने जरा हंसकर आंख खोली, महारानीने कहा, "मैं तुम्हारी प्यारी विक्टोरिया हूं, क्या सुझे हो?" मलिन मुखसे शेष हंसी हंसकर अलबर्ट महारानीकी बांहोंमें ढल पड़े और धीरे धीरे गालोंपर एक चुम्बन दिया।

इस समय अलबर्टको खूब पसीना आया। वह मृत्युका पसीना है, यह सबने समझा। महारानीने जाना, शायद ज्वर उतर रहा है। शेषमें जब देखा, कि काल पास आ गया, तब अलबर्टके दोनो

हाथ पकड़कर ऊंचे नेत्र करके भगवान्‌को पुकारा। भगवान्‌का अन्त-तपूर्ण नाम सुनते सुनते धीरे धीरे अलबर्टका प्राणपक्षी देह-पिञ्जर खाली कर गया।

तेतालीस वर्षकी उमरमें अलबर्ट चले गये। इतनी प्यारी विक्टो-रियाको अकेला छोड़कर, लड़के लड़कियोंको अनाथ करके, देशके लोगोंको रुलाकर देवतास्वरूप अलबर्ट चले गये। अब नहीं आवेंगे—अब नहीं हंसेंगे—अब पुत्रपुत्रियोंके साथ आमोद प्रमोद न करेंगे। अङ्गरेजोंकी महारानीके प्यारे पति होकर भी मृत्युका हाथ न रोक सके। चले गये। हमारी चिरसुखिनी प्यारी महारानीको विषम वैध्य-व्यकी लौहशृङ्खलामें बंधना पड़ा।

अड़तीसवां अध्याय।

सब बीत गया,—इस संसारके सब सुखोंका सुस्वप्न इस बार टूट गया। जिसे लेकर सुख है, जिसके लिये सुख है, महारानीके सो नहीं रहा। राज्येश्वरी होकर भी वह विधवा हुई। सब सुखोंसे सुखी होकर भी वह सब विषयोंसे वञ्चित हुईं।

२३ वीं दिसम्बरको अलबर्टकी अन्त्येष्टि किया हुई। जहां इंग्ल-ण्डके सब राजोंको कबर मिलती है, वहीं मृतककी रथी पहुंचाई गई। हमारे युवराज प्रिन्स वेल्स भाई आर्थरको साथ लेकर पीछे पीछे जाने लगे। पर दोनो भाई रोते रोते जाते थे। राजाके लड़कोंको

रोता देखकर राहके राहगीर भी रोकर अस्थिर हुए, जब उपासना होने लगी, तब दोनो भाई दोनो जनोंका गला पकड़कर आपसमें फूट फूटकर रोये। कोई किसीको सान्त्वना न कर सकता था। शेषमें जब उपासना शेष हुई, लाशका सन्दूक कबरमें उतारा गया, तब देशकी रीतिके अनुसार युवराजको एक मुट्ठी मट्टी बक्सके ऊपर डालना पड़ी। यह मट्टी फेंकनेके समय युवराज एक बार ही बेसुध हो गये। उन दोनो भाइयोंको घर लौटा लाना मुश्किल हो गया। शेषमें किसी तरह बालकोंको घरमें लाये, तब महारानी पितृहीन लड़कोंको कलेजेसे लगाकर केवल रोने लगीं। रोते रोते कहने लगीं,—"मुझे 'विक्टोरिया' कहनेवाला कोई न रहा। मा गई, स्वामी भी चले गये—लड़कपन और जवानीके सभी सङ्गी चले गये।"

इस समय "हर्टली"की कोयला खानिमें दबकर दो सौ चार नर-नारी मर गये। महारानीने लिखा था, अनाथ बालक बालिका और विधवा स्त्रियोंके दुःखको मैं जितना समझ सकती हूं, उतना और कोई न समझेगा।

इस समयसे ही महारानीके सुखसंसारमें शोककी छाया आ पड़ी। एक एक करके अनेक चले गये।

राजकुमारी आलिसका विवाह पीछे किसी भांति शेष किया गया। महारानी कन्यादानके समय मौजूद थीं। जब जेठ सक्सि-कोबर्गके डिउक अर्नेष्टने कन्यादान किया, तब महारानी रोने लगीं।

राजराजेश्वरी विक्टोरिया॥

उनतालीसवां अध्याय।

संसारमें रहकर सभी शोक भूलना पड़ते हैं। एकलौते पुत्रका शोक भी भूलना पड़ता है, स्वामीका शोक भी सम्हालना पड़ता है। महारानी भी मनके भीतरकी सब आग मन हीमें रखकर यथारीति राजकार्य्य करने लगीं।

पर इस समय एक बड़े सुखकी घटना हुई। ज्येष्ठ पुत्र राज्यके अधिकारी प्रिन्स वेल्स इच्छानुसार कामिनी पसन्द कर आये। डेन्मार्कके राजाकी कन्या राजकुमारी अलखजन्दरा बड़ी रूपवती मशहूर थीं। वैसी सुन्दरताकी छटा, वैसी शोभाकी बहार उन दिनों शायद युरोपमें किसी युवतीके न थी। उस अनोखी सुन्दरी अलखजन्दराको विवाह करनेके लिये युवराज विलायतमें लाये। अलवर्टने जीते जीते इस प्रेमकी बात सुनी थी और यह स्थिर कर लिया था, कि यहीं लड़केका विवाह करेंगे।

अलखजन्दरा राजकुमारी विलायतमें आईं। विलायतके लोगोंने बड़ी धूमधाम और आग्रहसे उनका स्वागत किया। महारानी नई पतोहू पाकर सब शोक भूल गईं। मानो थोड़ा सुखी हुईं।

परन्तु जिस दिन विवाह हुआ, उस दिन युवराजको अकेले खड़े देखकर महारानी रोईं। आज पिता अलवर्ट जीते रहते, तो वही पुत्रके पास खड़े होकर सब काम करते। अङ्गरेजोंके युवराजने अनाथकी भांति अकेले कन्या ग्रहण की। यह देखकर महारानीके और सब लड़केवाले हाथकी फूल मालामें मुह छिपाकर रोने लगे। रोनेसे

कहीं अमङ्गल न हो, यह सोचकर महारानीने बड़े कष्टसे आंसू पी लिये।

विवाह हो गया। युवराज पत्नीको लेकर "औसवर्न" महलमें मधु-मास काटनेके लिये चले गये। विलायतके सभी बड़े नगरोंमें रोशनी हुई।

अङ्गरेजोंकी रीतिके अनुसार अब युवराज माके पास न रह सके। परिवार लेकर अलग रहनेका बन्दोबस्त किया। लण्डन शहरके मार्लबरा महलमें रहना निश्चित हुआ और गांवमें रहना चाहें, तो सण्ड्रिङ्गममें रहें।

इस समय फ्रौगमोर नाम गांवमें अलवर्टके स्मरणचिह्नरूपसे एक अपूर्व्व समाधि-मन्दिर बनाया गया। यह मन्दिर बनानेमें प्रायः चालीस लाख रुपया व्यय हुआ। महारानी हरसाल दिसम्बर महीनेमें इस समाधि मन्दिरमें जाकर अलवर्टके उद्देश्यसे उपासना आदि करती है। वह जिस दिन मरे थे, राजपरिवारमें उस दिन कोई कुछ विषय कर्म्म नहीं करने पाता।

८ वीं जनवरी सन् १८६४ ई०को युवराजपत्नी अलखजन्धराके अचानक गर्भपीड़ा हुई। वह अन्तःसत्वा थीं, पर मार्चके पहले पुत्र होनेकी कोई सम्भावना न थी। यह जानके प्रसवके लिये कोई बन्दोबस्त ही न किया। जो हो, राजकुमारीके पुत्र जन्मा। अष्टमासका लड़का है, सो कुछ पीछे खराबी न होवे, इस लिये महारानीने स्वयं सेवा करके पौत्रको बचाया। लड़का बच गया। महारानीने कभी मनमें भी न सोचा था, कि मैं पौत्रका मुंह इतनी जल्दी देखूंगी।

पौत्रका मुह देखकर वह सब शोक भूल गईं। पौत्रका नाम रखा प्रिन्स अलबर्ट विक्टर। पर दैवका ऐसा कठोर लेख है, कि महारानीका इतने काठका पाला हुआ पौत्र अलबर्ट पीछे महारानीको रखकर यह संसार छोड़ा गया।

बेलजियमराज लियोपोल्ड।

१८६५ ई० की ९वीं दिसम्बरको महारानीके मामा बेलजियम नरेश राजा लियोपोल्डने देह छोड़ दी। उन दिनों उनकी उमर छहत्तर वर्षकी थी। महारानी मामाके शोकसे एकबार अवसन्न हो गईं।

बेलजियमके राजा लियोपोल्ड हमारी महारानी विक्टोरियाके

मामा थे। वह खूब लिखना पढ़ना सीखकर रूसकी फौजमें सेनापति हुए। सन् १८२० में उन्होंने अङ्गरेजराज-कुमारी सारलटसे विवाह किया। सारलटके मर जानेपर इन्होंने केरोलाइन वाउरको व्याह किया। सन् १८३१ के जून महीनेमें बेलजियमके राजा हुए।

चालीसवां अध्याय।

अलवर्टकी मृत्युके पीछे महारानीने कोई साधारण काम न किया। कहीं बाहर भी न गईं। पर सन् १८६६ में उन्होंने स्वयं पार्लिमेण्ट खोलकर हुक्म पढ़ा। २० वीं मईको उन्होंने केनसिङ्टनके कबरस्थानमें शिल्प और विज्ञानका एक भवन प्रतिष्ठित किया। इस भवनका नाम पड़ा "अलवर्ट-हौल। अलवर्ट तो नहीं रहे, पर अलवर्टका सब राजकाज युवराज करने लगे। महारानीने कहा, अब मैं किसी काममें मन स्थिर नहीं रख सकती। पर प्रिन्स वेलस पिताके सब काम करने लगे, इसमें मैं बड़ी खुश हुई।

इस समय पुरुशाकी महारानी विलायत आईं। तुर्क सुलतान भी आये। सुलतानके चले जानेपर महारानीने अलवर्टका जीवन-चरित लिखके चार्लस डिकेन्स नाम विलायतके प्रधान लेखककी दिया। एक पत्र लिखा,—"विलायतकी अति तुच्छ लेखिकाका बड़े प्रधान लेखकको उपहार भेजा जाता है।"

१८७१ ई० में युवराजको बड़ा रोग हुआ। जीनेकी आशा न

रही। शेषमें भगवान्‌की कृपासे सब मङ्गल हुआ। युवराजको ४१ दिन बड़ी बीमारी रही, जिससे पिता मरे थे। महारानीने पुत्रकी मङ्गलकामनार्थ परिवार-समेत गिरजेमें प्रार्थना की। सब अङ्गरेजोंने भी प्रार्थना की। उस दिन इंगलण्डमें सभी काम बन्द रहा।

इकतालीसवां अध्याय।

इन दिनों फरान्सीस-नरेश नेपोलियनने अङ्गरेजोंकी बराबरी करनेके लिये किसी युद्धका होना चाहा। इसी समय हयेनजलेरन-वंशी प्रिन्स लियोपोल्डको स्पेनका राजा बनानेकी बात हुई। स्पेनकी रानी इसाबेला राज्य छोड़ चुकी थीं। फरान्सके नरेशने कहा, मैं लियोपोल्डको स्पेनका राज्य न मिलने दूंगा। यह सुनकर पुरुशियानरेशने कहा, अब युद्ध न रुकेगा। युद्ध खूब हुआ। हारकर फरान्सनरेश नेपोलियन कैद हुए। उनकी राजधानी पारी अवरुद्ध हुई। उनकी पत्नी यूजिनी पुत्रको साथ लेकर विलायत चली गईं। शोकमें कुछ दिन पीछे नेपोलियन भी मर गये।

इस युद्धमें जर्म्मनीके युवराज फ्रेडरिक विलियम अर्थात् हमारी महारानीके जमाईने खूब वीरता दिखाई। फरान्सके आलसास और लोरेन नाम दो देश जर्मनीने छीन लिये। पुरुशियाके राजा विलियम सब जर्म्मनीने छीन लिये। पुरुशियाके राजा विलियम सब जर्म्मनीके राजा हुए। फरान्सीसी लोगोंने साधारण तन्त्र चलाया। इस घोर युद्धमें महारानीकी ज्येष्ठ पुत्री और राजकुमारी आलिसने जर्म्मनीमें

जखमी सिपाहियोंकी खूब सेवा की इन्हीं दिनों राजकुमारी लुइसाने जमीन्दार मारक्विस अव लोर्नसे विवाह किया। आगे राजपुत्री प्रजातुल्य जमीन्दारोंसे विवाह न कर सकती थीं। पर महारानीने यह कानून चलाया। पीछे युवराज प्रिन्स वेल्सकी मंझली पुत्रीने स्काटलण्डके जमीन्दार डियुक फाइफसे विवाह किया।

इन्हीं दिनों आयरलण्डवालोंने गदर किया। घर जलाये, हत्या की, कैदियोंको छोड़ दिया। आयरलण्डमें आईनकी कड़ाई हुई। महामन्त्री ग्लडष्टोनने इसका विरोध किया। पर सिद्ध काम न हुए।

१८७५ ई०में प्रिन्स वेल्स हिन्दुस्थान आये। पहले डियुक एडिन-बरा आये थे। उन दिनों लाट नौर्थब्रुक बड़े लाट थे। इनके पीछे इनके मृत पुत्र प्रिन्स विक्टर भारतवर्षमें आये थे। १८७७ ई० में महा-रानी कैसर हिन्द हुईं। दिल्लीका दरबार हुआ। लाट लिटनने कई बातें कहीं। इसी साल मन्द्राजमें घोर अकाल पड़ा।

बयालीसवां अध्याय।

१८७८ ई० में महारानीकी प्यारी कन्या आलिस लोकान्तरित हुईं। उन्हें डिप्थिरिया रोग था। उन्होंने चार सप्ताह पहले ही कह दिया था, कि जिस दिन पिता मरे थे, उसी दिन मरूंगी। ठीक उसी दिन मरीं। इंग्लण्डमें बड़ा शोक हुआ। महारानी खूब रोईं।

इसी साल रूस और तुरकमें लड़ाई हुई। रूस जीता, पर मुसल-मानोंने बड़ी बहादुरी दिखाई। रूस जो दक्षिण युरोप जीतके जगत् जीतना चाहता था, सो न हुआ। रूसने तुर्की प्रजाके भीतरी क्रस्तानोंको भड़काकर गदर करवाया। पर अङ्गरेज आदि सब युरोपीय राजोंने रूसका मनोरथ न पूरा होने दिया। अङ्गरेज महामन्त्री लाट वीकान्स-फील्डने तुर्कोंको फिर स्वतन्त्र किया। रूसको रुका रखनेके लिये तुरकका साइप्रस टापू अङ्गरेजोंने लिया। हिन्दुस्थानका मार्ग निष्क-एटक हुआ।

इन्हीं दिनों अफरीकामें जूलू और हिन्दुस्थानमें अफगानोंसे युद्ध हुआ। जूलू युद्धमें फरान्सीसी महाराज मृत नेपोलियनकी शरणापन्न महारानीके एक मात्र पुत्र नेपोलियन मारे गये। रानी यूजिनीको एक मात्र पुत्रके शोकमें विह्वल देख महारानी भी खूब शोकित हुईं। पीछे जूलू लोग हार गये और १८७८।७६ के अफगान युद्धमें अमीर शेर अलीने रूससे मित्रता की। अङ्गरेजोंने यह देखकर घोर युद्धमें शेर अलीको हटा दिया और याकूब खांको अमीर बनाया। पठानोंने विश्वासघात करके अङ्गरेज दूत सर लुइ कावान नगरीको मार डाला। सेनापति लाट रौबर्टस युद्ध करके याकूब खांको कैद कर लाये। और अमीर अब्द-उर-रहमानको अमीर बनाया। पर कई दिनोंतक अयूब माइवान्दमें युद्ध जीतके अमीरी रौबर्टसने यह साध भी तोड़ दी।

तेतालीसवां अध्याय।

मिसर देश हिन्दुस्थानका द्वार है। उसे अङ्गरेजोंने अधीन कर लेना चाहा, जिससे कोई युरोपीय शक्ति हिन्दुस्थानमें न आ सके। पर मिसरमें फरान्सीसियोंका अड्डा था। सुएज नहर काटते समय अङ्गरेजोंने मिसरको बहुत रुपया दिया था। मिसरका शासन करनेके लिये खदीवको खूब रुपया दिया। पर इस रुपयेका सूद न मिलता था। सो सलाह हुई, कि अङ्गरेज और फरान्सीसी दोनो मिलकर मिसरका शासन करें और अपने अपने रुपयेका सूद निकाल लें। इस द्विराज्य और साथमें खदीवकी विराज्यसे गोलमाल उठा। मिसरवासियोंने अरबी पाशाको सरदार बनाकर गदर किया। अलकजन्द्रिया नगरमें कई युरोमियन मारे गये। सो अङ्गरेजोंने अलकजन्द्रिया नगरको बारूदसे उड़ा दिया। कासासिनके युद्धमें मिसरी लोग पराजित हुए। पर अरबीका दल ध्वस्त न हुआ। अरबीने तल-अल-कबीरमें छावनी की। अङ्गरेज सेनापति उलसलीने रात्रिमें तल-अल-कबीरपर धावा किया। और अरबीको कैद कर लिया। इस युद्धमें हिन्दुस्थानी सेना भी गई थी।

मिसरमें तो अङ्गरेजोंका सोलह आना राज्य हुआ। पर सूदानके मुसलमानोंने मेहदीको सरदार बनाकर अङ्गरेजोंसे युद्ध किया। इस मेहदीके सेनापति उसमान डिगमाने अङ्गरेजोंकी बहुत सेना मारी। अङ्गरेज वीर गौर्डन पाशा मारे गये। शेषमें सेनापति उलसलीने मेहदियोंको हराकर अङ्गरेजोंका राज्य बढ़ाया।

आयरलण्ड रोमन-कथलिक स्तान है। वहां "नशनलिष्ठ" जातिके

बागी उत्पन्न हुए। उनकी इच्छा है, कि आयरलण्ड स्वदेशवासियोंसे शासित होवे। इन्होंने बारूदसे बहुत मकान उड़ाये, बड़ी हत्या की। इन्हीं गुप्त हत्यारोंने अपने चीफ सिकत्तर लाट फ्रेडरिक कवेण्डिशको मार डाला। इस आयरलण्डमें अबतक कोई प्रबन्ध नहीं हुआ।

चवालीसवां अध्याय।

महारानीने विधवा होनेके दिनसे राजकार्य बिलकुल ही न छोड़ा। अन्यान्य महाराणोंको चिट्ठी लिखना और महामन्त्रियोंसे सलाह करना न छोड़ा। महारानी दुःखी दरिद्रोंके घरपर जाकर सहायता करती थीं। विधवा ग्राण्ट भीख मांग मांगकर खाती थी। बुढ़ियाको एक दिन ज्वर हुआ। विधवा मरनेको हुई। महारानी हर रोज शामको उसकी झोंपड़ीमें जाकर बाइबल सुना आती थीं। ऐसे दयालु राजा और कहां हैं? एक दिन एक शिकारी अचानक चोट खाकर मरनेपर हुआ। महारानी उसकी कुटीमें जाकर सेवा करने लगीं। राज-महलके बड़े बड़े डाक्टर आकर इलाज करने लगे। रोगिणी बच गई। महारानी हंसते हंसते घर लौटीं। महारानी बालमोरल और औसबर्न महलमें जब रहती थीं, तब बहुत दरिद्रोंकी सेवा करती थीं।

महारानीने और भी एक शोक पाया। कनिष्ठ पुत्र डिउक अल-बनी प्रिन्स लियोपोल्डका कनेज नगरमें देहान्त हुआ। इनका शरीर लड़कपनसे ही खराब था। पर विवाह होनेके दिनसे कुछ कुछ अच्छा होने लगा था। पर अचानक उनकी मृत्यु हुई। महारानी छोटी
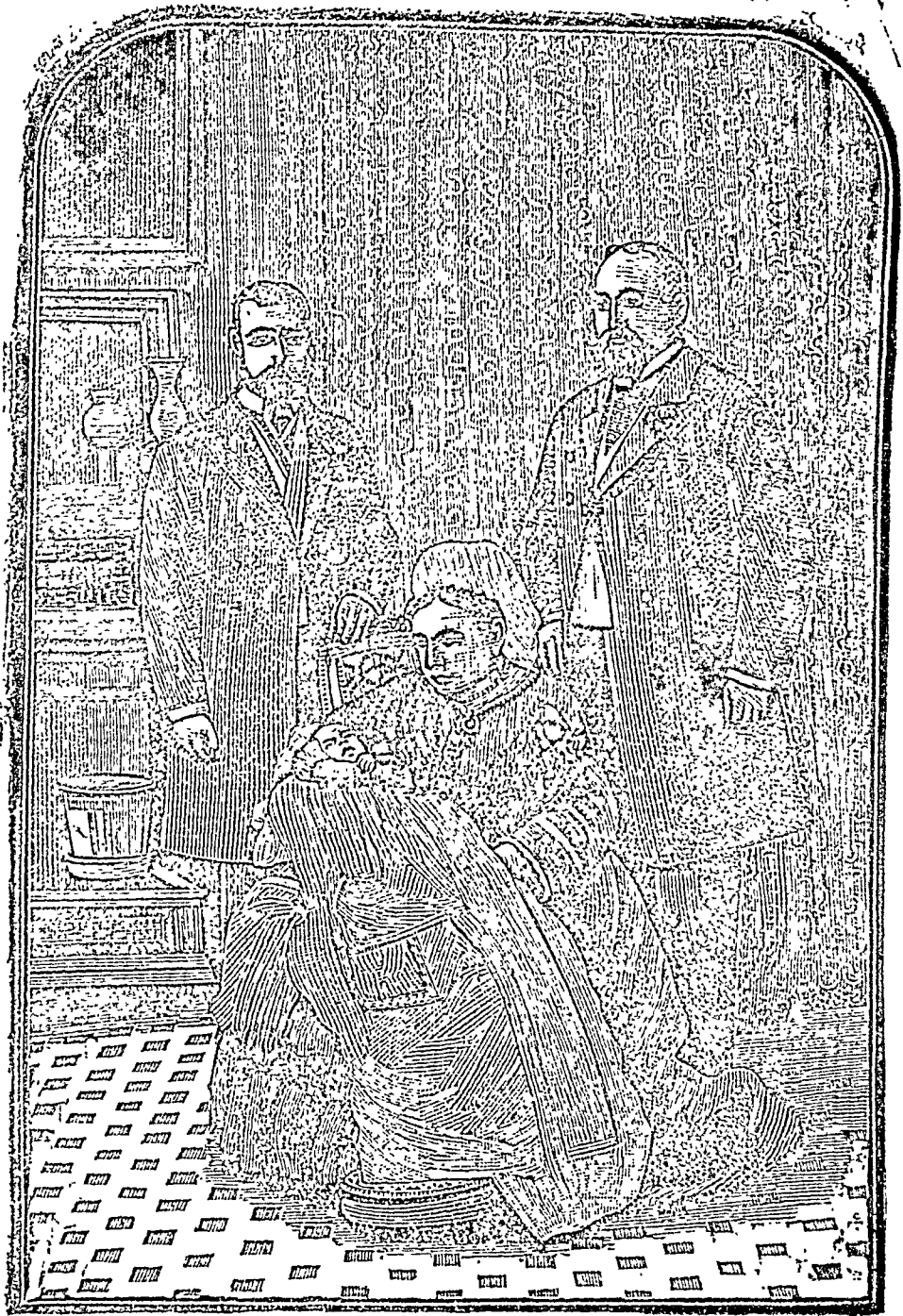
बहूका वैधव्य देख रोने लगीं। खैर, पुत्रशोक भूलकर महारानी पौत्र विक्टरके विवाहका जोड़ मिलाने लगे। पर निर्दय विधिसे यह भी न सहा गया। विवाह होनेके पहले ही सामान्य ज्वरसे विक्टरने देह त्याग दी। जिस राजकुमारीसे विक्टरका विवाह होनेवाला था, महारानीने उसे द्वितीय पौत्र डियुक अव योर्कसे विवाह दिया। एक वर्ष पीछे महारानीके प्रपौत्र हुआ। सब शोक भूलकार महारानीने प्रपौत्रको गोदमें लिया।

महारानी छोटी लड़की बियेट्रिसको सदा पास रखती थीं। जमाई प्रिन्स हेनरी वटनवर्गको घर हीमें रखती थीं। पर निर्दय यमने इसे भी न देखा। अशांटी युद्धमें ज्वर रोगसे वह लोकान्तरित हुए। महारानी वृद्धावस्थामें शोकग्रस्त हुईं। विधवा हुईं, पति गया, पुत्र गया, पौत्र गया, जमाई गया, लड़की गई। इतने शोकोंकी छाया महारानीकी हरेक वक्तातामें भासने लगी? भगवान् देवीका मङ्गल करो।

पैंतालीसवां अध्याय ।

१८८७ ई० में महारानीके राज्यके पचास वर्ष पूरे हुए। जुबिली उत्सव हुआ। इस आनन्दमें भी सब शोक भूलकर सती विक्टोरिया पतिशोकसे रोईं। पुत्र, पौत्र, जमाई, लड़की सबका शोक याद आया।

१८८८ में महारानीके बड़े जमाई जर्मन-सम्राट् फ्रेडरिक भी मर गये। महारानीको शोक हुआ। इन शोकोंसे जर्जरित होकर वह इंगलण्ड छोड़कर युरोपमें गईं। इंग्लण्डमें लौटीं, तब "इम्पीरियल इनष्टिट्यूट" भवन सर्व्वजनके व्यवहारके लिये बना। राजकुमारी लुइसाने महारानीकी मर्म्मर-मूर्त्ति अपने हाथसे गढ़ी। वह मूर्त्ति कनसिङटन महलमें लगाई गई। १८६६ ई० में ट्रान्सवालमें गदर हुआ। डाक्टर जेमसन बन्दी होकर लज्जित हुए। सन् १८६७ ई० में महारानीके ६० वर्ष राज्यकी हीरा-जुबिली हुई।

हमारा काम भी शेष हुआ। देवी विक्टोरियाका चरित पढ़ने लिखने सुननेसे पुण्य है। इसमें बुरा नहीं।

राज-संसार।

महारानीके पुत्र, पुत्रवधू कन्या और जामाता।

(१) महारानीकी ज्येष्ठ पुत्री—जर्म्मन-सम्राटकी माता और जर्म्मन-सम्राट् तृतीय फ्रेडरिक।

(२) युवराज प्रिन्स अव् वेल्स और उनकी स्त्री।

(३) महारानीके द्वितीय पुत्र डिउक अव एडिनबरा और उनकी स्त्री। इस समय जर्म्मनदेशके सेक्सिकोबर्ग गौथाके डिउक और डचेस।

(४) प्रिन्सेस एलिस,—महारानीकी द्वितीया कन्या।

(५) स्वयं महारानी और राजकुमार अलबर्ट।

(६) महारानीके कनिष्ठ पुत्र राजकुमार लियोपोल्ड।

(७) महारानीके तृतीय कन्या राजकुमारी लुइसा और स्वामी मार्कुइस अव लर्न।

(८) महारानीका तृतीय पुत्र डिउक अव कनट और उनकी स्त्री।

(९) महारानीकी चतुर्थी कन्या हेलेना और स्वामी राजकुमार क्रिश्चियन।

(१०) महारानीकी कनिष्ट कन्या बियेट्रिस और उनके स्वामी बटेनबर्गके राजकुमार हेनरी।

महारानीके दश मन्त्री ।

१ । लाट मेलबोन ।

महामान्य विलियम लेम्ब, लाट मेलबोर्न ।

जन्म १७७९—मृत्यु १८४८ ।

२ । सर रोबर्ट पील ।

जन्म १७८८—मृत्यु १८५० ।
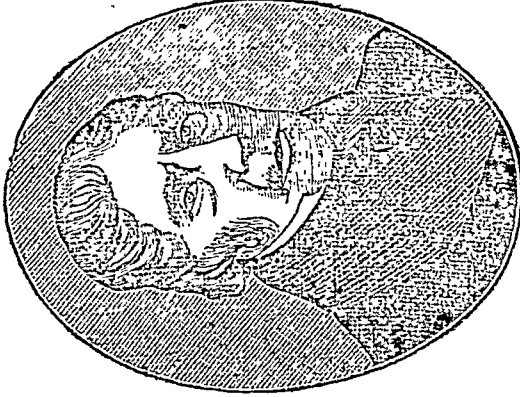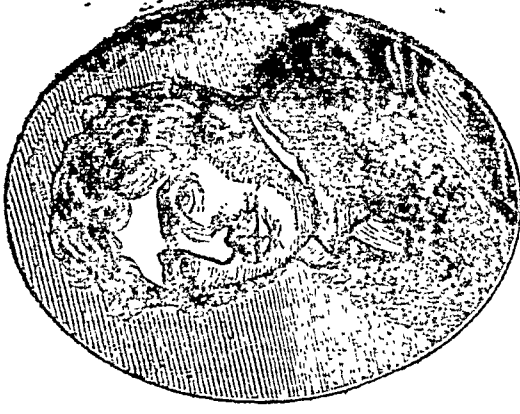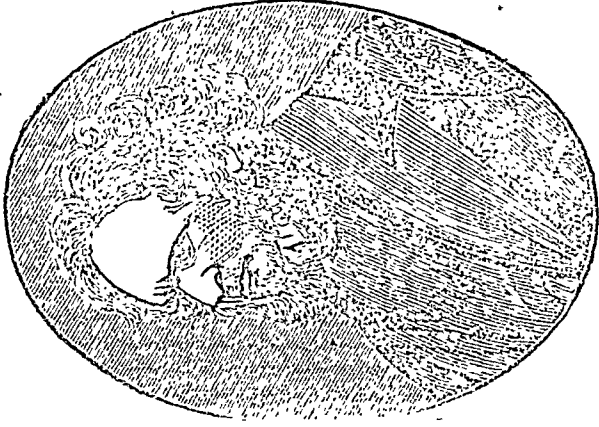
३ । लाटएबर्डीन ।

महामान्य जौर्ज हमलटन गौर्डन लाट एबर्डीन ।

जन्म १७८४ ;—मृत्यु १८६० सन्

६। लाटडर्बी।

५। लाट पामरष्टन।

४। लाट रसेल।

महामान्य एडवार्ड स्मिथ ष्टनली डर्बीके चतुर्दश अर्ल वा लाट।
जन्म १७९९ ;—मृत्यु १८६९।
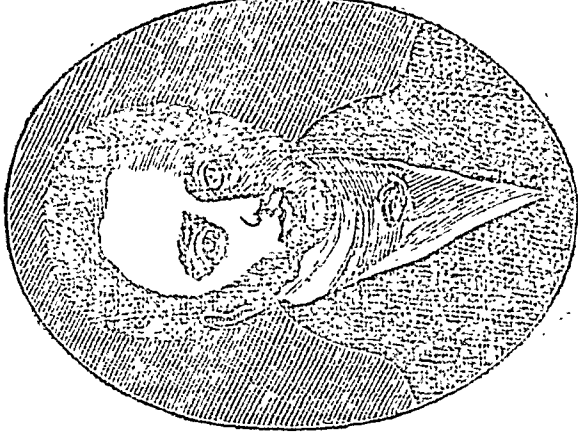
जन्म १७८४ ;—मृत्यु १८६५।
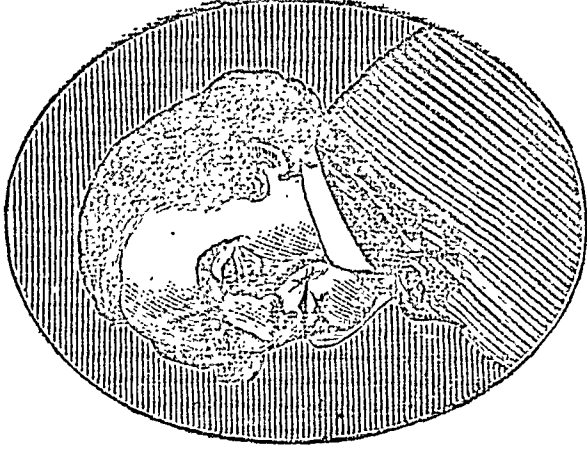
महामान्य जौन रसेल, बेडफोर्ड डिउकके षष्ठ पुत्र।
जन्म १७९२—मृत्यु १८७८।

९। लाट सालसबेरी।
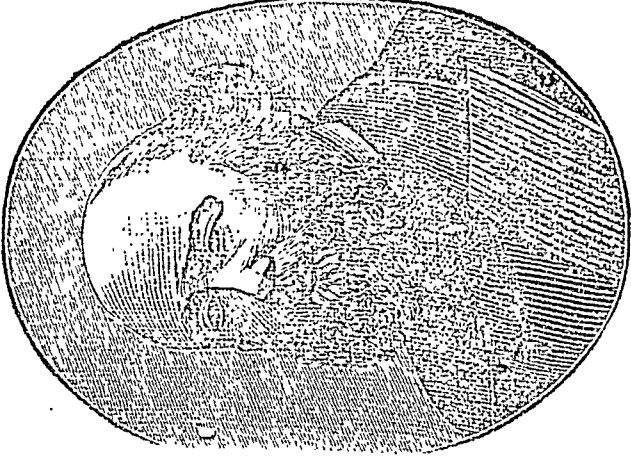
जन्म १८३० अभी जीते हैं।

८। लाट रोजबेरी।
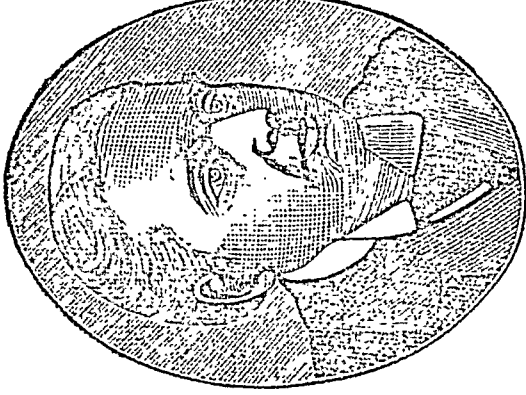
जन्म १८४७—अभी जीते हैं।
महामान्य आरचिबाल्ड फिलिप प्रिमरोज अल रोजबेरी।

७। लाट बीकनस्फील्ड।
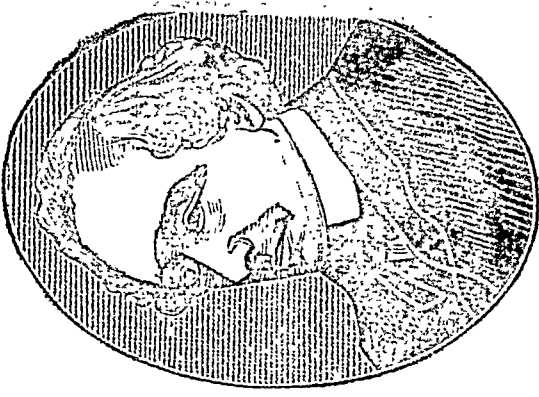
महामान्य बेञ्जिमिन डिसरेलि लाट बीकन्सफील्ड यहूदी
जन्म १८०५—मृत्यु १८८१।

विजया वटिका।

पुराने ज्वरकी अक्सीर दवा।

विजया वटिका आज भारत भरमें प्रसिद्ध है। वरञ्च पारस, अरब, नेटाल तथा लण्डन महानगरमें भी विजया वटिका जाती है। गरीबकी झोंपड़ी और राजाके महलमें विजया वटिका समभावसे वर्तमान है। विजया वटिकाने मानो ब्रह्माण्ड विजय कर डाला है।

अङ्गरेज स्त्रियोंका विजया वटिका बड़ी प्यारी वस्तु है। न जाने किस गुणसे विजया वटिका हिन्दुस्थानी चीज होनेपर भी साहब मेमोंको प्यारी है!

विजया वटिकाकी शक्ति मन्त्रशक्तिकी भांति अद्भुत है। जो ज्वर वैद्यक, डाक्तरी, होमियोपेथी आदि चिकित्साओंसे भी अच्छा नहीं होता, घरके लोगोंने जिन रोगियोंके जीनेकी आशा छोड़ दी है— ऐसे कितने ही रोगी विजया वटिकासे अच्छे हुए हैं।

कभी विजया वटिका वज्रसे भी कठोर और कभी फूलसे भी कोमल होती है। सामान्य सिरके दर्दके दर्दसे लेकर प्राण संकटतक विजया वटिकासे दूर होता है। यही विजया वटिकाका गुण है, यही उसका महत्व है, और यही उसका अलौकिकत्व है। रोगीकी नाड़ीपर दिन रात ज्वर है, प्लीहा और यकृतसे वह कष्ट पाता है, उसका हाथ, पांव, मुह सूज गया है, आंखें पीली हो गई है, नाकसे नकसीर फूटती है—ऐसे विविध व्याधिग्रस्त रोगी भी विजया वटिकासे अच्छे हुए हैं। और जब आदमीको प्लीहा, यकृत कुछ नहीं है, ज्वर नहीं है, उस समय भी विजया वटिकाके सेवनसे भूख बढ़ेगी, शरीरका

आवश्य बढ़ेगा। इसीसें विजया वटिका विचित्र है। कूनैनसे जो ज्वर नहीं जाता है। दस पन्दरह दिनके बीचसे जिनको फिर फिरके ज्वर आता हो, उनकी बीमारीके लिये विजया वटिका ब्रह्मास्त्र हैं।

विजया वटिका किन किन बीमारियोंमें कामकी है?——

(१) सिरका दर्द, (२) भूख न लगना, (३) शरीर और हाथ पांवका दर्द, (४) तीसरे पहर आंखोंका जलना, (५) सिर घूमना, (६) जुकाम खांसी (७) शरीरका भारीपन (८) धातुदौर्व्बल्य (९) दस्त खुलकर न होना (१०) लावण्य-हीनता (११) दुःस्वप्नादि (१२) पीठ कमरका दुःखना, (१३)छातीका भारी रहना (१४) आविलता।

इसके सिवा सब प्रकारका ज्वर, प्लीहा, यकृत, खांसी, ज्वर, सूजन, वारीका ज्वर, अमावस्या पूर्णिमाका ज्वर, आसामका काला ज्वर, वङ्गदेशका मलेरिया ज्वर, इनफ्लुएञ्जा ज्वर, काम्य ज्वर, दीर्घकालीन ज्वर, प्रमेह ज्वर, मज्जागत ज्वर, भीतरी ज्वर—इत्यादि जितने ज्वर हैं, सब विजया वटिकासे अच्छे होते हैं। सेवन कीजिये साथ ही साथ शुभफल लीजिये।

मूल्यादि।

वटिकाकी	संख्या	दाम	डा:मह:	पेकिङ्ग
१ नं डिबिया	१८	॥=)	।)	=)
२ नं डिबिया	३६	१≡)	।)	=)
३ नं डिबिया	५४	१॥=)	।)	≡)
बहुत बड़ी घर गृहस्थोंके योग्य डिबिया।				
४ नं डिबिया	१४४	४।)	।)	≡)

बाहरके ग्राहकोंको वी० पी०का खर्च और =) आना देना होगा।

विजया वटिका मिलनेका पता—कलकत्ता ७९ नं० हरिसन रोडमें बी० वसु० एण्ड कम्पनीके यहां यह दवा मिलती है।

विजया वटिकाके प्रशंसा पत्र।

पहला पत्र।

आपके पाससे दोवारमें दो डिबिया वटिका मगाकर अपनी स्त्रीको खिलाई। जो फल हुआ, वर्णनसे बाहर है। बहुत कालसे मेरी स्त्रीको तिल्ली ज्वर था। डाक्टर वैद्योंसे कुछ न हुआ। शेषमें आपकी विजया वटिका खिलाई। तीन ही सप्ताहमें पूरा आराम हुआ। विचित्र है आपकी विजया वटिका! धन्य इसके जारी करनेवाले।

कामिनीमोहन चौधुरी श्रीयुक्त जगत्किशोर आचार्य्य चौधुरी जमीन्दार महाशयकी सदर कचहरी, भैरव जिला मयमनसिंह।

दूसरा पत्र।

मेरी दादी आठ महीनेसे तिल्ली ज्वरसे घोर कष्ट पाती थी। नित्य सन्ध्याको उन्हें कम्पज्वर चढ़ता था। दो दो रजाई उढ़ानेसे भी सरदी कम न होती थी। तृष्णा अपार थी। वैद्यक इलाजसे कुछ न हुआ। पीछे ढेरों कुनैन खिलाई। परन्तु धन्य है, ११ दिन विजया वटिका खिलानेसे सब रोग उड़ गया। अब बुढ़िया नित्य स्नान आहार करती है।

श्रीरामानुज विद्यार्णव—संस्कृत शिक्षक हुगली कालिज बङ्गाल।

तीसरा पत्र।

दो माससे मेरी एक बहिन तिल्ली बुखारसे कष्ट पा रही थी। बहुत वैद्य डाक्टरोंके इलाजसे कुछ न हुआ, तो उसके जीनेकी आशा त्याग दी। एक दिन बङ्गवासीमें आपकी मृतसञ्जीवनी विजया वटिकाका

विज्ञापन नजर पड़ा। तीन नम्बरकी डिबिया मंगाकर विजया वटिका खिलाई। आठ दिनके बाद ज्वर अपार हो गया। यद्यपि विजया वटिकाके व्यवस्था पत्रमें लिखा है, कि कभी कभी रोगीको विजया वटिकासे प्रबल ज्वर हो जाता है, तथापि हम घबराये। चौदह दिन बाद कम होने लगा। दो मास वटिका सेवन करके रोगी भला चङ्गा हो गया। तिल्लीके लिये जो पाचन व्यवहार कराया था, उसका गुण और भी अद्भुत है। तिल्ली यकृत कुछ नहीं रही। विजया वटिकाका जैसा नाम वैसा ही गुण है। बेशक यह पुराने ज्वरकी दवा है।

अन्नदाप्रसाद घोष।

असिष्टाण्ट एकौण्टेण्ट इञ्जिनियर इन चीफका आफिस, सागर, मध्यप्रदेश।

कलकत्ता ७६ नं० हैरिसन रोड, हिन्दुस्थानभरमें एक मात्र

अजण्ट बी, वसु, एण्ड कम्पनीके पास मिलती है।

उक्त स्थानके सिवा विजया वटिका कहीं नहीं बनी, कहनेमें अत्युक्ति न होगी। सामान्य सिरके दर्द, खांसी जुकाम, हाथ पांवके दर्द, आंखके जलनेसे लेकर प्राण संशय पीड़ातक विजया वटिकासे आराम होती है। जिन रोगियोंको डाक्तर वैद्य जवाब दे चुके हैं। ऐसे ज्वर, प्लीहा यकृतवाले मरनेके निकट रोगी विजया वटिकासे अच्छे हुए है। जिस रोगके लिये डाक्तर २५) लेता हैं, विजया वटिकासे उसमें ५) खर्चनेसे भी लाभ हो जाता है।

हिन्दुस्थानी ही क्यों कितने ही साहब लोग भी विजया वटिकापर मोहित होकर इसका व्यवहार करने लगे हैं। कितने ही लोग इसे नित्य सेवन करते हैं। सवेरे उठकर एक विजया वटिका नित्य सेवन

करनेसे कभी कोई रोग न होगा। क्षुधा बढ़ेगी; तेजी बढ़ेगी। बदहजमी कबजका नाम न रहेगा।

विजया वटिकाकी बड़ी खरीदारी है। इसके बनानेके लिये हमने विलायतसे गोली तय्यार करनेकी तीन कलें मंगवाई है। तथापि बीच बीचमें इतनी मांग होती है, कि विना विलम्ब पूरी नहीं कर सकते।

विजया वटिकाकी ऐसी अपार कटती देखकर चालाकोंके मुंहमें पानी भर आया हैं। इसीसे वह जाली विजया वटिका बनाते हैं और मुफस्सिलमें बेचकर धन एकत्र करते है। परन्तु सब सावधान हों। उपरोक्त ठिकानेके सिवा कहींसे विजया वटिका न खरीदें।

जाल हो रहा है।

खबर लगी है, कि कलकत्तेके कुछ चालाक लोगोंने विजया वटिकाकी पूरी नकल की है। उसके ट्रेडमार्क आदि भी नकल करके मुफस्सिलवालोंको थोक दरपर बेचते हैं। सस्ती भी खूब देते हैं। इस जाली दवासे बहुतोंका रोग दूर नहीं हुआ। भला जाली दवासे आराम क्या होगा? उलटी बीमारी बढ़कर रोगीकी जान ली जाती है। अतएव

सब सावधान।

सब लोगोंको जानना चाहिये, कि विजया वटिका नीचे दिये हुए पतेके सिवा और कहीं नहीं मिलती है।

बी० बसु एण्ड कम्पनी

७९ नं० हेरिसन रोड कलकत्ता।

बी॰ बसु॰ एण्ड कम्पनीका

फुलेला।

फी शीशी कीमत एक रुपया; डाकमहसूल आठ आना पेकिङ्ग दो आना, वी॰ पी॰ दो आना। छः शीशी लेनेसे कमीशन एक रुपया अर्थात् पांच रुपया छीमें छः शीशी मिलेगी। डाकमहसूल १।।।), पेकिङ्ग ।।) आठ आना। बारह शीशी फुलेला इकट्ठा लेनेसे कमीशन दो रुपया;—अर्थात् दस रुपये छीमें बारह शीशी फुलेला

मिलेगा। इसका पेकिङ्ग छः आना वी० पी० चार आना डाकमहसूल तीन रुपये।

भारतवर्ष फूलका भाण्डार है। भारतका फूल अमूल्य रत्न है। सात खुशबूदार फूलोंका साररस यन्त्रानिक कायदेसे इकट्ठा मिलाकर आयुर्वेदोक्त नाना प्रकारके मसालोंके साथ वह फुलेला तय्यार हुआ है। आप फुलेला मलना शुरू करें—दूर खड़ा हुआ राहगीर समझेगा—यह क्या हुआ?—अचानक नाना प्रकारके फूलोंकी खुशबू क्यों सूंघ रहा हूं पास ही क्या कोई पुष्पवाटिका है?

फुलेलाके इस्तिमालसे बालोंकी जड़ मजबूत होती है। बाल काले और चिकने होते हैं। फुलेलासे बाल झाड़नेका दोष दूर होकर बाल बढ़ता है—चमरकी न्याई कवरी भार होता है। बहुत दिनतक फुलेला मलते रहनेसे गञ्ज रोग आराम होता है। फुलेलासे मगज ठण्ढा होता है, सिरका घूमना दूर होता है। हाथ पैरकी ज्वाला और शरीरकी ज्वाला दूर होती है। दिमागकी खुश्की और इन्द्रलुप्त दूर होता है। पेटपर मलनेसे पेट ठण्ढा होता है; पाचकशक्ति बढ़ती है, और दस्त खुलासा होता है; प्रमेह आदि रोग भी आराम होते हैं। शरीरका मैला कट जाता है। सौन्दर्यकी वृद्धि होती है।

फुलेलाके प्रशंसा पत्र।

पहला पत्र।

शकुन्तला ग्रन्थके बनानेवाले बङ्गाल-गवर्नमेण्टके अनुवादक स्वनामधन्य पुरुष श्रीबाबू चन्द्रनाथ वसु एम, ए, बी एल, कलकत्ता नं०

रघुनाथ चटरजीकी गलीसे लिखते हैं, मेरे एक बेटेने "फुवे—ा" व्यवहारसे उसकी खूब तारीफ की। कहा, तेल लगानेके पीछे शरीर बड़ी देर-तक खूब चिकना रहता है। मैंने खुद प्रायः तीस वर्षसे कोई तेल व्यवहार नहीं किया। इस लिये साहस करके "फवेला" व्यवहार कर न सका। पर "फुवेला"की खुशबू इतनी मनोहर है, कि उसे इस्तिमाल कर न सकनेसे मैं नाराज रहा।

दूसरा पत्र।

कलकत्ता ष्टार थियेटरके सुप्रसिद्ध मनेजर और विवाह-बिभ्राट, त वाला वगैरह ग्रन्थोंके बनानेवाले श्रीअमृतलाल बसुने लिखा है, आपका यह किस फूलका "फुवेला" है? कामदेवकी फूलकामानसे दो चार पङ्खड़ी चोरी करके क्या चिक्कण स्नेहके रसमें मिला दी है? नहीं खुशबूके भीनेपनमें ऐसी मनोमोहिनी शक्ति और कहांसे आई? सूंघनेसे मानो कितनी ही भूली बातें मनको फिर याद आगईं। गृह-लक्ष्मीकी ‑ लकोंमें जरा "फुवेला" लगानेसे, मैं जानता हूं, उसके पैरमें अधिक तेल लगानेकी जरूरत नहीं पड़ती।"

तीसरा पत्र।

जो अवकाशरञ्जिनी, पलाशीका युद्ध प्रवर्तक कुरुक्षेत्र वगैरह ग्रन्थ लिखके वङ्गदेशके कवि कुलचूड़ामणि हुए हैं,—इन दिनों जो चट्टग्रामके कमिश्नरके पर्सनल असिष्टण्टके उच्च पदपर अधिष्ठित हैं वही महाकवि श्रीनवीनचन्द्र सेन—"फुवेला"के इस्तिमालसे खुश होकर क्या लिखते हैं;

देखिये ;—"क्या स्निग्धतामें, क्या रङ्गकी तेज़ीमें,—फुलेला इस्तिमाल करनेसे मुग्ध होना पड़ता है।"

चौथा पत्र।

आपके भेजे हुए सुगन्धपूरित "फुलेला" तेलको पाकर खुश हुआ। यह जिस प्रकार खुशबूदार है, उसी प्रकार फायदेमन्द भी है। मेरा माथा दुखना वगैरह शिरोरोग आपके "फुलेला" व्यवहारसे बहुत आराम है और मेरे मातारास २।३ दिन आपका "फुलेला" हाथ पैरमें मलके हाथ पैरकी जलनरूपी रोगसे ईश्वरकी कृपावश छुटकारा पा गई है! चिट्ठी पाते ही नीचे लिखे ठिकानेपर तीन औंसकी शीशी "फुलेला"की चार शीशी इकट्ठी भेजकर बाधित कीजिये।

मुतब-उर-रहमान चौधरी—पो: तालतली,

देवमा तालुकदार बाड़, बरिशाल।

फुलेला पानेका ठिकाना—

बी० बसु० एण्ड कम्पनी

७६ नं० हेरिसन रोड कलकत्ता।
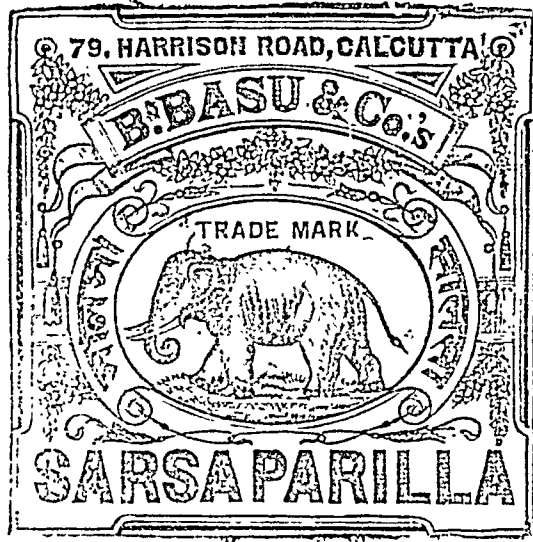
कठोर परिश्रमके बाद पीनेसे साथ साथ थकावट दूर होगी।

हिन्दुस्थानी यौवन होमें वृद्ध हो जाते है। ३२ वर्षकी उमरसे पहले ही कितनोंका अंग शिथिल हो जाता है। ४२ वर्षकी उमरमें कितने ही सचमुच बूढ़े हो जाते हैं। बी० वसु० एण्ड कम्पनीका सालसा पीनेसे आदमी सहजमें बूढ़ा न होगा। शरीरमें बल रहेगा। जो साठ वर्षके बूढ़े हैं, कमर झुक गई और सांस लटक गया है, वह तीन महीना यह बी० वसु एण्ड कम्पनीका सालसा पीके देखें, शरीरमें सच सच नई जवानीकाका उभार होगा। बलवीर्य बढ़ेगा, नये आदमी बन जावेंगे। विशेष परीक्षाकी इच्छा हो तो सालसा पीनेसे बाद हर महीने इसी तरह शरीर तौलते रहें, स्वयं देखेंगे, कि शरीर कितना बढ़ता है। लड़के, बच्चे, पुरुष, स्त्री सब बी० वसु एण्ड कम्पनीका सालसा सेवन कर सकते हैं।

बी० वसु० कम्पनीका सालसा

सेवन करनेसे नाना प्रकारके रोग दूर होते हैं; (१) दूषित रक्त परिष्कार होता है। (२) भूख बढ़ती है; (३) कोठा साफ होता है।

मूल्यादि।

	मूल्य	डा:मह:	पेकिङ्ग
१ नं० आध पावकी शीशी	॥≤)	॥)	≤)
२ नं० एक पावभरकी शीशी	१≤)	।||)	≤)
नं० डेढ़ पावकी शीशी	१॥≤)	१)	≤)

वेलूपेविलमें लेनेसे मूल्य ८) दो आना और भी अधिक देना होगा। तीन, चार, छः या एक दरजन शीशियां साथ लेनेसे डाक-महसूल कुछ कम पड़ता है। जिनके घर रेलके ष्टेशनोंके निकट हों, वह यदि इस सालसेकी दोसे अधिक शीशियां रेलद्वारा मंगावेंगे, तो महसूल खूब कम पड़ेगा।

कितने ही दरजनके हिसाबसे यह सालसा लेते हैं। एकवार एक दरजन लेनेमें कमीशनका लाभ है। एक दरजनसे कमपर यहांतक कि ग्यारह शीशियां लेनेसे भी कमीशन नहीं मिलता। ३ न० अर्थात् डेढ़ पावकी १२ शीशियोंका दाम १८॥) है। २ न० कमीशनका वस १७॥)में १२ शीशियां मिलीं। परन्तु इसका डाक महसूल होता हैं ८)। और रेलसें लेनेसे जितना दूर स्थान होगा, उसीके हिसावसे भाड़ा पड़ेगा। ३ न० की एक दरजन शीशियोंका पेकिङ्ग चार्ज ॥) बारह आने होता है। इससे साधारण लोगोंको रेलद्वारा दवा लेनेसे लाभ होगा। रेलके ष्टेशनका नाम या अपना पता साफ लिखना चाहिये।

२ न० की एक दरजन शीशियोंका दाम कमिशन काटकर १२॥) है। इसके सिवा डाकमहसूल ६) है।

१ न० की १२ शीशीका दाम कमीशन काटकर ६॥) हैं। डाक-महसूल ४)। रेलमें लेनेसे भाड़ा होगा, पेकिङ्ग चार्ज खतन्त्र होगा।

१ न० आध पावकी शीशी चार दिन २ न० पावभरवाली आठ दिन तथा ३ न० डेढ़पाववाली १२ दिन पीना चाहिये। चार दिन पीनेसे फायदा मालूम होगा।

सालसाके प्रशंसापत्र।

पहला पत्र।

आपसे जो दो शीशी सालसा मंगाया था, उससे बड़ा लाभ हुआ। चिट्ठी देखते ही ३ नं० की ४ शीशी रेलवे वी, पी, पारसल द्वारा और भेजिये। आपकी दवा वास्तवसे विलक्षण है। सबको चाहिये, कि बिलायती दवा न लेकर अपने देशकी बनी यह उत्तम महौषधसेवन करें।

श्रीउमाशङ्कर चक्रवर्ती, राजवाटी माहीगञ्ज पोष्ट रंगपुर। बङ्गाल।

दूसरा पत्र।

मेरे शिष्य जगन्नाथ कयालने ३ न० की २ शीशियां सालसेकी मुझे मंगवा दी थीं। उनसे जो लाभ हुआ, वह कहा नहीं जा सकता। दो वर्षसे प्रमेह और बवासीरके मारे घोर कष्ट भोगता था। आपके सालसेसे प्रायः आराम हो चला। तीन शीशी सालसा मेरे पास जल्द भेजें।

श्रीरामचन्द्र गोस्वामी—कालिदा, जिला मानभूम।

तीसरा पत्र।

बी० वसु एण्ड कम्पनीके हाथी मार्का सालसाके विषयमें सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं सिपाहीयुद्ध प्रभृति ग्रन्थप्रणेता श्रीयुक्त रजनीकान्त गुप्त महाशय कलकत्ता क्या लिखते हैं देखिये।

"मैंने श्रीयुक्त बी, वसु एण्ड कम्पनीका सालसा सेवन बहुत किया है। इससे मेरा शरीर पहलेसे बहुत सबल और श्रमसहिष्णु हो गया है। कोठा साफ हो गया। इसके पीनेमें जरा कष्ट नहीं होता। उलटा रुचिकर है। जो शरीरकी अवसन्नतासे मुक्तिलाभ किया चाहें, फुरती तथा काम करनेकी सामर्थ्य चाहें, वह इस सालसेके पीनेसेलाभ उठावेंगे।

बी० वसु० एण्ड कम्पनी।

७९ न० हेरिसन रोड, कलकत्ता।